मराला ॥ पुत्र प्रेम बश भटके राजा । जहां राम तहँ सकल समाजा ॥ हमैं न्यारी कीन्ही अधुनारी । को जानै किहि दोष बिसारी ॥ अपरा बदति दोष नहिं राई । लघुनी लाग लाज अधिकाई ॥ संग चली नहिं ब्रीड़ामानी । ताते क्रीड़ा रस बिलगानी ॥ द्वितिया कहति चलो अब प्यारी । जहां लाल लीला अधिकारी ॥ सियाराम मूरति मनधरहीं । सहज बिघन भय भ्रम सबटरहीं ॥ यदपि दोषकरि रोष निकारैं । तदपि दूरते बदननिहारैं ॥ क्षुधा पियासा बसन न चाहैं । लगी लालसों लगनि निबाहैं ॥ धीरा बदति धरो भटुधीरा । सब जानत प्रभु मनकी पीरा ॥ अवध धाम तजि कुत्रगते सुख । सिया राम बिश्राम अत्र मुख ॥ कमलाश्रय जिमि भ्रमर मिलाई । धाम भजत धामी कहँ जाई ॥ अवधपुरी सरयू अजु प्यारी । मिलहिं जानकी रंग बिहारी ॥

संग्रहकार०दोहा ॥ पहिंचानत हैं प्रीतिको नीके राम सुजान । सुनि सजनी के बचन बर सकल सखी हरषान ॥ चौपाई ॥ इत मिथिला महँ कौशल राजा । परम प्रमोदित सकल समाजा ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ जनक सनेह शील करतूती । नृप सब भांति सराहि बिभूती ॥ दिन उठि बिदा अवधपति मांगा । राखहिं जनक सहित अनुरागा ॥ नित नूतन आदर अधिकाई । दिनप्रति सहसभांति पहुनाई ॥ नित नव नगर अनन्द उछाहू । दशरथ गवन सुहाइ न काहू ॥

कृपानिवास० ॥ चलन करे मन चलन न पावैं । प्रेम सुमन जनु भ्रमर लुभावैं ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ बहुत दिवस बीते इहिभांती । जनु सनेह रजु बँधे बराती ॥

रघुराज० ॥ एकसमय बशिष्ठ निजधामा। बैठेरहे सुमिरि हिय रामा॥ बिश्वामित्र तहां चलि आये। उठि बशिष्ठ आसन बैठाये॥ गाधिसुवन कह मंजुलबानी। सुनहु ब्रह्मनंदन मतिखानी॥ बहुत दिवस मिथिलामहँ बीते। उभयराज नहिं सुखसोंरीते॥ दोहा ॥ उभय महीपति मोदरस मगन भये यहिकाल। जानत नहिं बासर बितत नित नवहर्ष बिशाल॥ चौपाई ॥ सुनत गाधिसुतकी बरबानी। बोले ब्रह्मतनय बिज्ञानी॥ सत्यकह्यो कौशिक अवदाता। चलब अवध अब उचित बराता॥ कौशल्यादिक जे महरानी। लिखहिं पत्रिका मोहिं हुलसानी॥ आशु बरात अवधपुर आवै। दुलहिन दरश चित्त ललचावै॥ ताते सतानंद बोलवाई। हम अब यतन करब मुनिराई॥ असकहि युगल शिष्य पठवाये। सतानंदकहँ आशु बोलाये॥ छंद चौबोला॥ आयउ सतानंद तेहिअवसर मुनि बशिष्ठ ढिगमाहीं। अतिसतकार सहित दै आसन कुशलपूछि तिनकाहीं। गौतम सुतसों कह्यो बचन पुनि सतानंदतुम ज्ञाता। बीत्यो बहुतकाल मिथिलापुर निवसे बिशद बराता॥ दशरथनेह बिदेहनेह अति दीन्हे गेह भुलाई। जनक बिदेह देहकी सुधिनहिं नितआनँद अधिकाई॥ मिथिलाबासी अवधनिवासी आनँद मगन अघाता। करै बिदा को होय बिदाको कहै कौन यहबाता॥ कौशल्या केकयी सुमित्रा जे दशरथ महरानी। बारबार लिखतीं पाती मोहिं दुलहिनि लखन लोभानी॥ सकल भूमिमंडलको कारज करै कौन यहि काला। दशरथ बसत नगर मिथिलामहँ होते प्रजा बिहाला॥ ताते जाय जनक समुझावहु करैंकुमारि बिदाई। उचित न अब राखब बरातको चलैं अवध नृपराई॥ हम समुझैहहिं कौशल भूपै तुम बिदेह समुझाओ। अब चारिहु नवबधू बिदाकर सुंदर सुदिन बनाओ॥ सुनि बशिष्ठके बचन यथोचित सतानंद मुनि भाख्यो। कहत सुनत यह बचन दुसह पै उचित बिचारहि राख्यो॥ अब हम जाय बुझाय जनकको करिहैं बिदा तयारी।

तुम समुझावहु अवधनाथको होहिं न जात दुखारी ॥ तबमुनि गौतमसुवन बिदाकरि दशरथ निकट सिधारे । बैठिएकांत शांत रस संयुत बैन अचैन उचारे ॥ अवधतजे बीते अनेक दिन मिथिला बसत तुम्हारे । सुवनबिवाहभये मंगलयुत श्रीपति बिघन निवारे ॥ भूमिखंड नवको अखंड कारज नरेश तुवहाथा । ताते अब पगुधारि अवधको कीजै प्रजा सनाथा ॥ पुत्रबधू अरु पुत्रन को लै चलहु अवध नरनाहू । सहित पट्टरानी परिछनकरि लेहु अब पूरबलाहू ॥सुनि बशिष्ठकेवचन चक्रवरतीनरेश मुखगाये । सकल सत्य जो नाथ कह्यो तुम हमरेहु मन यहआये ॥ पैबिदेह के नेह बिवश नहिं मांगतबनत बिदाई । प्रीतिरीति करि जीति लियो मोहिं बिछुरन अति दुखदाई ॥ कहा करों केहि भांति कहौं मुख बिदाहोन किमि जाऊं । कैसे सरस सनेह बिवशकरि अति अनरस उपजाऊं ॥ जो बिदेह करिकै मन साहस सुताबिदा करिदेवैं । तौ हम पुत्रबधू पुत्रन लै अवध नगर चलिदेवैं ॥ यतना कहत भूपकेआंखिन आंसुनबहे पनारे । मुनिबर कह्यो बिदेह योग यहि तुम जेहिभांति उचारे ॥ पै न बिदेह सनेह रावरो कबहुँ भंगपथपैहै ॥ तुम ऐहौ मिथिला बहुबारहि सो कोशलपुर जैहै । रीतिसनातन ब्याहअंतमें होती सुताबिदाई । मरयादाते अधिकरहे इत लहिसतकार महाई ॥ महरानी कौशल्यादिकतुव-लिखतीं बारहिंबारा । दुलहिन दूलहदेखन केहिदिनलागीलल कअपारा ॥ ताते चलहु अवधपुरभूपति अब परिछन सुखलूटौ ॥ पुत्रबधू अरु पुत्राखिघर औरकाजमहँ जूटौ ॥ दोहा ॥ सुनि गुरु की बाणीबिमल कह्योभूप करजोरि । जौनहोय रुचिरावरी सोइ अभिलाषा मोरि ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ कौशिक सतानन्द तब जाई । कहीबिदेह नृपहिं समुझाई ॥ अब दशरथकहँ आयसुदेहू । यद्यपि छांड़ि न सकहुसनेहू ॥

रघुराज०छं०चौबोला॥ मंगलमय सबभये बिघन बिनब्याह उछाहअपारा। बसतबरातहिं बिते बहुतदिन नितनित नवसतकारा॥ यदपि विदेह सनेहरावरो कौशलपतिसों भारी। नितनितदेखत नहिंअघात दृग रामरूप मनहारी॥ अधिकप्रमाणहुते बरात अब राख्यो इत मिथिलेशू। चलनचहत अब अवध अवधपति सकुचत कहतकलेशू॥ ताते सुदिवसपूछि कुमारिनं बिदाकरी महराजा। अबयतनै बशिष्ठ आपको सकल सजावहुसाजा॥ पुनि दुहितन को आनि लेव इत कुँवर लेवावनऐहैं। पूरण शशिमुख लखि रघुपतिको हमसब अतिसुख पैहैं॥ अब नहिं राखब उचित बहुत दिन मिथिला नगर बराता। करहुबिदा शुभ पूछि मुहूरत तुमत्रिकालकेज्ञाता॥सतानन्दके बचनसुनतनृपरामबियोगबिचारी। रह्यो दंडद्वै कछु न कह्यो मुख नैनबहावत बारी॥जसतसकै धरि धीरज नृपउर ह्वै अनन्दसों छूंछो। कहेउवचन सुनि करहुयथामन मोहिं कहा अब पूंछो॥ अनुचित कछु न बिवाह अन्तमें होती सुता बिदाई। नहिं नवबधू बसत नैहरमें रीति सदा चलिआई॥ रामरूप दरशनकी बिछुरन दुसहदुखद मोहिं होई। मैं बिदेह दशरथ सनेह महँ लियेदेह सुखजोई॥ केहि बिधि मुख कहिजाय महामुनि राम इतै ते जाहीं। सुता बिदा करिदेहु भले तुम रघुपति गमनै नाहीं॥ प्रेमबिवश मिथिलेश जानि मुनि पुनि पुनि बहुसमुझाये। देवयानि अरु देवहुती मनु कहि इतिहास सुनाये॥

संग्रहक०चौपाई॥ यहि बिधि सुनी मुनिनकी बानी। तब नृप उरमहँ धीरजआनी॥

श्रीतुलसी०चौपाई॥ भलेहि नाथ कहि सचिव बुलाये। कहि जय जीव शीश तिन नाये॥

संग्रह०॥ जो जिहिकारज मुनिहिं बतावैं। सोद्रुतकरै बिलंब न लावैं॥ कुलगुरु सों नृप बचनउचारे। सबप्रकार तुम जानानि

हारे॥करहु यथामन जो रुचि होई । सतानन्द अबकरिये सोई ॥ सचिवन सँग लैके मुनिराई । बैठे अपर भवन महँ जाई ॥ कह्यो मंत्रिनसों मुनि मतिवाना । कालिह बरात सहोहि पयाना

रघुराज० छंद ॥ चारि नालकी रतनजालकी दासिदास अनेका। बसन अमोल बिबिध बिधि भूषण आनहुँ सहित बिवेका ॥ सजे गयंद कनकस्यंदनबहु बाजिन वृंद मँगाये । शिविर सु शारद बारिदके सम बाहेर खड़े कराये ॥ और सकल बहुमोल बस्तु रचि शकटन सपदि लदाये । न्यून कौनहूं बस्तुहोयनहिं गणकन बेगि बोलाये ॥ गौतमसुवन कह्यो गणकन सों शोधिय सुदिन बिदाको । रचहुलगन अनुकूल सकल ग्रह हरें बधूनि बिथाको ॥ कहे सकल दैवज्ञ शोधि शुभ घरी कालिह सुखदाई । युग युग जियें युगल जोरी मुनि ऐसी लगन बनाई ॥

संग्रह० दोहा ॥ सतानन्द उठिकै तबै मिथिलापति पहँ आय । हय गय स्यंदन साजि सब मुहुरत दियो सुनाय ॥ सीताराम बियोग गुनि जियमें होत न चैन । सतानन्दको जनकजू कहे बचन भरि नैन ॥

श्रीतुलसी० दोहा ॥ अवधनाथ चाहत चलन भीतर करहु जनाव । भये प्रेम बश सचिव सुनि बिप्र सभासद राव ॥

रघुराजसिंह० छंद चौबोला ॥ अन्तः पुरहिजाय गौतमसुत बिदा खबरि खुलिगाई । हहरि उठेउ रनिवास सकल सुनि जनुसुख दियो गमाई ॥ रानि सुनैना बिलखि कह्यो तब अबै न जाय बराता । सुख समुद्र कुंभज कस होवहु समय सुखद उतपाता ॥

संग्रह० दोहा ॥ कुलगुरुसों महरानिजू बोलीं सहित सनेह । कालिह बिदा बरातकी रुची न हमको येह ॥ दोहा ॥ फैलत फैलत फैलिगै खबरि नगर चहुं ओर । करत कालिह भूपति बिदा चलन चहत चितचोर ॥

श्रीतुलसी० चौपाई ॥ पुरबासिन सुनि चलीबराता । पूछत बिकल परस्पर बाता ॥ सत्य गवन सुनि सब बिलखाने । मनहुँ सांभ सरसिज सकुचाने ॥ जहँ जहँ आवत बसे बराती । तहँ तहँ सीध चला बहुभांती ॥ बिबिध भांति मेवा पकवाना । भोजन साजन जाय बखाना ॥ भरि भरि बसहअपार कहारा । पठये जनक अनेक सुआरा ॥ तुरँग लाख रथ सहस पचीशा । सकल सँवारे नख अरु शीशा ॥ मत्त सहस दश सिंधुर साजे । जिनहिं देखि दिशि कुंजर लाजे ॥ कनक बसन मणि भरि भरि याना । महिषी धेनु बस्तु बिधि नाना ॥ दोहा ॥ दाइज अमित न सकिय कहि दीन्ह बिदेह बहोरि । जो अवलोकत लोकपति लोकसंपदा थोरि ॥ चौपाई ॥ सब समाज इहि भांति बनाई । जनक अवधपुर दीन्ह पठाई ॥

संग्रह० ॥ कहहिं परस्पर लोग लुगाई । काल्हि करहिं नृप राम बिदाई ॥

रघुराज० छंद चौबोला ॥ सीयसुभाव शील गुण सुधिकरि बिलखहिं पुर नर नारी । रामरूपबरणत अघातनहिं बहतबिलोचन बारी ॥ नहिं सियसम धन्या कन्या जग बर नहिं रामसमाना । पूरबपुराय लहे लोचनफल सो सुख सकल पराना ॥ हाय बहुरि कब लखब रामछबि कब मिथिलेश कुमारी । कब कोशलपति सकल साहिबी जो इननैन निहारी ॥ बसीबरात यदपि बहुबासर पाये मुद मनमाने । पै अभिराम रामअवलोकत नैन अबै न अघाने ॥ हेबिधि बसै बरात बहुतदिन सीय बिदा नहिं होई । भयो सकल सपने कैसो सुख बसब कौनसुख जोई ॥ रेबिधि परमानन्द देखाय चहत बिलगावन काहे । नहिंदाया आवति तेरेउर का पैहै जियदाहे ॥ यहिबिधि कहहिं बिकल पुर

जन सबकोउ तिनमहँ समुझावें । आनहिं आशु सीय मिथिलापुर राम लेवावन आवें ॥ युग युगजीवें सुखमासीवें रामजानकी जोरी । नाहिंहमार कसभाग आनकर नित नवप्रीति न थोरी ॥ राम सदा मिथिलापुर ऐहैं जनक अवधपुरजैहैं । दिन दिन दून दून सुख देखब सुर समता नाहिं पैहैं ॥ असकहि बिबिध सभ्य समुझावहिं पै न धरहिं कोउधीरा । मिलहिं बरातिनसों चलि पुरजन नैन बहावत नीरा ॥ यथा जनकपुर बासिन को दुख अवधनिवासिन तैसो । दोउदिशिके भे बिकल नेहबश को समुझावै कैसो ॥ मिलि मिलि कहत अवधपुरकेजन तजेहु न सुरति हमारी । तैसहि कहत जनकपुरबासी बिछुरन दुसह तिहारी ॥ जाहिं यथा संपति संपतधैर सो पट भूषण नाना । सीय देनहित जाय राजगृह देत बनाय बिधाना ॥ कोउ असरह्यो न मिथिलापुरमहँजोनहिं दायज दीन्हा । कोउअसरह्यो न जौनबरातिनजाय भेंट नहिं कीन्हा ॥ सिगरेनगर सनकसगिइपरि सिया बिदादुखभारी । बरणतसीयसुभाव चुकतनहिं जुरिसमाज नरनारी॥सुताब्याह पुनिबिदाहोहिं हठिजानहिं जगकीरीती । तदपिराम सिय लषणलखब कब असकहि बरणहिंप्रीती ॥ इनआंखिन दरशाय महासुख हरहुबिरंचिबहोरी । देखनकोतुम चतुरचारिमुख चूकबड़ी यह तोरी ॥ हाटहाट अरु बाटबाटबहु घाटघाट पुरबासी । कहत एकसों एक बातयह सीय बिदा दुखरासी ॥ अंचल ओड़ि बिरंचिमनावहिं रंचकदिन नहिंबीतै । होय ब्रह्मरजनी सी रजनी पठवैजनक नसीतै ॥ खानपान असनान भान नहिंध्यान ठानि असबैठे । जनकपुरीपुरजन जनुबरबश शोकसिंधुमहँपैठे॥ औरकछुकदिन रहैं अवधपति होय अनंदबधाऊ । अथवा छोड़ि रामकहँ कछुदिन जाहिं अवधकहँराऊ ॥ तहँ कोउसज्जन कहहिंजनककहँ राम प्राणतेप्यारे । अवध प्रजाकिमि धरहिंधरिउर बिनरघुराज निहारे ॥ दोहा ॥ जसतुमको लागतइतै राम अवध नहिंजाहिं । तैसहि अवधप्रजासकल बिनदेखे बिलखाहिं ॥

संग्रह०चौपाई ॥ यहिबिधि करत परस्परबाता। निशा सिरानी भयोप्रभाता॥ जनकबोलिगुरु बचनप्रकासे। कहिये जाय भवै रनिवासे॥ कह्योरानिसों मुनिमतिवाना। चढ़े यामदिन कुवँरि पयाना॥असकहिमुनीजनकपहँआये।सीयवियोगहृदयसरसाये॥

महारानी सुनैनाजीका जानकीजूआदि कुवँरिनको पतिव्रतधर्मका उपदेशकरना॥

श्रीतुलसी० चौपाई ॥ चलिहि बरात सुनत सब रानी। बिकल मीनगण जनु लघुपानी॥

कृपानिवास० ॥ बिकल सकल दृग सलिल बिमोवैं। बित बियोग जनु लोभी शोचैं॥ सजति साज रानी मनमारे। संकट समय सु पुण्य सुधारे॥

संग्रह० ॥ सीयमातु कुशकेतु सुकामिनि। सिद्धि समेत और सबभामिनि॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ पुनिपुनिसीय गोदकरिलेहीं। देइअशीश सिखावन देहीं॥ होइहहु संततपियहि पियारी। चिरअहिवात अशीश हमारी॥ सासु ससुर गुरुसेवा करेहू। पतिरुखलखि आयसु अनुसरेहू॥ अतिसनेह सब सखी सयानी। नारिधर्मसिखवहिंमृदुबानी॥

रघुराज०छंदचौबोला ॥ इष्टदेव गुरुदेव कन्तकहँ मानेहु धर्मबिचारी। दोउकुलकी मरयाद कन्यका हाथेबसति कुमारी॥ रीति सनातनते चलिआई कन्या पतिघरजाहीं। गौरि गिरा इंदिरा शची निजनिज पियपास सोहाहीं॥ नहिंबेटी बिलखहु चित में कछुपठै तिहारोभाई। परिछनहींके पाछेआछे लैहैंभूप बोलाई॥ दशरथसरिस ससुर जगमेंनहिं जनक जनकसमपाई। कंतभानु-

कुल कमलदिवाकर तोसम दुतियनजाई ॥ रहेउसदा पतिको रुखराखत परिहरि सबसुखप्यारी । पतिशासन अनुसार काज सब कीन्ह्यो धर्म बिचारी ॥ वेदकहत अस सुनहु कुमारी नारी धर्मप्रधाना । संतनके मुखसुने सकलहम तैसोकरहिं बखाना ॥ दाससिरिस करैपतिसेवा सुखी सखासम करई । पतनी सरिस पतिव्रतधर्मनिबाहै जगजसभरई ॥ सोपतकरै भगिनिसम सिगरो बातसल्य जननीसो । सोनारी नरलोकशिखामणि हैपतिव्रत करनीसो ॥ सासु ससुरको पूजनकरियो जनक जननिसम मानी । नातोजाको जौनहोयकुल सोमानेहु जियजानी ॥ चारिहुभगिनि मिलीरहियो नित कबहुंनहोय बिरोधू । सबसासुन को मानराखियो किह्योन कबहूंक्रोधू ॥ प्रीतिरीति उरराखिदेवरन मान्यो बालकभाऊ । कुलवंतिनी नारि रघुकुलकी साध्यो शीलसुभाऊ ॥ परदुखदुखी सुखी परसुखसों सबसों हँसिमुख भाख्यो । यथायोग सतकार सबनको करिसनेह सुठिराख्यो ॥ गृहकारज अरु जकेकारज सबदिनरह्यो सम्हारे । रघुकुलकीनिमिकुलहूंकी अबहै करलाजतुम्हारे ॥ ह्वैहौलली सोहागिलपियकी आगिलते हमकहहीं । भागवंतिनी तिय श्रीमन्तिनि दोउ कुल दुखी नरहहीं ॥ पुनि उरमिला मांडवी अरु श्रुतिकीरति लियउ बोलाई । जननि सिखापनदेइ बिबिधबिधि मंत्रकमंत्रु बहाई ॥ रहियोसबै सियाकेसंमत करियो सियसेवकाई । दोउ कुल पतिव्रत धर्मउजागर रहैसुयश जगछाई ॥ गुरुजनकी गुरुता सखिजनको नेह देहभरिचाही । सरबसप्रीतम प्रेम नेमकरि क्षेमलहै जगमाही ॥ तनधन धाम काम बामनको पियअराम जेहिहोई । प्रीति प्रतीति नीति सोईकरि गहेरीति हठि सोई ॥ मानवतीन गुमानवती नहिंसानवती हैकबहूं । पियपरिचर्याकिह्योकुमारी कुमनहोय पतितबहूं ॥

मोहूलसों चौपाई ॥ सादर सकलकुवँरि समुझाई । रानि-

न बारबार उरलाई ॥ बहुरिबहुरि भेटहिं महतारी । कहहिं बिरंचि. रची कतनारी ॥

संग्रह० ॥ अस कहि रानि हियो भरि आयो । पुनि मुख ते कछु बचन न आयो ॥

रघुराज०दोहा ॥ आंखिनमें अँसुवा भरे सुनि जननीकी सीख । कहति न सिय कछु सकुच बश लही नीतिकी भीख ॥ चौपाई ॥ इतै राउ सुदिवस जिय जानी । बोलि बशिष्ठहि बोले बानी ॥ बिदा करावन कुँवर पठाओ । अवध गवन दुन्दुभी बजाओ ॥ तहँ बशिष्ठ मुनि अति सुख पाये । राम सहित सबबंधुबुलाये ॥ कह्यो बिदेह निवास पधारो । बधू बिदा करि सुदिन न टारो ॥

श्रीतुलसी०दोहा ॥ तेहि अवसर भाइनसहित राम भानु कुल केतु । चलेजनकमंदिर मुदित बिदाकरावन हेतु ॥

रघुराज०चौपाई ॥ पंच सहस्र सखा अनियारे । चढ़ेतुरंगन राज-कुमारे ॥ उदासीन पुरदेखतजाहीं । तेहिऔसर उछाहकहुँनाहीं ॥

श्रीतुलसी० ॥ चारिउ भाइ सुभाय सुहाये । नगर नारि नर देखन धाये ॥ कोउ कह चलन चहतहैं आजू । कीन्ह बिदेह बिदाकर साजू ॥

रघुराज०॥पृथकपृथकप्रभुप्रजाजोहारैं।रामचन्द्रमुखचंद्रनिहारैं॥

कृपानिवास० ॥ परी पुरीमेंधूम पुकारैं । राम रसिक सिय अवध पधारैं ॥ प्राणपियारे आजु पाहुने । चलो देखिये हमनि भावने ॥ कोइ प्रक्षालति अंग सुहाई । सुनि सुर मगन नगन उठि धाई ॥ कोइ भाजति जल अचवनि बिसरी । कोइ शृंगार करति तिय निसरी ॥काजरकरति कपोल अधीरा । उलटपलट भूषण धरि चीरा ॥ कोइ पति सेवा त्यागि पराई । सदा प्राण प्रिय रूपलुभाई॥कोइ पयप्यावति शिशुतजि दौरी। रामरूप मद सुनिकुलबौरी ॥ छूटे बासि घायलथिर रहैं । प्रीति चुटैतलजैं घर

भाजैं ॥ नागडसे चढ़ि सहजसुभावैं। लाग डसेकी लहरि भगावैं॥ लाज काज तजि भाज परीं सब। बीर तीरवत लक्षलगे थुब ॥ आईरामरूपरस प्यासी। मनहुँचकोरीचंदउपासी॥ लखेरामप्रभु छके सनेही। पगे नैन मन ठगेबिदेही॥ भई भीर रघुबीर घिराये। बैद सुघर जनु रोगिन पाये॥ एक सखी की अस गति भयऊ। छबि निरखति सुधि बुधि सब गयऊ॥ धीरज धरि मृदु बयन उचारे। खडे रहो प्रिय प्राण हमारे॥ देखनदो छबि नयन पियासी। हेसुखसिंधु महाछबिरासी॥ मोमनहोत अधीरबिशेखी। नख शिख नवल माधुरीदेखी॥ रसिक शिरोमणि मृदु मुसकाई। पीछे चितै चले अगुआई॥ राजसुवन मुखचंद देखाई॥ नयन ओट भे बिरह सो छाई॥ मूर्च्छित भई देह सुधि नाहीं। नयन सजल मुख द्युति कुम्हिलाहीं॥ धीर धरे नहिं आवत धीरा। राम बिरह की भइ अति पीरा॥ एक बावरी है मग लोटैं। अपरा खडी करें दृग चोटैं॥ कोइ कहैं लरैं करैं मग घेरो। कहि हँसि प्रिय बसि न्याव निबेरो॥ छरीदार मृदुकहि समुझाये। निज निज थल नर नारि बसाये॥

रघुराज०दोहा ॥ पग पग महँ घेरहिं प्रजा चारिहु राजकिशोर। अनिमिष निरखहिं मुखन को जैसे चंद चकोर॥ चौपाई ॥ कहहिं परस्पर दुखभरि बानी। हाय होति अब दरशन हानी॥

श्रीतुलसी० ॥ लेहु नयनभरि रूप निहारी। प्रिय पाहुने भूपसुत चारी॥ को जाने केहि सुकृत सयानी। नयन अतिथि कीन्हे बिधि आनी॥ मरण शील जिमिपाव पियूषा। सुरतरु लहै जन्मकर भूषा॥ पाव नारकी हरिपद जैसे। इनकर दरशन हम कहँ तैसे॥ निरखि रामशोभा उरधरहू। निज मन फणि मूरतिमणि करहू॥

कृपानिवास० ॥एकएकते कहैं बिशेखी। आजु लेहु भरि दृगछबि देखी॥ भूरिभाग बिधिदरशनदीन्हे। सो अबजात तयारीकीन्हे॥

रघुराज० ॥ यदपि जनक सिय बहुरि बोलैहैं । पुनि पुनि राम लेवावन ऐहैं ॥ पै अस लगत आज मनमाहीं । याते अधिक हानि कछुनाहीं ॥ दशरथपाहिं कहौ कोउ जाई । यदपि करी मिथिलेश बिदाई ॥ तदपि सकल मिथिलापुर बासी । राखहिं एकदिवस सुख आसी ॥ कोउ कह जायकहौ मिथिलेसै । आजु सुदिन नहिं गवन भदेसै ॥ कोउ ज्योतिषिन जाय धन देही । बरजहु बिप्र बिदा बैदेही ॥ देवी देवन बदैं पुजाई । रहैं चारि दिन चारिहु भाई ॥ नारी जुरि जुरि देखिउचारैं । बिदाकरावन कुँवर पधारैं ॥ दोहा ॥ बोलि पुत्र पति बंधु कहँ बहुबिधि कहैं बुझाय । जायकहो मिथिलेश पहँ बिदा बंद ह्वैजाय ॥ चौपाई ॥ पूजि कोऊ पुरजन्य मनावैं । बरसहुआजु राम रहिजावैं ॥ कहैं नारि कोउ बिगत उछाहू । लेहु आजु लगि लोचन लाहू ॥ हत दूषण नर भूषण प्यारे । जात अवध चित चोरि हमारे ॥ कहौ कुमारन को चलि कोऊ । रहिहैं आजु दयाबश ओऊ ॥ कोउ सखि प्रेम बिवश पुनि भाखैं । बरबश पकरि राम कहँ राखैं ॥ जाहिं अवधपुर राउ भलाई । रहै मौन मिथिलापुर साई ॥ हमहींराखब दूलहचारी । जबलगि पूजिन आशहमारी ॥ कोउसखि कहहिं नकरहु खभारा । सुदिवस आजहोतभिनसारा ॥ तबलगि जाय बुझाय सुनैना । राखब कुँवरन भूपति ऐना ॥ कोउकह असमुख अबकब होई । लखीराम सिय पुनि धनिसो-ई ॥ लखत पलक जिन कलपसमाना । तिनबिछुरे रहिहैं किमि प्राना ॥ कोउकह सखि सांवरो सलोना । तेहि बिन लखे हमहिं का होना ॥ दोहा ॥ अलक पाश पसराय मन लिये बिहंग फँसाय । हाय दई यह निरदई का करिहैं घरजाय ॥

सियासखी०पद ॥ सहेल्यो मेतो बाईजी के लाराजास्या । अवध नगर के डगर बगरमें दायज बालक हास्या ॥ श्री महाराज मिथिलेश कुँवरि ने बाईजी कह बतलास्या । सियासखीकी यही बीनती नित प्रति लाड़ लड़ास्या ॥

प्रियाशरण०पद ॥ जनि तुम जाहु अवधपुर प्यारे यहां रहो सुखदाई । तुवबिन लगत सकल फीको मोहिं घर आंगन न सुहाई ॥ अधरअरुण मुसक्यानिमनोहर दशनावलि छबिभारी । लखि लखि अति अनुराग मगनमन इतै सकल पुरनारी ॥ गौनेकी भई मौन देखि छबि व्याही लेति उसासा । अनव्याही मोहित मुख शशि लखि शरणागतकी आसा ॥ राजकुँवर तुम सहज सलोने हमरेमनधन हारे । प्रियाशरण बहुमार बिमोहन नयन कंज रतनारे ॥

कृपानिवास०दोहा ॥ बल्लभ हित तजि बल्लभी कबहुं न पर हित पाल । कमल जहां भ्रमरी तहां मुक्ता जहां मराल ॥ पद ॥ बनाजीम्हे चल स्यांजी थांरी लार । रसियनमन उरझो रसिया लखि भखमारै परिवार ॥ दिन नहिं चैन रैन नहिं निद्रा घर लागत मोहिंभार । कृपानिवासअरज अंदीदा सुनियेराजकुमार ॥

रामसखे०दोहा ॥ नैननते नहिं होहुतुम न्यारे क्षणपल लाल । रामसखे यह बीनती करहिं सकल मृदुबाल ॥ पद ॥ मोहिं लै चलुरे तू बनरे । सुनु पिय राम व्याह रँगभीने जहां प्रमोद बिपिनरे ॥ हौं तो मगन भई तुव छबि पर देखत चंद बदनरे । रामसखे पिय अवधि चंद्रमा तुव छबि सावन घनरे १ तोपै वारियां श्यामा परदेशी नेह लगाइ कित चला । कै लै चलु सिय संग में मोजिय अतिहि छला ॥ नैन चकोर भये लखि निशि दिन लगति न नेक पला । रामसखे पिय अवधि चंद्रमा तुव छबि अनत कला २ ॥

मधुरअली०पद ॥ बनरे फांसी प्रीतिकी डारे । तेहिपर भौंहकमान खैंचिकै नैनसाजि शरमारे ॥ ऐसो हाल हाय हंसिकरिकै अबतो अवधसिधारे । मधुरअली अब जियब कठिनहै तुमबिनु प्राणपियारे ॥

ज्ञानाअली०पद ॥ सियबरमानो हमारी बतियां । रहिदिनचारि और मिथिलापुर देहुसुख दिनरातियां ॥ नयननसयन बयनमृदु

कहिकहि बचिहौ गुननकी पतिया। खानपान मृदुगानन तानन हाव भाव रसघतिया॥ नापतियाहु लिखायलेहु किन छांडि कपट छल मतिया। ज्ञानाअलि पिय चरण शरण बिनु और नहीं तियगतिया॥

देवस्वामी०पद०॥ बैरनिलगलि लगनियां मोसे तजलि न जाय। बिरहसे जियराकचोटै बूडे उतराय॥ नख शिख बरत अगिनियां तनद्युतिमुरझाय॥ बिन रामरूपनिहारे मोको कछु न सुहाय। बिगरो कि संवरोदेवा शोचे मोरबलाय॥

मधुरअली०पद० ॥ सखीरी सिय बनरेसँग जावै। जबते लखी श्याम तवसूरति तबते कछुनसुहावै॥ मृदुमुसकाय छकाय छ-यलमोहिं सयनकीसांग चलावै। मधुरअली भइ रूपआशिकी कुलकीकानि नभावै॥

प्रेमअली०पद०॥ लगनलगीजब कौनकरेडर। गृहकारज मिट-जाय अलीरी बदनबिलोक मित्र अपने कर॥ लोकलाज कुल कानि तबहिंलग जबलग प्रेमरसी नकसीबर। बूंद स्वातिजल चातकचाहत यदपिभरे हैं अमित सरितासर॥ करुणाभरे खड़े घरवारे रोवतसती चढ़ीनाकभिसर। प्रेमअली बलझगड़ो कौन है जिवतनबेच्योहै अवधछयलकर॥

रामदास०पद०॥ प्रीतिके कोई फंदपरैना। जोकोइ प्रीतिके फंद परैगो कोटियतनकीन्हे उबरैना॥ सुखजीवन जो चाहै जगमें भूलि कोई परतीतिकरैना। मीनं नीरसों प्रीतिकियो अबबिछु-रत यकपल धीरधरैना॥ रामदास यह चालअटपटी है पतंग कोई धायजरैना॥

मधुरअली०पद०॥ तेरेनजरोंदी सैंफकीधार। सुनियेछैल अवध दशरथके घायलभये हजार॥ लोटपोटभये लगे चोटके मिथि-लापुरबाजार। मधुरअली पिय सांचीकहदो कबमिलिहो दिल दार १ हारि प्रीतिकीफँसिया तुम्हैंबिन कैसेरहबै राम। जबतें लखी रूपअलबेलो नाहिंसुहात धनधाम॥ अतिमनहरण छैल

रघुनंदन कोटिनिछावरि काम । मधुरअली कुलकानिछांड़ि संग चलेबनतहै काम ॥

रघुराज०चौपाई० ॥ यहिबिधिसुनत नारि नरबानी । चलेजात रघुपति छबिखानी ॥ अति बिमनस कछु कहत न बानी । प्रीति रीति नाहिंजाय बखानी ॥

श्रीतुलसी० ॥ यहिबिधि सबहि नयनफल देता । गये कुवँरसब राजनिकेता ॥

रघुराज० ॥ दौरिदूत तेहिअवसर आये । मिथिलापतिकहँख-बरिजनाये ॥ आवत राजकुवँर मनभाये । सोहत सखासंग छबि छाये ॥ उठेउभूप आयेचलि आगे । रामदरशकहँ अतिअनुरागे॥ आवतदेखि बिदेहकुमारा । उतरि तुरंगनते यकबारा ॥ कियेप्र-णाम नाम निजलीन्हे । भूपयथोचित आशिषदीन्हे ॥ सभाभवन महँ गयेलेवाई । सिंहासन आसीनकराई ॥ यथायोग सबसखन महीपा । बैठाये रघुनाथसमीपा ॥ तेहिअवसर लक्ष्मीनिधिआये। चारिहुबंधुनको शिरनाये ॥ उठे राम संयुत सबभाई । चलि मिलि निजसमीप बैठाई ॥ कुशलप्रश्नपूछ्यो सबभांती । राम देखिभै शीतलछाती ॥ दोहा ॥ सुरभिएल तांबूललै नृपकीन्ह्यो व्यवहार । यथा राम तिमि सबसखन मानि किये सतकार ॥ छंदहरिगीतिका ॥ तेहिकाल श्रीरघुलाल बचनरसालकह कर-जोरिकै । नैननमाय सुछायजल मानहुसबन चितचोरिकै ॥ तुम अवधपतिसम ममपिताहम अहैं बालक रावरे । जो भये कछु अपराध तौप्रभु क्षमियगुनि निजडावरे ॥ प्रभु छोह मोह सदैव रखियो आपनोशिशु जानिकै । हमअहैं लक्ष्मी-निधि सरिस अस सरति रखियो मानिकै ॥ अब चलन चाहत अवधको अवधेश संयुत साहनी । मोहिं बिदा मांगन हित पठाये बातहै दिलदाहनी ॥ आवनचहत आपहु इतै मांगनबिदा अब आपसों । हमरो सकल सिधकाजहैहै आप कृपा प्रतापसों ॥

जो नाथ देहु निदेश तौ जननी चरण बंदनकरौं। अब जाय अं-तःपुर सपदि निमिकुल निरखि आनँदभरौं॥ सुनि प्राणप्यारेके बचन बिलखेउ बिदेह महीपहै। गद्गदगरो कछु कहि न आवत बचन परम प्रतीपहै॥ अँशुवानिढारत जोरिकर बोलेउ बचन मिथिलेशहै। तुमजाहु अस किमि कहै मुख दृग ओटहोत कलेश है॥ यद्यपि अवध मिथिला सकल निमिकुल सुरघुकुल रावरो। तुम आइहौ मिथिला अवध हमजाब नित नित शामरो॥ यद्यपि सकल थल रावरेकोरूप मोहिं लखातहै। तद्यपिलला तुमजाहु असनहिं बदनसों कहिजातहै॥ जसहोइ राउर मनप्रसन्न निदेश जस अवधेशको। सो करहुसुरति न छांड़ियो निज जानि यहमिथिले शको॥ अब आशु चलि रनिवासमहँ कीजै नयन शीतललला। तुम अहौ सबके प्राणधन जानत न कोउ तिहरी कला॥ सुनि कै विदेह निदेशसहित सनेह तिन शिर नाइकै। संयुत सकल बंधुन चले मिथिलेश कुवँर लिवाइकै॥

श्रीतुलसी०दोहा॥ रूपसिंधु सब बन्धु लखि हरषिउ-ठेउ रनिवासु। करहिं निछावरि आरती महा मुदितमन सासु॥ चौपाइ॥ देखि रामछबि अति अनुरागी। प्रेम बिवश पुनि पुनि पदलागी॥ रही न लाज प्रीति उर छाई। सहज सनेह बरणि नहिं जाई॥

कृपानिवास०॥ उचित तजैं अनुचितलै दौरें। चवँर बिसार बसन शिर ढोरें॥ गंधभूलि जलसींचन लागीं। चंदनतजि घृत ले अनुरागीं॥ पीठ समय पर्यंक बिछाये। लाल दशालखि मृदु मुसक्याये॥

रघुराज०छंदगीतिका॥ रनिवासमें फैलीखबरि आये करावन बर बिदा। सब नारिधाईं दरशहित जेहिदेखि मनसिज शरमिदा॥ कुशकेतुकी महिषी तहां चलि रतन निउछावरिकरी। पुनि सिद्धि आई सखिन संयुत रतिलजावति रतिभरी॥ प्रभुउठि सबंधु प्र-

णाम कीन्हेउ दर्भकेतु प्रियापदै । मिथिलेश महिषी निकट बैठा-यउ दियो आनँदहदै ॥

संग्रह० ॥ बोलेउ सुनैना रानिसों बिनती अबै सुनिलीजिये । लागीक्षुधा भोजन कराइय नेक बिलँब न कीजिये ॥ चौपाई ॥ शील सनेह रामकी बानी । सुनिकै तुरत उठी महरानी ॥

मीतुलसी० ॥ भाइनसहित उबटि अन्हवाये । छरसअ-शन अतिहेतु जेंवाये ॥

रघुराज० ॥ इमिकराय भोजनमहतारी । सुरभितजलकरचरण पखारी ॥बैठायेपुनि आसनमाहीं । जुरीसकलरनिवासतहांहीं ॥

कृपानिवास० ॥ धूपदीपकरि अर्घआरती । भूषणबसन सुधनहि बारती ॥ नारिवृन्द जिमि शशिहि चकोरी । निरखहिं प्रभुछबि पलकन मोरी ॥

रघुराज०दोहा ॥ लैअपनेकर कमलसों बीरी बिमल बनाय । चारोंभाइनकोहुलसि दीन्ही सिद्धिखवाय ॥ चौपाई ॥ उतै अवध पुर करनपयाने । भूपचक्रवर्ती अतुराने ॥ सहित बशिष्ठ सुबृद्ध समाजा । गवनेउ बिदाहोनाहित राजा ॥ अवधनाथकी जानि अवाई । लियउद्वारते निमिकुलराई ॥ ल्यायसभा मंदिरबैठाये। करिसतकार बहुरि असगाये ॥ तनधनधाम सकल परिवारा । मोर अवधपति सकलतुम्हारा ॥ जोकछु भयउहोय अपराधा । क्षमहु क्षमाके उदधिअगाधा ॥

रघुनाथदास० ॥ निजसम सबबिधि मोहिं करिलीन्हे । उभय लोक अनवधियश दीन्हे ॥ यामें अचरज अहैनकोई । मलयस-मीप कुतरु हरिहोई ॥

रघुराज० ॥ जो शासन करु कोशलराऊ । करौं शीशधरि बिन छल छाऊ ॥ तब बशिष्ठ बोले मृदुबानी । सुनहु जनक भूपति बिज्ञानी ॥ राउ सकोच सनेह तिहारे । बिदा न मांगि सकत दुख भारे ॥ करन चहत अब अवध पयाना । बिते बहुत दिन

जात न जाना ॥ कुँवरि बिदाकरु सुदिवस आजू। देहु रजायस-जाय समाजू ॥ अस को करी प्रीतिकी रीती। जस तुम नेह निवाही नीती ॥ दोहा ॥ सुनि बशिष्ठमुनि के बचन जानि अवध पति जात। नृप बिदेहके नेहवश दुख नहिं देहसमात ॥ चौपाई ॥ सजल नैन गर गद गद भयऊ। नृपतिहुलास बीति सबगयऊ॥ बदनबचन कछुबोलि न आयो। मानहुं सरबस जनकगवाँयो ॥ पुनि धरि धीरज भूप बिज्ञानी। बोलेउ बचन जोरि युगपानी ॥ शील सिंधु प्रभु कोशलराई। किमि तिनको बिछुरन सहिजाई ॥ दीन जानि मोहिं दीन बड़ाई। किमि निकसै मुख तासु बिदाई ॥ तुम त्रिकाल ज्ञाता मुनिराई। मोरेशिरपर आपरजाई ॥ जानेहु मिथिलापुरी हमारी। मोहिं भल पग पामरी तिहारी ॥ जासु राम अस पुत्र प्रधाना। सकै कौन करि बिरद बखाना ॥ अनुग जानि अब कृपाकरीजे। करौं सकल शासन अब दीजै ॥ सौंपहुँ नाथ कुमारी चारी। पालब लघुसेवकी बिचारी ॥ दोहा ॥ धोखे अनधोखे कछुक जौन चूक परिजाय। क्षमा करब निज बाल गुनि मोरमान सुधिल्याय ॥ चौपाई ॥ परिचारिका दारिकाचारी। सौंपों तुमहिं अबै अति बारी ॥ नहिं जानहिं कछु लोक सुभाऊ। सिखयहु रीति न किहेहु दुराऊ ॥ इनपर कोउनहिं कीन्होंकोपा। रहीं काजतजि खेलन चोपा ॥ कटुक बचन इन परे न काना। सकल कुटुंब परमप्रिय माना ॥ रहीं मातु पितु प्राण पियारी। बंधु कुटुंबन दून दुलारी ॥ करौं बिनय तुवपद शिर धरिकै। राखेउ मान मोरि सुधि करिकै ॥ भरी सनेह बिदेह सुबानी। सुनि कह राउ नयन भरि पानी ॥ पुत्रबधू पुत्रन ते प्यारीं। तापर पुनि मिथिलेश दुलारी ॥ धन्यभाग हमरे घर जातीं। अधिक न इनते कोउ दरशातीं ॥ दोहा ॥ अपनो जानि सनेह करि राखेहु सुरति हमारि। कौन अधम जो रावरी देहै सुरति बिसारि ॥ चौपाई ॥ सतानंद तेहि अवसर आये। तेहि बशिष्ठ कहि बचन बुझाये ॥ आयो बिदा मुहूरत अबहीं। परिछन होइ जनावहु

सबहीं ॥ बर दुलहिनि पालकी चढ़ाई । द्वारदेशमहँ ठाढ़कराई ॥ परिछनकरैं जनक महरानी । दै दधिबिंदु उतारहिं पानी ॥ बर है बिदा बाहिर आई । करहिंगमन आगे सबभाई ॥ पाछे चलहिं पालकी चारी । अस अनुमति मुनि अहै हमारी ॥ सुनत बशिष्ठ बचन सहुलासू । गौतम सुवन जाय रनिवासू ॥ बोलि सुनैनहिं दियउ बुझाई । रानि चारिपालकी मँगाई ॥ दूलह दुलहिनि सपदि चढ़ाई । मंगल गान मनोहरगाई ॥ कनकथार आरती उतारी । पढ़िशुभमंत्र उतारयो वारी ॥ कीन्ह्यो सबबिधि परिछनचारा । लियउ बहोरि उतारि कुमारा ॥ कनकपीठमहँ बर बैठाई । बिविधबसन भूषणपहिराई ॥ दोहा ॥ मणिमाणिक मुकतामुकुट बरहीरनकेहार । नखशिखके भूषणसकल दियेअमाल अपार ॥ अतिअनुपमपट बिबिधबिधि ग्रंथितरतनअनेक । दीन्हेउ चारिहुबरनको समगुनि बिगतबिवेक ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ बोलेराम सुअवसरजानी । शीलसनेह सकुचमयबानी ॥ राउ अवधपुर चहतसिधाये । बिदाहोनहित हमहिं पठाये ॥

रघुराज०दोहा ॥ सुनतसुनैना रामके बैन नैनजलढारि । बोली आनँदअयनसों कोटिमैन छबिवारि ॥ अब न जाहु प्यारे कतहुं इतहीकरहु निवास । दरशओटकी चोटलगि करिहैं प्राण प्रवास ॥ दरशदहुनितहहिमैं करहुकलेऊआय । चारिहुबंधु बिशेषते अंगनखेलहुधाय ॥ इतमृगया खेलहुबिपिन राजकुमारबोलाय । तुमहो जीवनप्राणमम किमिबियोग सहिजाय ॥ धन्यभाग मेरी भई तुमसमपाये पूत । सकल सुकृतफल दरशतुव होत अनन्द अकूत ॥ बसि बिदेहपुर कछुकदिन कीजे अवधपयान । अवध नगर मिथिलानगर लालन तुम्हेंसमान ॥ कौशल्या केकयसुता और सुमित्रामात । सोपातिनाहे मोसेअधिक करिहैसांचीबात ॥ कवित्त ॥ यतनसों राखेधरि रतन अनेकजाति रोजरोज भूषण

अदूषण गढ़ैहौंमैं। कारीगर निपुण बोलायदेशदेशनते बसन अनेक रंग अंगपहिरैहौंमैं ॥ रघुराज कौनहू बिसंचमन होनपैहै खासे खासे खुशखेल खूब खेलवैहौंमैं। केवाजनिकीजेमोरि सेवासब भांतिलीजे मीठमांठ मेवा लैकलेवाकरवैहौं मैं ॥ दोहा ॥ लाल तुम्हैंदेखेबिना किमिरैहैं तनप्रान। बारबारबिनतीकरौं अबजानि करहुपयान ॥ चौपाई ॥ प्रभु जननी सनेहबशजानी। भरिआयो नैननमहँपानी ॥ धरिधीरज पुनि दोउकरजोरी। कहेउ बचन बिनती असमोरी ॥ मातुरजाय शीशमहँमोरे। नहिंबिसंचमोहिं सन्निधि तोरे ॥ तोरसनेह बिलोकि अघाता। नहिंउत्तर आवत कछु माता ॥ जोकछु उचित करो अबसोई। करिहौं मैं जोआयसुहोई ॥ कबहुं न तोहिं वियोग हमारा। तैं जननी हम तोर कुमारा ॥ छोह मोहराखेउ सबभांती। नैंनबिसरिहै मोहिं दिन राती ॥ कौशल्या केकयी सुमित्रा। यदपिमातु ममप्रीतिपवित्रा ॥ सबतेअधिक मातु तैंमोरे। जस लक्ष्मीनिधि हौं तसतोरे ॥ जब करिहै सुमिरण मोहिंमाता। तबहिंआइहौं मृषानबाता ॥

श्रीतुलसी० ॥ मातुमुदितमन आयसुदेहू। बालकजानि करब नितनेहू ॥

रघुराज० ॥ यदपिप्रबोधेउ बहुबिधि रामा। राम बिछोह भई तनछामा ॥

श्रीतुलसी० ॥ सुनतबचन बिलखेउ रनिवासू। बोलिनसकहिं प्रेमबशसासू ॥ हृदयलगाय कुवँरिसबलीन्ही। पतिनसौंपि बिनती अतिकीन्ही ॥ छंदहरिगीतिका ॥ करिबिनय सियरामहिंसमर्पी जोरिकरपुनिपुनिकहै। बलिजाउँ तातसुजान तुमकहँ विदितगतिसबकीअहै ॥ परिवार पुरजन मोहिंराजहिं प्राणसियप्रियजानवी। तुलसीसुशीलसनेहलखि निजकिंकरीकरमानवी ॥

रघुराज०चौपाई ॥ सुनिये जीवनप्राणअधारा । बिनती यहमम बारहिबारा ॥ सचिव राउ हमसब चरदासी । जातिबंधुजहँतक पुरबासी ॥ सबहि प्राणप्रिय सुताहमारी । कबहुं लागिन ताति बयारी ॥ दृगपुतरीइव सबदिनपाली । निरखतरहिउँ यथामन ठ्याली ॥ रही मातुपितु प्राणपियारी । बंधुकुटुंबन दूनदुलारी ॥ तुम्हरेकर निबाहु इनकेरा । करहुसो मोदलहै मनमेरा ॥ करों विनय तुवपदशिरधरिकै । राखेहुमान मोरिसुधिकरिकै ॥

श्रीतुलसी०सोरठा ॥ तुम परिपूरणकाम जानि शिरोमणि भायप्रिय । जनगुणगाहकराम दोषदलन करुणायतन ॥ चौपाई ॥ असकहि रही चरणगहि रानी । प्रेम पंक जनु गिरासमानी ॥

रघुराज० ॥ मुखसों नहिं कहिआवतबानी । निकरतनैन निरन्तरपानी ॥ करजोरे कांपतसबगाता । निरखति राम बदनजलजाता ॥ प्रभुजानेउ मोहिंकरतपयाना । तजिहै अवशि जननि प्रियप्राना ॥ दीनेउ भक्तिज्ञान अवदाता । पोंछिनयन बोली तब माता ॥ तुमसर्वज्ञ सकलगुणआगर । प्रेमनेम जानहुनयनागर ॥ दोहा ॥ रहौंन देखनकी दुखी दरशनदीजै आय । होहुओट इन नयनके असकसकै कहिजाय ॥

ज्ञानाअलि०पद० ॥ ललन ससुरारि छांडि कहँजैहौ । यह सुख कतहुंनपैहौ ॥ सासु श्वशुर सारी सरहज सब मिथिला बिरह सतैहौ । मानि ननँदनाते ननदोई फिरि बिधुबदन देखैहौ ॥ प्रमदाबन भूलेहु जनिरघुबर निजकरपातिपठैहौ ॥ जोतुमसांच अवधनृपनन्दन सांचीकहौ कबऐहौ । ज्ञानाअलि तब सफल मनोरथ जब हँसि कंठलगैहौ ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ सुनि सनेहसानी बरबानी । बहुबिधि राम सासुसनमानी ॥ राम बिदामांगत करजोरी । कीन्हप्रणाम बहोरिबहोरी ॥ पाइअशीश बहुरि शिरनाई ।

भाइनसहित चलेरघुराई ॥ मंजु मधुरमूरति उरआनी ।
भई सनेहशिथिल सबरानी ॥

संग्रह० ॥ परम सुजान शील गुण धामा । गये मातुर सिद्धी ढिग रामा ॥

रघुराज० ॥ उठी जनक सुतबधू सयानी । करगहि कही प्रीति बश बानी ॥ नेहलगाय नरेश किशोरा । अबमतिजाहु अवधकी वोरा ॥ दरश बिना किमि रहे शरीरा । बिछुरत होत दुसह तन पीरा ॥ लाल प्रीतिकी रीति न जानों । सहजहि प्रेम पंथ मन मानों॥अब नहिं करहु लाल निठुराई । जाहु दगा दै प्रीति लगाई ॥ प्रभुमुसक्याय कही मृदुबानी॥ यदपि न गमनत बनत सयानी॥ पितु शासन शिरपर सबभांती । कहाकरौं अब मति अकुलाती॥ देहौं दरश बहुरि मैं आई । तुम जनि शोचकरहु मन भाई ॥ जनम जनम नातो यह होई । तुम सरहज हम हैं ननदोई ॥ तुमहिं कबहुँ नहिं बिछुरनि मोरी । अयहौं अनशि प्रीति लखि तोरी ॥ यह सन्बंध सनातन केरा । तुमहुँ अवधपुर करहुअमेरा ॥ दोहा ॥ सिद्धि सुनत प्रभुके वचन पुनिबोली कर जोरि । पालब सब अपराध छमि ननदि चारिहूँ मोरि ॥ चौपाई ॥ इनकबहूं अ-विमान न जाना । रहीं दुलारभवन बिधि नाना ॥ कबहुँ न फूल छड़ी कोउ मारी । कटुक गिरा नहिं जननि उचारी ॥ मान सकोच दुलार बड़ाई । लगी रावरे कर रघुराई ॥ पालब सकल अनुचरी जानी । यतना कहत ढरयो दृग पानी ॥ सिद्धि प्रीति नहिंजाय बखानी । बोले राम मनोहर बानी ॥ अवध जनकपुर भेद न काऊ । उभय अमान समान प्रभाऊ ॥ सो पति सुख सकोच सब दूना । सिद्धि कबहुँ ह्वैहै नहिं ऊना ॥ लियो बोलाय-जबै मनभावै । आवैं फेरिहम बिदाकरावै ॥ दरशपरश ह्वैहै यहिख्या जू । ह्वैहै सिद्धि सिद्धि तव काजू ॥ राम बुझावहिं बारहिबारा । रुकति न सिद्धि नैन जलधारा ॥ जस तसके कछु धीरज दैकै ।

गवने राम बिदा तेहि ह्वैके ॥ गे कुशकेतुनारि ढिग नाथा । बोलेउ बचन नाय तेहि माथा ॥ दोहा ॥ चारिहु बंधुनकी अहौं जननी युगल समान । कौशल्यादिक मातु महँ मोहिं न भेद देखान । चौपाई ॥ राखेहु सुरति मातु सबकाला । चारिहु बंधु तुम्हारेबाला ॥ सुनिकुशकेतुदार प्रभुबानी । प्रीतिबिवश अति मति अकुलानी ॥ बोली कंज करन युग जोरी । राखेउ सुरति लाल छमि खोरी ॥ यदपि सनातनते चलिआई । ह्वै विवाह बरबधू बिदाई ॥ तदपि न बुद्धि फुरत कछु मेरी । भै गति भुजँग छछूंदरि केरी ॥ प्रीति बिवश प्रभुबंदन कीन्हे । बाहेर चलन हेतु मनदीन्हे ॥ यथायोग करि सबको बंदन । लै आशिष सबसों रघुनन्दन ॥ दै धीरज पुनि आउब आशू । प्रीति बिवश दृगढारत आंशू ॥ चले बाहिरे बंधु समेतू । मनहुँ चोराय सबनकर चेतू ॥ मणि भूषण सुंदर पट नाना । दिये सिद्धि नहिं चित्त अघाना ॥ सुंदरि मणिमुंदरि यक ल्याई । दियउ राम अंगुलि पहिराई ॥दोहा॥ सो मुँदरी मणि में लिखे अस आखर रसभीन । कबहुँ न सिधि सुधि छोड़ियो लाल प्रबीन प्रबीन ॥ चौपाई ॥ पुनि कुशकेतु भूपकी रानी । रतन बिभूषण पट बहु आनी ॥ चारिहु बंधुन दिये समाना । भेद भाउ मनमें नहिं जाना ॥ नगरनारि रनिवास नेवासिनि । जेआई दरशनकी आसिनि ॥ जिनकेजौन बस्तु घर नीकी । दीन्ही बरन जानि जिय फीकी ॥ कहहिं नारिसब बचनउचारी । काह देन गति अहै हमारी ॥ राखेउ मन हमरो सँग अपने । छोडेहु कबहुँ न सुंदर सपने ॥ बारबार मिथिलापुर आई । दीजै दर्श चूक बिसराई ॥ तब सबको करिकै सनमाना । जानि सु-नैना सिद्धि समाना ॥ बैठ सभा जहां दोउ राजा । भ्रातनसहित गये रघुराजा ॥ राम बिरह तिय नैननि नीरा । बहि बहि भयो उदधि गंभीरा ॥ कहहिं परस्पर नारि दुखारी । सीय बिदाते यह दुख भारी ॥ भयो शोक सागर रनिवासा । लागी बहुरि द-शर की आसा ॥ दोहा ॥ आवत लखि रघुराजको सिगरी उठी

समाज। श्वशुर पिता पद बंदि प्रभु बैठे शील दराज ॥ चौपाई॥ तहां जनक सब सचिव बोलाये। ल्यावहु दाइज बचनसुनाये॥ सचिव आशु लै आवन लागे। जिनलखि शक्र धनद मद भागे॥ गलहैकल शिर सुबरण शृंगा। पीठ पाटवी झूल अभंगा॥ दियो सुरभि शतसहस अनेका। कामधेनु ते लघु नहिं एका॥ बरण अनेकन बिमल दुशाले। झूलत झब्बे मुकुत बिशाले॥ देश देशके निरमित पागे। मणि शिरपेंच कलंगी लागे॥ ग्रंथित रतन अनेकन बागे। कटि फेंटे मणिज्योतिन जागे॥ चरण बसन बहु बरण अमोले। मानहुँ मदन पाणिके तोले॥

रघुनाथदास० ॥ भूषण सुभग एकते एका। भरे मजूषा चित्र अनेका॥ बसन रूमपट पाटअपारे। परमरम्य अतिशयगुणभारे॥

रघुराजसिंह० ॥ कोटि कोटि यक यक बरकाहीं। देत पोशाकन जनक अघाहीं॥ दियो लक्षदश मत्तमतंगा। कनकसाज सज्जित बहुरंगा॥ जिनहिं देखि ऐरावत लाजा। भये गर्वगत दिशि गजराजा॥ कोटि एक पुनि दियो तुरंगा। जिन लखि उच्चश्रवा मदभंगा ॥दोहा॥ कनक साज साजे सकल मारुतबेग प्रमान। देश देशके बरण बहु जल थल चलहिं समान॥ छंद॥ तनक बनक नहिं न्यून कनकके स्यंदन झनक अपारे। वृन्दन वृन्दन युगल बीसबर लक्ष मनोज समारे॥ दीन्ह्यो स्यंदन रघुनन्दन को आनन्दन मिथिलेशा। नहे तुरंग अनंग सभाजित जीते जंग हमेशा॥ राजत जातरूपके भाजन रतन अनूप जड़े हैं। निज अनरूप भूप दीन्ह्यो बहु देखन देव अड़े हैं॥ पन्ना पदिक लालमाणिक के पुष्पराज गोमेदू। नीलक लसुन प्रबाल पिरोजन भूषण सहित बिभेदू॥ इंद्र नील मणि पद्मराग के मरकत मणि आभरणा। नख शिखके त्रयशत युग त्रिंशत पृथक पृथक जिन बरणा॥ दीन्हे चारि कुमारन को नृप औरहु मणि बहुताई। पंचसहस्र महीप कुमारन रघुपति सखन बोलाई॥

नृप समान दीन्हे पट भूषण हय गय रथन मँगाई। पुनि यक यक गजमुक्तन माला पृथक पृथक पहिराई। एकएक चिंतामणि नामक दीन्हा मणि सुखदाई॥ चिंतामणि नामक मणिके पुनि यक यक हार मँगाई। जनक पाणि पंकज निज चारिहु कुँवरन दिय पहिराई॥ गजमुक्तन को महाहार यक जेहि बिचबिच छबि छाई॥ चंद्रकांति औ सूर्यकांति मणि लगी तेजसमुदाई। सो कर हार धारि मिथिलापति दशरथ को पहिराई॥ जोरि पाणि पुनि बिनयकियो अस सुनहु भानुकुल भानू। हम नहिं देन तुम्हारेलायक कहँ महि कहँ परिमानू॥ अक्षोहिणी एक मिथिलाकी जाति कुमारिन संगा। लायन अभिलायन गमनत सँग दासी दास सुभंगा॥ तिनकर पोपन पालन लालन राउर हाथ महीपा। हमसेवक रावरेसदाके आप भानु हमदीपा॥ फेरि सुधावन सचिव बोलि नृप शासन दियो सुनाई। रहै नबाचि बराती कोउ अस बिन भूषण पटपाई॥ सकल सुधावन आदि सचिव तहँ पट भूषण बहु ल्याई। जनक चौक महँ बिबिध चौतरन दीन्हे शैल बनाई॥ दिहे बरातिन लघु बड़ मनुजन जाहि जौन जस भायो। कोउ नहिं रह्यो तहां अस जन जो पट भूषण नहिं पायो॥ जनक नगर के सभ्य महाजन धनी धनद के जोरी। पृथक पृथक दाइज ते दीन्हे करि कीरति चहुँ ओरी॥ इन्द्र बरुण यम धनद आदि सुर देखि बिदेह बिभूती। लज्जित भये वृथा माने मन निज निज कर करतूती॥ अवध नेवासी सकल सराहत जनक उदार स्वभाऊ। ज्ञानी कहत अचर्य करो जनि यह सिय कृपा प्रभाऊ॥ दाइज दियो बिदेह जौन सो दशरथ भूप उदारा। सो सब भादन भिक्षुक दीनन दीन्ह्यो बिनहिं बिचारा॥ अधिक अधिक सो बढ्यो घट्यो नहिं सिय महिमा अधिकानी। जहां प्रत्यक्ष रमा तहँ केहि बिधि संपति जाय बखानी॥ कनक रतन पट हय गय स्यंदन भाजन बस्तु अनेका। दियो बिदेह जाहि जसभायो बिसरयो बुद्धि बिवेका॥ यहि बिधि

दै दाइज मिथिलापति कौशलपति सों भाख्यो। हमरे काह देन को प्रभु जो रह्यो सो आगे राख्यो॥

रघुनाथदासकृतचौपाई॥ हे अवधेश बिमल यशकेतू। सकल काम परि पूरण सेतू॥ मैं निलज्ज यह सौज देखाई। जिमि को इस्वर्ण सुमेरहि लाई॥ पर प्रभु ईश बड़े जे अहई। तिनकी रीति वेद इमि कहई॥ दास फूल फल जल जो देहीं। प्रभु ते अधिक प्रीति ते लेहीं॥ दोहा॥ तेहि अवसर गौतम सुवन बोलेउ बचन विचारि। गमन मुहूरत आइगो कन्या चलैं सिधारि॥ गमन करैं बर चारहूं यही मुहूरत माहिं। पुर बाहेर परखहिं पितै नृप अन्तहपुर जाहिं॥ करि बिधि मंडफ मोचनी समधिनि सों रचि फागु। पुत्र बधू लै संगमें गमन करैं बड़ भागु॥ एवमस्तु दशरथ कह्यो राम चारिहू भाय। चले तुरंगन में चढ़े पिता श्वशुर शिरनाय॥ चौबोलाछंद॥ लक्ष्मीनिधि को पाणि पकरिके उठे अवधपति आसू। बिधि मंडफ मोचनी करन को चले हरषि रनिवासू॥ परिचारिका सुनैना की तहँ डेउढ़ी ते चलि लीन्हेउ। अवध चक्रवर्ती को मंडफके तर आसन दीन्हेउ॥ सुरभित तैल अनेक मसाले तांबूल युत लाई। वृद्ध वृद्ध कुल नारि पाणि निज दियो लगाय खवाई॥ फेरि कह्यो करजोरि भूपसों मंडफ बंधन छोरौ। नेगनमें निज भगिनि देहु नृप जनि उदार मुख मोरौ॥ नृप उठि मंडफ को बंधन तहँ निज कर छोरयो एकू। कह्यो बहुरि मुसक्याय सुनहु मम बचन बिचारि बिवेकू॥ हम लेने कोशलते आये नहिं देबेके हेतू। जो जो देहौ सो लैके हम जैहैं बहुरि निकेतू॥ दीन्हेउ पुत्र बधू अति सुंदरि सो पुत्रनको भागा। हम न अवधपुर जाब छूछकर कछु हाथे नहिं लागा॥ जो मिथिलेश भगिनि होवैं कहुँ तौ नेगन तर दीजै। नातौ चलै सुनैना रानी यही निबाह करीजै॥ सुनि कुल बधू वृद्ध नृपबाणी कही सुनैनैजाई। अवसर जानि चार करिबे हित सो बाहेर कढ़ि आई॥ कनक थार लै पाणि रंग भरि धरि

काजर टिकुली को । करि प्रणाम समधीको सुन्दरि दियेउ भाल महँ टीको ॥ अंगनि अंग सुरंग रंग लै डार्यो सहित उमंगा । नैननि में काजर पुनि दीन्हो करि कछु कूट प्रसंगा ॥ उठि कोशलपति तब समधिनिको करि प्रणाम सुख छाये । चिन्तामणि हारपाणि लै समधिनि को पहिराये ॥ पद्मराग मणिमाल सुनैना समधीके गर दीन्हीं । जोरि पाणि पंकज भूपतिसों सनै विनय अस कीन्हीं ॥ ये चारिहु दारिका हमारी परिचारि का तिहारी । लालन पालन अब इनको सब कीजो बाल बिचारी ॥ तुम्हरे कर सौंपहुं नर नायक ई चारिहू कुमारी । ये नादान जानती नाहीं कछु पालेहु भूप बिसारी ॥ अपनी अरु सिगरी सासुनकी सेवा सब करवायो । काहुसों कबहुँ बिरोध होइ नहिं निज कुल रीति सिखायो ॥ सुनत सुनैना बैन अवधपति जोरि पाणि कह बानी । प्राणहुँ ते प्रिय पुत्र बधू मम सपनेहुँ दुख नहिं रानी ॥ शासन देहु जाहुँ कोशलपुर पुनि ऐहौं बहुबारा । मिथिलापति को अहै अवधपुर मिथिला नगर हमारा॥अस कहि करि जुहार समधिनिको भूपति बाहेर आये।चलन हेत मिथिलाधिपति सों जोरिपाणि असगाये ॥ शासनदेहु बिलंबहोति बड़ि तुम अवलंब हमारे । मोदकदंब मिलनि राउरि मोहिं बिसरी नाहिं बिसारे ॥ कह्यो बिदेह सनेह बिवश ह्वै पहुँचैहौं कछु दूरी । यह कुलरीति नाथ बरजौ जनि तुव बिछुरनि दुखमूरी ॥ नृप प्रणामकरि चलेउ चढ़े रथ बाजे बिविध नगारे । मिथिलापति सों कह बशिष्ठ तब सुदिवस सुभग बिचारे ॥ यही मुहूरत महँ कन्या सब चलैं भवनते राजा । द्वितिय मुहूरत नहिं शुभदायक करहु आशुही काजा ॥ दोहा ॥ सुनि बशिष्ठके बचन बर कुशध्वज सहित बिदेह । लक्ष्मीनिधिको संगलै गे अंतहपुर गेह ॥

संग्रह०चौपाई ॥ इत अंतहपुरमें महरानी । सखिनबुलाय कही अस बानी ॥ सखीसयानि बिलंब न लावो । पुनि कुवँरिन शृंगार करावो ॥

प्रियाशरण० ॥ सियकहँ,लै सबभगिनि समेता । गईंसहचरी शृँ-गार निकेता ॥सियकों सकलसखी परबीनी । करनलगीं शृंगार नबीनी ॥ बसन नवीन महांछबि राशी । पहिराये अति अमल प्रकाशी ॥

रघुराज० ॥ तीनिहुं भगिनि सहित सियलाई । बारबार दृग बारि बहाई ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥पुनि धीरजधरि कुवँरि हँकारी ।बारबार भेंटहि महतारी ॥ पहुँचावहिं फिरमिलहिं बहोरी । बढ़ी परस्पर प्रीति न थोरी ॥ पुनि पुनि मिलत सखिन बि-लगाई । बाल बत्स जनु धेनु लवाई ॥

रघुराज० होतबिदा सिय धीरजभागा । प्रगट्यो प्रजा परम अ-नुरागा ॥ पुरबासिनी नारिसब आईं । सियहि देन पट भूषण ल्याईं ॥ औरहु निमिकुलकी सबनारी । दीन्हे पट भूषण मन-हारी ॥ असकोउ तहँ नहिंहोत बिचारी । सियहि देहिं घर बस्तु न सारी ॥ आयमिलें सियकहँ पुरनारी । रोदन करहिं नेह बश भारी ॥ सियमहिमा तेहिक्षण प्रगटाई । मिलीं सकलपुरनारिन जाई ॥ यहचरित्रजान्यो कोउनाहीं । जानीसबैमिलींहमकाहीं ॥

श्रीतुलसी०दोहा ॥ प्रेमबिवश नर नारिसब सखिनसहित रनिवास । मानहुँ कीन्हबिदेहपुर करुणाबिरह निवास ॥

चौपाई ॥ शुकशारिका जानकी जिआये । कनक पिंजरन राखि पढ़ाये ॥ ब्याकुलकहहिं कहां बैदेही । सुनिधीरज परिहरै न केही ॥ भये बिकल खग मृग इहिभांती । मनुजदशा कैसे कहिजाती ॥ बन्धु समेत जनक तब आये । प्रेम उमगि लोचन जल छाये ॥

रघुराज० ॥ बोलेबचन बोलाय सुनैना । अब बिलंबकर कारज

हैना ॥ बीतत बिदा मुहूरत अबहीं । उचित सनेह करब नहिं सबहीं ॥ चढ़ैं पालकी सकल कुमारी । साजहु साज बिलंब बिसारी ॥

संग्रह० ॥ कह्योसुनैना भूपतिकाहीं । इतै न काज देरिकछुनाहीं ॥

रघुराज० ॥ सीय पितापदलखि लपटानी । सो दुख अबकिमि जाय बखानी ॥

श्रीतुलसी०चोपाई ॥ सीयबिलोकि धीरताभागी । रहे कहावत परम बिरागी ॥ लीन्हराउ उरलाइ जानकी । मिटी महा मर्याद ज्ञानकी ॥

रघुराज० ॥ बढ़यो बिलोचन बारि प्रबाहा । लहत न नृप दुख सागर थाहा ॥ कहि न सकत मुखते कछु बानी । तेहि औसर धीरता परानी ॥ भाषत सीय बहोरि बहोरी । छांड़हु पिता सुरति नहिं मोरी ॥ मच्यो कोलाहल सब रनिवासू । तेहि क्षण भयो सकल सुख ह्रासू ॥ दोहा ॥ लीन लायउर जनक सिय तनक न रह्यो सम्हार । डूबी धीर जहाजजनु प्रेमहि पारावार ॥

श्रीतुलसी०चोपाई ॥ समुझावत सब सचिव सयाने । कीन्ह बिचार अनअवसर जाने ॥ बारहिबार सुता उर लाई । सजि सुंदर पालकी मँगाई ॥

रघुराज० ॥ यतनाकहत गरो भरिआये । जनक निकरि तब बाहरैं आये ॥ मिलीसीय कुशकेतुहि जाई । तनते धीरज गयो पराई ॥ लीन्हीलाय सीय उरमाहीं । रह्यो धीरता लेशहुनाहीं ॥ हायसुता मम प्राणपियारी । लहब बहुरिकब मोद निहारी ॥ दोहा ॥ जस तसकै धरिधीर कछु चलेउ बिकल कुशकेतु । लक्ष्मीनिधिके चरणमहँ गिरी सीय बिनचेतु ॥ चोपाई ॥ कहिभैया सिय रोवनलागी । को अस जेहि न धीरता भागी ॥ सखीसीय कहँ लई उठाई । माच्यो रोदन शोर महाई ॥ कढ़तिनमुख लक्ष्मीनिधि बाता । सीयसनेह शिथिल सब गाता ॥ जस त-

न कै धरि धीर सुनैना। अवसर उचित कही अस बैना॥ कन्या काहुके घर नहिं होई। सुता सनेह करै जनि कोई॥ सुता होइ तौ होइ न नेहू। नेह होइ विधि राखै गेहू॥ यहि विधि करत अनेक प्रलापा। बाल वृद्ध सुनि करहिं बिलापा॥ नहिं सिय तजति भ्रातके चरणा। सो दुख जाय कौन विधि बरणा॥ भगिनि सनेह विवश सिय भ्राता। रोदन करत कहत नहिं बाता॥ करगहि कोउ तहँ सखी सयानी। लै गमनी बाहेर दुखजानी॥ मातु अंक महँ सिय लपटानी। मनहुँ करुण रस सरि उमगानी॥ लिई सुनैना गोद उठाई। धरि धीरज बहुबात बुझाई।। दोहा॥ रोवहिं सबनारी विकल भरी सीय अनुराग। मानहुँ सिगरे भवन में छायो राग बिहाग॥ चौपाई॥ तहँ कुशकेतु भूप की रानी। कहत बुझाय परम प्रिय बानी॥ जनि मानहुँ दुख नरहिं कुमारी। लेहु सनातन रीति बिचारी॥ कन्या अवशि सासुरे जाती। पुनि माइके अवशि सब आती॥ हिम गिरि मैना गौरि कुमारी। शंभु ब्याह कैलास सिधारी॥ देवहुती मनु भूप दुलारी। करदम भवन बसी तपधारी॥ नृप सरयाती सुता सुकन्या। बसी च्यवन मुनि घर भै धन्या॥ देवयानि पुनि शुक्र कुमारी। भूप ययाति भवन पगुधारी॥ सांता दशरथ सुता सोहाई। शृंगीऋषि राखेउ वरल्याई॥ देव दैत्य सुर नर मुनि नाना। दिये सुता करि ब्याह विधाना॥ जैहैं संगेमहँ अनवैया। लैहैं आशु आनि तव भैया॥ यहि बिधि कहत प्रबोधहिं बानी। बहत जात नैननसों पानी॥ सीय दुसहदुख देखि बिदाई। भये बिकल रुकिगे दिनराई॥ दोहा॥ ग्रहतारन संयुत रुक्यो महा चक्र शिशुमार। देखत बिबुध बिमान चढ़ि बहतनैन जलधार॥ चौ० चारिहु भगिनि मिलति यहि भांती। दुखित चढ़नि शिबिका कहँ जाती॥ नारि वृन्द सब बिकल सिधारें। रहैं न कोहुके अंग सम्हारें॥ भिलत परस्पर यहि बिधि सीता। द्वारदेश लौं गईं पुनीता॥ धरि धीरज तहँ परमसयानी। आईं मातु सुनैना

रानी॥शिविकाआनिरतनमयचारी । दियचढ़ायचारिहूकुमारी ॥

श्रीतुलसी०दोहा ॥ प्रेम बिबश परिवारसब जानि सुल-गन नरेश ।कुँवरिचढ़ाई पालकिन सुमिरे सिद्धिगणेश ॥

रघुराज० ॥ दधिटीके दै भाल में सगुन सकल धरवाय । करि परिछन कीरीतिसब दिय पालकीचलाय ॥ चौपाई ॥ जस तसके धरि धीरज राजा । बोलेउ बिलषत मंद अवाजा ॥ निमिकुल की सिगरी मरयादा । रक्षन किहेहु बिहाय बिषादा ॥ अमल ससुर कुल सुता सिधारी । जस इत तस उत पितु महतारी ॥ कीजेउ सासु ससुर सेवकाई । पतिब्रत धर्म कबहुँ नहिं जाई ॥ राखेउ सबसों शील सनेहू । क्रोध लोभ कीन्हेउ नहिं केहू ॥ ल्याउब हम इत बारहिबारा ॥ किहेहुन नेसुक मनहिं खभारा ॥ करिहै मोसे अधिक दुलारा । ज्ञानि शिरोमणि ससुर तिहारा ॥ पति रुख राखि किहेउ सबकाजा । सदाप्रसन्न रहै रघुराजा ॥

श्रीतुलसी०चौ० ॥ बहुबिधि भूपसुता समुझाई । नारिधर्म कुलरीति सिखाई ॥

रघुराज० ॥त्रैलखनृपजाहितसेवकाई।यथायोग्ययाननबैठाई ॥

श्रीतुलसी०चौ० ॥ दासी दास दिये बहुतेरे । शुचि सेवक जे प्रिय सिय केरे ॥

रघुराज० ॥ चलत पालकी नगर मँझारी । कीन्हेउ प्रजा कोलाहल भारी ॥ पशु बिहंग मिथिलापुर केरे । रोदन करत जानकी हेरे ॥ चढ़े बिमान देवयुत दारा । सिय बिलोकि बह आंशुन धारा ॥ तेहि क्षण को अस त्रिभुवन माहीं । भयो जाहि सिय लखि दुख नाहीं ॥ पाले सीय बिहंग कुरंगा । रोवत चले पालकी संगा ॥ सतानंदतहँ आशुहि आये । लाखन स्यंदन शकट मँगाये ॥ भरि भरि शकटन साजु अपारा । दिये चलाय संग यकबारा ॥ अक्षौहिणी साहनी साजी । चली संग महँ हय गय राजी ॥ चले संग नानानरयाना । चढ़ी सखी सजि बिबिध

बिधाना ॥ चले सकल पुरजन पहुँचावन। बालवृद्धकरि मारग धावन ॥ बारबारसब ईशमनावैं। जलदजनक जानकीबोलावैं ॥

श्रीतुलसी०चौ० ॥ सीय चलत व्याकुल पुरबासी। होहिं सगुन शुभ मंगल रासी ॥

रघुराज० ॥यहिबिधिसिय बरातमहँआई।बजेमुरजदुंदुभिसहनाई॥

श्रीतुलसी०चौ० ॥ भूसुर सचिव समेत समाजा। चले संग पहुँचावन राजा ॥ रथ गज बाजि बरातिन साजे। सुनि गहगहे बाजने बाजे ॥ दशरथ बिप्र बोलि सबलीन्हे। दान मान परिपूरणकीन्हे ॥ चरण सरोज धूरि धरि शीशा। मुदित महीपति पाइअशीशा ॥ सुमिरिगजानन कीन्ह पयाना। मंगल मूल सगुन भये नाना ॥ दोहा ॥ सुर प्रसून बरषहिं हरषि करहिं अप्सरागान ॥ चले अवध पति अवधपुर मुदित बजाइ निशान ॥

रघुराजसिंह०दोहा ॥ दशरथके तहँ मिलन हित ससुत सबंधु बिदेह। मुनिन सहित आवत भये भरे अछेह सनेह ॥ चौपाई ॥ आवत जानि बिदेह महीपा। रुके अवधपति नगर समीपा ॥

संग्रह० ॥ करिदौयानबरोबर राजा। गवनेमंदहिमंदसमाजा ॥

श्रीतुलसी०चौ०॥नृपकरि बिनयमहाजनफेरे। सादरसकल मांगनेटेरे ॥ भूषण बसन बाजि गज दीन्हे। प्रेम पोषि ठाढ़े सब कीन्हे ॥ बारबार बिरदावलि भाखी। फिरे सकल रामहिं उरराखी ॥ बहुरिबहुरि कोशलपति कहहीं। जनक प्रेमबश फिरा न चहहीं ॥ पुनिकह भूपति बचन सुहाये। फिरिय महीप दूरिबड़ि आये ॥ राउ बहोरि उतरि भयठाढ़े। प्रेमप्रबाह बिलोचन बाढ़े ॥ तब बिदेह बोले करजोरी। बचन सनेहसुधा जनु बोरी ॥ करौं

कवनविधि बिनय सुहाई । महाराज मोहिं दीन्हबड़ाई ॥

रघुराज० ॥ यहि मिथिलापुरकी ठकुराई । आपनिजानब गुनि सेवकाई । नहिं कछु मोर रावरो सिगरो । करबमाफ जो हमसे बिगरो ॥ दशरथ कह्यो सनेह तुम्हारा । यह हमरे शिरमहँ बड़ भारा ॥ कोशल मिथिला उभय तुम्हारा । सेवक सिगरे मोर कुमारा ॥ समधी समधी नेह समाने । भरेकंठ नहिं बचनबखाने ॥ जस तसकै विदेह धरिधीरा । बोलेउ प्रेमगिरा गंभीरा ॥

श्रीतुलसी०दोहा ॥ कोशलपति समधी सजन सनमाने सब भांति । मिलन परस्पर बिनय अति प्रीति न हृदय समाति ॥ चौपाई ॥ मुनिमंडली जनकशिरनावा । आशिरबाद सबहिसन पावा ॥ सादर पुनि भेटेउ जामाता । रूप शील गुणनिधि सबभ्राता ॥

रघुराज० ॥ कह्यो जनकसों प्रभु करजोरी । राखेहु बालमानि सुधि मोरी ॥ प्रेमबिवश नहिं बदत बिदेहू । मूर्त्तिमान जनु राम सनेहू ॥

संग्रह० ॥ घुटिगे कंठ भरेउ दृग बारी । जनक हृदय बड़ धीरज धारी ॥

श्रीतुलसी०चौ० ॥जोरि पंकरुह पाणि सुहाये । बोले बचन प्रेम जनु जाये ॥ राम करौं केहि भांति प्रशंसा । मुनि महेश मानस मन हंसा ॥ करहिं योग योगी जेहि लागी । कोह मोह ममता मद त्यागी ॥ ब्यापक ब्रह्म अलख अबिनाशी । चिदानंद निर्गुण गुणराशी ॥ मन समेत जेहि जानन बानी । तरकि न सकहिं सकल अनुमानी ॥ महिमा निगम नेति करि कहहीं । जोतिहुं काल एक रस रहहीं ॥ दोहा ॥ नयन बिषय मो कहँ भयउ

सो समस्त सुखमूल । सबहि लाभ जगजीव कहँ भये ईश अनुकूल ॥ चौपाई ॥ सबहि भांति मोहिं दीन्ह ब-ड़ाई । निज जनजानि लीन्ह अपनाई ॥ होइ सहस दश शारद शेषा । करहिं कल्प कोटिन भरि लेखा ॥ मोर भाग्य राउर गुण गाथा । कहि न सिराहिं सुनिय रघुनाथा ॥ मैं कछु कहौं एक बल मोरे । तुम रीझहु सनेह सुठि थोरे ॥

रघुराज० ॥ आपन जानि न देव बिसारी । करब चूक सब माफ हमारी ॥

श्रीतुलसी०चौ० ॥ बार बार मांगों करजोरे । मन परिहरै चरण जनि भोरे ॥ सुनि बरबचन प्रेम जनुपोषे । पूरण काम राम परितोषे ॥

रघुराज० ॥ प्रभु कह भूप हमार तुम्हारो । होई नहिं बियोग युग चारो ॥ जानहु सकल भांति ममरीती । काहे करहु बियोग बिभीती ॥ जनक कह्यो हम सरबस पायो । लोक शिरोमणि मोहिं बनायो ॥

श्रीतुलसी०चौ० ॥ करि बर बिनय ससुर सनमाने । पितु कौशिक बशिष्ठ समजाने ॥ बिनती बहुरि भरत सन कीन्ही । मिलि सप्रेम पुनि आशिष दीन्ही ॥ दोहा ॥ मिले लषण रिपुसूदनहिं दीन्ह अशीश महीश । भये परस्पर प्रेमबश फिरि फिरि नावहिं शीश ॥ चौपाई ॥ बारबार करि बिनय बड़ाई । रघुपति चलेसंग सबभाई ॥ जनक गहे कौशिक पद जाई । चरणरेणु शिर नयन लगाई ॥ सुनु मुनीश बर दरशन तोरे । अगम न कछु प्रतीतिमन मोरे ॥ जो सुख सुयश लोकपति चहहीं ।

करत मनोरथ सकुचत अहहीं ॥ सो सुख सुयशसुलभ मोहिं स्वामी । सब बिधि तवदरशन अनुगामी ॥ कीन्ह बिनय पुनि पुनि शिरनाई । फिरेमहीपति आशिषपाई ॥

रघुराज० ॥ मिथिलापुर पुरजन सुखरासी । मिले सकल कोशलपुर बासी ॥ नहिं बहुरत कोउ भवन बहोरे । सिगरे बँधेप्रेम के डोरे ॥ जस तसके सब किये पयाना । करत अवधपति कीरति गाना ॥ दोहा ॥ रामबंधुयुत अवधपति सकल बरातीलोग । जनक सुयश बरणतचले ह्वैगो दुसह बियोग ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ चलीबरात निशान बजाई । मुदित छोट बड़ सब समुदाई ॥

संग्रह० ॥ पृथक पृथक सब सुभग शृँगारा । हय गय रथ पैदलन कतारा ॥ करि दशयान यान असवारी । जयजय करैं नकीब अगारी ॥ नृपके दुहुंदिशि द्वौ रथराजे । बिश्वामित्र बशिष्ठबिराजे ॥

रघुराज०समुच्चयछंद ॥ नरनाहपाछे बनकआछे सजत गजन सवार । रघुबीर भरतहु लषण रिपुहन सहित सब सरदार ॥ मंडित अतिहि मातंगमंडल चलेरघुकुलबीर । पुनिचलीं चारिहु पालकी मिथिलानगरकी भीर ॥ पुनि सभ्य सुहृद महाजनौ बहु वणिक बलित बजार । रथ शकट बँड़वा बैललादे साजु अमित हजार । यहि भांति मिथिलानगरते कोशलनगरकी ओर । गवनी बरात । बतात सुख मिथिलेश यश चहुंओर ॥ यहि भांति दशरथ चक्रवर्ती कियो अवध पयान । याचक अयाचक करत थल थल देत बहु बिधि दान ॥ करते पतोहन छोह क्षण क्षण लेत सुधि क्षितिनाह । नहिं तृषित होहिं न क्षुधित होहिं न श्रमित कोउ मग माह ॥ मिथिलेश के बहु सचिव तहँ सब सैन आगे जात । जे वासके थल रचे प्रथमहिं तिन बतावत जात ॥ जहँ होइ नृपति प्रसन्नता तहँ करै सैन निवास । भरि पान भोजन बस्तु अगणित बने बिबिध अवास ॥ यहि भांति

मिथिला नगरते जब चली अवध बरात। मंत्री सुमंतहि कह्यो भूपति उरन मोदसमात ॥ अब चारि चार तुरंग दीजै अवधपुर पठवाय। बर अवधपुर सब भांति ते उतदेहिं सुभग सजाय ॥ कोशल नगरके प्रजन घर घर देहु खबरि जनाय। आवत बरात बिदेहपुर ते बर बधून लेवाय ॥ तेहि भांति पुनि रनिवास महँ जाहिर करावहु आसु। परिछन तयारी करहिं भारी सहित बिबिध हुलासु ॥ तुम पूंछि लेहु बशिष्ठ से परिछन सुदिन जेहि द्योस। सोइ पत्र माहँ लिखाय भेजौ सहित आनंद होस ॥ सुनि स्वामि शासन सचिव कीन्हो सपदि सकल बिधान। चढ़ि कै तुरंग तुरंत धाये चारि चार प्रधान ॥ कोशल नगर घर घर सुचर बरजाय तिमि रनिवास। दीनेउ जनाय बरात आवत पंथ चारि निवास ॥

संग्रह० ॥ जे मारग के निकट निवासी। सुनि धाये सब परम हुलासी ॥

श्रीतुलसी०चौ० ॥ रामहिं निरखि ग्रामनर नारी। पाय नयन फल होहिं सुखारी ॥

रघुराज० ॥ कियेउ पंथ दिन चारि बसेरा। लहेउ जनक सतकार घनेरा ॥ जनक सचिव कीन्हे सेवकाई। कोउ न बिदेह निवास जनाई ॥

श्रीतुलसी० दोहा ॥ बीच बीच वर बासकरि मग लोगन सुख देत। अवध समीप पुनीत दिन पहुँचीआय जनेत ॥ चौपाई ॥ हनेनिशान पणवबर बाजे। भेरि शंखध्वनि हय गय गाजे ॥ झांझ बीन डिंडिमी सुहाई। सरस राग बाजहिं सहनाई ॥

रघुराज० ॥ योजन भरिमहँ परिगे डेरा। जानि काल्हि दिन परिछनकेरा ॥ जनक सचिव सबजे सँग आये। मांगेबिदा नृपहिं शिरनाये ॥ देनलगे नृप संपति नाना। लिये न मन अनुचित

अनुमाना ॥ करि नृपकी सिगरी सेवकाई । गये जनकपहँ मांगि बिदाई ॥ कह्यो तुरंत सुमंतहि भूपा । परिछन सुदिवस काल्हि अनूपा ॥ दोहा ॥ धेनुधूरिबेलाबिमल होइनगरप्रवेश । दूतभेजि अनवाइयो सब रनिवास निवेश ॥

इतिरामप्रतापचित्रकारबिरचितेश्रीसीतारामबिवाहसंग्रह परमानंदत्रैलोक्यमंगलउन्नीसवांप्रकरणसमाप्तः १८ ॥

श्रीसीतारामोजयति ॥

श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासजीकृत ॥

श्रीमानसरामायणबालकाण्ड ॥

श्रीसीतारामबिवाहसंग्रह ॥

बीसवांप्रकरण ॥

श्री दशरथ महाराज श्रीरामचंद्रजीका बंधुनयुत बिवाहकरके बरात सहित अयोध्यापुरी में आगमन पश्चात् बिबिध नियोगाचार होकर षट्ऋतु बिहार वर्णन ॥

संग्रह०दोहा ॥ पौषसुदी चौदशि दिवस बाहर रहीबरात । काल्ही अवध प्रवेशहै कहत लोग हरषात ॥

रघुराज०चौपाई॥तुरतसुमंतदूतपठवाये।खबरिनगररनिवासजनाये॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ पुरजन आवत अकनि बराता । मुदित सकल पुलकावलि गाता ॥ निज निज सुंदर सदन सवाँरे । हाटबाट चौहट पुरद्वारे ॥ गलीसकल अरगजा सिचाई । जहँ तहँ चौकैं चारु पुराई ॥ बना बजारु न जाय बखाना । तोरन केतु पताक बिताना ॥ सफल पुंगिफल कदलि रसाला । रोपे बकुल कदंब तमाला ॥ लगे सुभग तरु परसत धरणी । मणिमय आल बाल कल करणी ॥ दोहा ॥ बिबिध भांति मंगल कलश गृह गृह रचे सवाँरि । सुरब्रह्मादि सिहाहिं सब रघुबर पुरी निहारि ॥ चौपाई ॥ भूपभवन तेहिअवसर सोहा । रचना देखि मदन मन मोहा ॥ मंगल सगुन मनोहरताई । ऋधि सिधि सुख संपदासुहाई ॥ जनु उछाहसब सहज सुहाये ॥ तनु धरिधरि दशरथगृह आये ॥ देखनहेतु राम बैदेही । कहहु लालसा होइ न केही ॥

रघुराज० ॥ सजत बरातिन सुखित अपारा । निशा सिरानि भयो भिनसारा ॥ प्रात कर्मकरि भोजनकीन्हे । अवध प्रवेशकरन मन दीन्हे ॥

संग्रह० ॥ पौषपूर्णमासीदिन आजू।बेगिसुमंत सजाउसमाजू॥ सुनि नृपबचन सचिव हरषाई । सब बरात महँ खबरि कराई ॥

रघुराज० ॥ दुपहर भीतर भई तयारी । त्वरा अवधपुर देखन भारी ॥ होत प्रभात कुमारन काहीं । कह्यो भूप बेलमौ अब नाहीं ॥ करि मज्जन भोजन अति आसू । सजे कुँवरसब सहित हुलासू ॥ सुभग अंगना रंग पोशाका । जेहि लखि सुर नर मुनि मन छाका ॥ लसै मणीन मौर शुभ शीसे । रतन बिभूषण अग-

गित दीसे ॥ कटि कृपाण धनु कंध सोहाई । युग तूणीर महा छबि छाई ॥ काम बिनिन्दक सकल कुमारा । बरणि कौन कवि पावत पारा ॥ तेहि दिन नृपहु पीत पट धारे । गवन हेत गज भये सवारे ॥ करि बहु बिनय बशिष्ठहु काहीं । भूप चढ़ाये सिंदुर माहीं ॥ दोहा ॥ भये अनंग समान सब कुवँर तुरंग सवार । बजे नगारे निकर तहँ बार बार तेहि बार ॥

कृपानिवास० चौपाई ॥ छत्र चवँर रविमुखी बिराजैं । मुक्ता पुष्प बरषि छबि छाजैं ॥ तिन पाछे आछे बनि आये । राज कुवँर बहु रूप सोहाये ॥

रघुराज० ॥ सजी सैन सुन्दर चतुरंगा । चले बराती भूपति संगा ॥ आगे शुतर सवार अपारा । सोहि रहे गन्धर्व अकारा ॥ तिनके पाछे पैदर जाती । निज निज युत्थ बरन बहु भांती ॥ लसहिं गजन पर बिबिध पताका । मनु तिन महँ अरुभत रवि चाका ॥ बहुनागनपर नौबत बाजे । तिनके गुरु गैयर गनगाजे ॥ तिमि बाजहिं बिशाल करनाला । तूरज भेरी शोर रसाला ॥ पीछेचले पैदरनकेरे । तिनपीछे असवार निबेरे ॥ चढ़ि तुरंग जांगरे अलापै । मनहुं सात सुर सुरपुर थापै ॥ छाय रही ध्वनि बाजन केरी । अंबर अवनि दिशानन घेरी ॥ तहँपरिकर अगणित गति सीछे । चले सवारन के पुनि पीछे ॥ कनकछरी बल्लम बहु सोटे । गवने सुंदर जोटे जोटे ॥ परिचर वृन्दहि मध्य सिधारे । पंचसहस बर राजकुमारे ॥ दोहा ॥ राजकुमारन मध्यमें सोहत चारिकुमार । तिनके पीछे गजचढ़ेउ गवनेउ अवध भुआर ॥ चौपाई ॥ तहँ बशिष्ठ आदिक मुनिराई । चढ़े बितुंडन आनँद छाई ॥ रघुबंशी सरदार अपारा । सजे मतंगन भये सवारा ॥ तिनकेपीछे चली पालकी । चारिबधुनकी रतनजालकी ॥ चली जनकपुर सैन अपारा । दासी दास अनेक उदारा ॥ बहलशकट पालकी महाफा । परे जरीके जिनपरसाफा ॥ तिनकेपीछे चली बजारा । धनिक बणिक बनि बनक अपारा । कहहिं परस्पर सक-

ल बराती । देखौ कोशलपुरी देखाती ॥ हल्लापरयो अवधपुर जाई । अब बरात पुरनेरे आई ॥ आतुर सजे अवधपुर बासी । दूलह दुलहिनि देखन आसी ॥ चले लेन आशुहि अगवानी । सकल पुण्यफल आपनजानी ॥ खरभर परयो नगर महँ भारी । कोउ गवने कोउ करत तयारी ॥ जानि अर्ध योजन रजधानी । नृप सुमंत सों गिरा बखानी ॥ दोहा ॥ चलैं यहांते अब सचिव दुलहिनि दूलहसंग । बाजी पीछे पालकी बजत बाज बहु रंग ॥ चौपाई ॥ इततें कौशल्यादिकरानी । बोलिसुआसिनिअतिहरषानी॥

कृपानिवास० ॥ प्रमदा मुदा बरात आगमन । सजहिं सुमंगल साज प्रेम सन ॥

रघुराज० ॥ पृथक पृथक सिगरी महरानी । पठईं कलश चलीं अगवानी ॥ कलश शीश धरि गावत नारी । भूषण बसन सुरंग सवाँरी ॥

श्रीतुलसी०चौ० ॥ यूथ यूथ मिलि चलीं सुआसिनि । निज छबि निदरहिं मदन बिलासिनि ॥ सकलसुमंगल सजी आरती । गावहिं जनु बहुभेष भारती ॥

रघुराज०॥हरददूबदधि तन्दुल थारा । शिरधरि चलीचारुशृंगारा॥ करहिं भामिनी मंगल गाना । बाजा बजहिं अनेक बिधाना ॥ राजत रजत कनककलशावलि । तिनमहँ दिपति दिव्य दीपा-वलि ॥ प्रमुदित पुरजन वृन्दन वृन्दा । आगूलेन चले सानन्दा ॥ कोउ मतंग कोउ चढ़े तुरंगा । चले अनिक कोउ चढ़े सतंगा ॥ वृहत वृषभ बहलन महँ नांधे । चढ़े सुखासन कोउ जन कांधे ॥ कोउ पैदर आये नर नारी । बाल वृद्ध उमहे सुखभारी ॥ अवध प्रजा निरखन अभिलाषन । आये अगवानी कहँ लाखन ॥ इत बरात उत पुरजन रेला । मानहुं तजे सिंधु युगबेला ॥ आवत भिले अवधपुर बासी । दूलह दुलहिनि देखन आसी ॥ दोहा ॥ यद्यपि रह्यो मैदान बहु कसमस परयो अघात । चलीं अवधपुर

पंथ तब मंदहि मंद बरात ॥ मिलहिं बरातिन पौरजन प्रथमहिं यही बताय । दुलहिनि दूलह दुहुँनको दीजै दुतहि देखाय ॥ चौपाई ॥ कहहिं कहां सुंदरि सुकुमारी । मिथिलापुर की राजकुमारी ॥ कहँ रघुनायक रूपसलोना । कौन समय परछन अब होना ॥ भरत लषण रिपुहन कहँप्यारे । धौं तुरंग धौं नाग सवाँरे ॥ कहँ नरेश कोशलाधिराजा । जाहि न तुलत आज सुरराजा ॥ महा डोल दुलहिनिके चारी । देहु बताय होउउपकारी ॥ हरषि बराती हाथ उठाई । दुलहिनि दूलह देत बताई ॥ पाछे धाइ मिलें जे आई । ते पूंछहिं देखे रघुराई ॥ नगरनारि नर नागर नीके । अभिलाषी देखन सियपीके ॥ झुकहिं झिलहिं झझकहिं झपि झाकहिं । तरल तमकतिरछे तुकिताकहिं ॥ लुकहिं लजहिं ललकहिं लरखाहीं । चितवहिं चकित चुभे चहुँ घाहीं ॥ जिनहिं प्रान प्रिय जानकि जानी । पौर दशा किमि जायबखानी ॥ भयो अवध आनन्द अपारा । कसमस परत करत संचारा ॥ दोहा ॥ नारिवृंद कलशावली कौशल्या की आय । खरी भई तहँ रामके आगे अतिहिसोहाय ॥ चौपाई ॥ पुनि कैकेयीकेरि पठाई । कलशावली सोहावनि आई ॥ भेजी सुभग सुमित्रा केरी । आईकलशावली घनेरी ॥ औरहु रानिन केरि पठाई । कलशावली समीपहि आई ॥ कामिनि कनककुंभ धरिकेती । गावतमंगलगीत सचेती ॥ पुरवासिनी अनेकन आई । संग मंगला मुखी सुहाई ॥ गावहिं ब्याह गीत सुखलाई । महा मनोहर धुनि रहि छाई ॥ बाजन बजहिं अनेकन भांती । नाचहिं बारबधू सुखमाती ॥ नचहिं परिचरी पट पहराई । अधिक अधिक आनँद उमगाई ॥ कौशल्यादि तीन महरानी । तिनकी पठई सखी सयानी ॥ सुंदर दधि अक्षत को टीको । दीन्ह्यो राम भालमहँ नीको ॥ मनु असुरनतें आशुरिसाई । बसेउशुक्र शशिमंडल आई ॥ लषण भरत रिपुहनके भाला । दधिटीको दीन्हो सब बाला ॥ दोहा ॥ पुनि दुलहिनि पालकि पटन नेसुक नारि उघारि । दधिटिकुली देती

भई मंजुल पाणि पसारि ॥ चौपाई ॥ देटिकुली गावत गजगामि नि। आगे चलींभरी सुखभामिनि॥ आईं अगणित पुरजन नारी। करहिंनिछावरि मणि गण वारी॥दुलहिनि दूलहको नजिकाई। लेतीं दोउकर रोग बलाई॥ प्रविशे पुरजन दलमहँ जाई। राम चरण परसहिं सुख छाई ॥ इतरजाति सब करहिं प्रणामा। आशिषदेहिं बिप्र तप धामा ॥ तहँ कौतुक कीन्हो भगवंता। मिलेउ प्रजन करिरूप अनंता॥ जान्योसबैमिलेहमकाहीं। परखो जनाय भेदकोहुनाहीं॥

कृपानिवास० ॥ मोदकुलाहल नगर अपारा। चढ़ींअटा देखें नृपदारा॥ आगम जनु अरुणोदय सुखसे। जननी मन पंकजबत बिकसे॥ सकल मनोरथ भ्रमर जगेजनु। परमानंद सुगंध पगे मनु ॥ मंगलगीत उचारति नारी। मानहु प्रात शकुन ध्वनि प्यारी ॥ बिगत बिरहतम सज्जनसुचहीं। जगेभाग्य दुखआलस मुचहीं॥ सुकृत जनु बंदीजन गावैं। भोर नौबतें नेह बजावैं॥

संग्रह० ॥ रामदिवाकर आगमजाने। चक्रवाक जनु मनहुलसाने॥ देखि बरात परम हरषानी। उतरीं अटाते कारजजानी॥

श्रीतुलसी०चौपाई॥ भूपति भवन कुलाहलहोई। जाइनबरणि समयसुख सोई॥ कौशल्यादि राम महतारी। प्रेम बिवश तनदशा बिसारी॥दोहा॥ दियेदान बिप्रन बिपुल पूजि गणेश पुरारि। प्रमुदित परमदरिद्र जनु पाइपदारथ चारि॥ चौपाई ॥ प्रेम प्रमोद बिवश सबमाता। चलहिं न चरण शिथिल सब गाता॥ रामदरशहित सब अनुरागीं। परिछनसाज सजन सब लागीं॥ बिबिध बिधान बाजने बाजे। मंगलमुदित सुमित्रासाजे॥ हरद दूब दधि पल्लव फूला। पान पुंगिफल मंगल मूला॥ अक्षत अंकुर रोचन लाजा। मंजुल मंजरि

तुलसि बिराजा ॥ छुहे पुरट घट सहज सुहाये । मदन शकुन जनु नीड़ बनाये ॥ शकुनसुगन्ध न जाहिं बखानी । मंगल कलश सजहिं सब रानी ॥ रची आरती बिबिध बिधाना । मुदितकरहिं कल मंगलगाना ॥ दोहा ॥ कनकथार भरि मंगलन्ह करकमलनलियेमातु ॥ चलीं मुदित परिछन करन पुलक पल्लवित गातु ॥ चौपाई ॥ धूप धूम नभ मेचक भयऊ । सावन घनघमंड जनुछयऊ ॥ सुरतरु सुमनमाल सुरबरषहिं । मनहुँ बलाक अवलिमन करषहिं॥ मंजुलमणिमय बन्दनवारे । मनहुं पाकरिपु चापसवाँरे ॥ प्रगटहिं दुरहिं अटनपर भामिनि । चारुचपल जनुदमकहिं दामिनि ॥ दुन्दुभि ध्वनिघनगरजहिं घोरा ।याचक चातक दादुरमोरा ॥ सुर सुगंध बहु बरषहिं बारी । सुखीसकल शशिपुर नरनारी॥

रघुराज० ॥ मंद मंद तब चली बराता । पुरजन करत परस्पर बाता ॥ हमहिंमिले रघुनन्दनआई । पूंछीबिबिधभांति कुशलाई॥ को जग राम समान सनेही । कहहु प्राणप्रिय आज न केहीं ॥ पुनि पुरजन नरनाथ जोहारे । कृपादृष्टि नृप सबन निहारे ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ समयजानि गुरु आयसु दीन्हा । पुर प्रवेश रघुकुलमणि कीन्हा ॥ सुमिरि शंभु गिरिजागण राजा । मुदित महीपति सहित समाजा ॥ दोहा ॥ होहिं शकुन बरषहिं सुमन सुर दुंदुभी बजाइ ।बिबुधबधू नाचहिं मुदित मंजुल मंगल गाइ ॥ चौपाई ॥ मागध सूत बंदि नट नागर । गावहिंयश तिहुंलोक उजागर ॥ जय ध्वनि बिमल बेद बरबानी । दशदिशि सुनिय सुमंगल

सानी ॥ विपुल बाजने बाजनलागे। नभसुर नगरलोग अनुरागे ॥ बने बराती बरणि न जाहीं। महामुदित मन सुख न समाहीं ॥

कृपानिवास० ॥ सुर बिमान संकुल नभछाये। जयध्वनिकरि पुष्पनि झरिलाये ॥

रघुराज० ॥ मच्यो कोलाहल नगरमँझारी। देखन झुके झुंड नर नारी ॥ झर झर बेत्रपाणि प्रतिहारा। भरभररोंकत मनुज अपारा ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ पुरबासिन तब राउ जोहारे। देखत रामहि भये सुखारे ॥ करहिं निछावरि मणिगण चीरा। बारि बिलोचन पुलक शरीरा ॥

कविकेशवदास०सुंदरीछंद ॥ पुरतिय मंदिरऊपर सोहति। शंकर शैलचढ़ी मनमोहति ॥ पद्मिनिऊपर पद्मिनि मानहुं। रूपनि ऊपर दीपति जानहुं ॥ कीरतिसीयौ संयुत सोहति। श्रीपतिकी जनु मूरति मोहति ॥ ऊपर मेर मनोमनरोचन। स्वर्णलता जनु लोचति लोचन ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ आरति करहिं मुदित पुरनारी। हरषहिं निरखि कुँवर बरचारी ॥

रघुराज० ॥गावहिंमंगलमंजुलगीता॥रामसीय लैनामपुनीता ॥

कविकेशवदास० तोटकछंद ॥ बरषैं कुसुमावलि एक घनी। शुभ शोभित कामलतासी बनी ॥ बरषैं फल फूलन लायककी। जनु है तरुणी रतिनायक की ॥

संग्रह०चौपाई ॥ दुलहीनिन देखन चित चाई। परम प्रमोदित निकट सिधाई ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ शिविका सुभग वहार उघारी। देखि दुलहिनिन होहिं सुखारी ॥

कृपानिवास० ॥ निरखि जानकी छबि चमकाई । कुँवर रूप अभिमान सकाई ॥

श्रीतुलसी०दोहा ॥ इहि बिधि सबहिन देत सुख आये राज दुवार । मुदित मातु परिछन करहिं बधुन समेत कुमार ॥

संग्रह०चौपाई ॥ साधु सुसज्जन सुनो सुजाना । परिछन सुंदर सहित बिधाना ॥ समयजानि परिछन नृपराई । कह्यो सुमंतहि निकट बुलाई ॥ बृहद बिमान आशु इत लावो । दूलह दुलहीनिन बैठावो ॥

रघुराज० ॥ तहाँ तुरंत सुमंत सिधारा । बिमल बिमान बिशद बिस्तारा ॥ बाहक दशषट ताहि उठाये । आशु सुमंत संग महँ लाये ॥ मंडप कनकजटित रतनाली । बनी चहूँकित हीरन जाली ॥ चातक कीर कपोतहु मोरा । निर्मित रतन करत कलशोरा ॥ रतन वृक्ष बहुरंग सोहाये । माणिक फल मुकुता सुमभाये ॥ मुक्तन झालरि झूलतझापी । रतन कलश रवि सरिस प्रतापी ॥ भिन्न भिन्न सुन्दर अस्थाना । मनहुं मदन निज कर निरमाना ॥ तहँ सुमन्त रामहिं युतभाई । ल्याय बिमानहिं दिये चढ़ाई ॥ पुनि चारिहु पालकी बोलाई । दई बिमानहिं निकट धराई ॥ वृद्ध वृद्ध सजनी जुरि आई । पुरषनको निज हाथ हटाई ॥ पुनि दुलहिनि पालकी उतारी । दई चढ़ाय बिमानहिं भारी ॥ सुन्दर दुलहिनि दूलहचारी । सखी सुथल निज निज बैठारी ॥ दोहा ॥ रतन खचित झालर मुकुत दीन्हें परदन डारि । बोले बिबिध नकीब तब को सुख कहै उचारि ॥ चौपाई ॥ नृप शासन लहि उठ्यो बिमाना । बाजनबजत बिबिध बिधिनाना ॥ तेहि बिमान के चारिहुं ओरा । सखि मण्डल सोहत नहिं थोरा ॥ चल्यो राजमंदिर की ओरा । फरक फरक माच्यो मग शोरा ॥ तेहि बिमान पाछे छबिछाजा । सिंधुर चढ़े

लसत महराजा॥ आगेकरि सियराम बिमाना। परिछन लखन भूप हुलसाना॥रामसरिससुत सियपतोहू। कहैको दशरथसुख संदोहू॥ दोहा॥आईसुरभीरज समय कियोबशिष्ठ उचार।पहुंच्यो बिमलबिमान तब अंतहपुरकेद्वार॥ चौपाई॥ द्वारचौक अंतहपुरके-री। अति बिस्तार अनूप निवेरी॥दियो चौकते पुरुष हटाई।नारि वृंद सोहत तहँआई॥ मध्यचौकमहं धरयो विमानू। उयो सांझ बेला जनु भानू॥ छरी वेत्र बल्लमकरधारिनि। कौशल्याशासन दिय नारिनि॥ फरककरहु सबनारि उताला। आयो अब परिछनको काला॥ प्रतीहारिनी लगीं हटावन। झुकहिं नारि देखन मनभावन॥ पुनि कौशल्या सखी सयानी। बोलि कही मंजुल असबानी॥ खबरि जनावहु भूपहिजाई। परिछन हित आवहिं अतुराई॥ गई सखी भूपतिमणि पाहीं। जोरि पाणि बोली तिनकाहीं॥ कौशल्या बिनती अस कीन्ही। यह संपति अनुपम बिधिदीन्ही॥ आवहिं सुखलूटहिं तेहिकेरे। रूपानयन नारायणहेरे॥सखीबिचनसुनि अवधनरेशा। उतरिचलेउ तजि दियो गजेशा॥ दोहा॥ महिषीमंडल महिपमणि सोहत सुभग निशंक। मनु तारामंडल विमल उयउ नवीनमयंक॥ चौपाई॥ त्रिशतसाठि अरु त्रयमहरानी। लावनसखी सजींछबिखानी॥ बजें मनोहर बाज सोहावन। नाचहिं सखी मोद उपजावन॥ सजीं आरती थारहजारन। झोलीभरी रतन सखिवारन॥ सहित पट्टरानिन कुलदीपा। गये बिमानसमीप महीपा॥ पढ़हिं स्वस्त्ययन विप्रननारी। रानिन विधि दरशावहिं सारी॥ जाय बिमान निकट महराजा। संयुत रानिन रुचिरसमाजा॥ गुरु बशिष्ठकहँ लिये बुलाई। आगे ठाढ़किये शिरनाई॥ गुरुपतिनी अरुंधती आई। मनहुं पतिव्रत मूर्त्ति सोहाई॥ कौशल्या केकयी उचारी। गुरुपत्नी पटदेहुउघारी॥ तहँ अरुंधती अतिसुखछाई। निजकरसों पटदियो उठाई॥ परंदीखि अनुपम छबिधामा। दुलहिनि दूलह सीतारामा॥ परयोचौंध सबके चखमाहीं। मनु

चपला चमकी चहुँधाहीं ॥ दोहा ॥ देखिपरे तब राम सिय सुछबि छटाक्षितिछाय । मनहुं सूरशशि एकसंग कढ़े जलदबिलगाय ॥ चौपाई ॥ गुरुआइनि पद प्रभु शिरनाये । लाज बिवश पुनि शीशनवाये ॥ पुनि क्रमसों अरुंधती जाई । तीनिहुंके पट दिये उठाई ॥ दूलह दुलहिनि देखनहेतू । झुकींनारि करि बहु बिधि नेतू ॥ कौशल्यादि तीनि पटरानी । चढ़ीं बिमान लखन हुलसानी ॥ कौशलेशकहँ लिये बोलाई । परिछनकरहु कही मुसकाई ॥ गुरुआगेकरि गयेमहीपा । ठाढ़े पूत पतोहसमीपा ॥ गुरु पितुमातहि लखि रघुराई । नायशीश पुनि रहे लजाई ॥ गांठिजोरि तीनिहुं पटरानी । खड़ेउ भूप गुरु आयसु मानी ॥ मणिन जटित बरकंचनथारी । कौशल्या अनेकर धारी ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ करहिं आरती बारहिंबारा । प्रेम प्रमोद कहै को पारा ॥ भूषण मणि पट नानाजाती । करहिं निछावरि अगणित भांती ॥ बधुनसमेत देखिसुत चारी । परमानंदमगन महतारी ॥ पुनि पुनि सियरामहिं छबि देखी । मुदित सकल जगजीवन लेखी ॥ सखीसीय मुख पुनि पुनि चाहीं । गानकरहिं निज सुकृतसराहीं ॥

रघुराज० ॥ खड़ी भूपयुत तहँ कौशिल्या । जनु गौतम युत लसति अहिल्या ॥ दशरथ कौशिल्याकी आजू । बरणिसकै को भागदराजू ॥

श्रीतुलसी० ॥ बरषहिं सुमन क्षणहिं क्षणदेवा । नाचहिं गावहिं लावहिं सेवा ॥ देखिमनोहर चारिउ जोरी । शारद उपमा सकल ढँढोरी ॥ देतनबनै निपटलघु लागी । यकटक रहीं रूप अनुरागी ॥ दोहा ॥ करहिं निछावरि आरती उमँगि उमँगि अनुराग । बर दुलहिनि अनुरूप लखि सखी सराहहिं भाग ॥

रघुराज० ॥ सखी सयानी निकट लखि रामसीय छबिदेखि । बोली कौशिल्या हुलसि बिभ्रमभयो बिशेखि ॥ पद ॥ देखोतोसखीरी मेरो बारो मिथिलाते आयो । धौं मोहींको होतमहाभ्रम धौंसबको अस रूप जनायो ॥ जनक कुमारी लागतकारी मोरकिशोर गोर छबिछायो । मिथिलाकी नटखटी नागरी जादूपढ़ि टोना डरवायो ॥ हँसिबोली सजनी रानी सों स्वामिनि मोहिं सत्य अस भायो । राम सुछबि सियश्यामा लागत सियछबि रामगोर दरशायो ॥ करौ भागवंतिन परिछन अब असमुख त्रिभुवन कोउ नहिं पायो । दीन सुछबि सबगुण समेटिकै बिधि रघुराज कुँवर जनमायो ॥ दोहा ॥ कह्यो बशिष्ठहि कौशिला लै अरुंधतीसंग । प्रथम करहु परिछन तुमहिंकरि बिधान श्रुतिसंग ॥ पद ॥ गुरु अभिमतसुनि अति हुलसान्यो । लै अरुंधती गांठिजोरिकै धनि धनि भाग आपनी मान्यो ॥ रतनखचित लै कनकथार करदधि अक्षत हरदी द्रुत लान्यो । दुलहिनि दूलह भाल बिशालहिं दै टिकुली उरआनँद आन्यो ॥ लगेउतारन आरती दंपतियकटक निरखि जन्म धनि जान्यो । श्रीरघुराज काजकरि मुनिवर आजु सुकृत फल मन अनुमान्यो ॥ दोहा ॥ कह्योभूपसों गुरु बचन गांठिजोरि अब आय । परिछनकरहु भुआलमणि बेद बिधान बनाय ॥ पद ॥ होन लग्यो परिछन तेहिकाला । करि कर थार भुआल रानियुत लगेउ उतारन आरति हाला ॥ छकि छकि पूत पतोह बदन लखि बार बार नृप भयेउ निहाला । कौशिल्या केकयी सुमित्रा लैलीन्हीं आरती उताला ॥ लगी आरती उमँगि उतारन दुलहिनि दूलहको दैमाला । पूत पतोहुनको मुखदेखत जननी आनँद लह्यो बिशाला ॥ श्रीरघुराज की लेत बलैयाजन्म जन्म को मिटयो कसाला । लई छुड़ाय आरती निजकर लगे उतारन पुनि महिपाला ॥ पद ॥ पुनि रानी आरती उतारी । कौशिल्या केकयी सुमित्रा बार बार छबि छकैं निहारी ॥ बहुरि उतारति मुशल मथानी दीप उतारि फोरि पुनि डारी ।

बार बार पुनि सलिल उतारैं लोक मंत्र बहुभांति उचारी ॥ देखहिं पूत पतोहुनको मुख क्षण क्षण मणिगण निजकर वारी। यहि बिधि चारिहु कुवँरन को करि परिछन रानी लहि सुख भारी ॥ चारिहु दुलहिनि दूलह को तब लिय बिमानते आशु उतारी । होन लगी निउछावर तेहिक्षण मणि गण पट भूषण जरतारी ॥ राईलोन उतारि सखीजन पढ़ि मंगल मनु षावक- डारी । गावहिंमंगल शोरमनोहर श्रीरघुराजजाहिंबलिहारी ॥

श्रीतुलसी०पद ॥ मुदित मन आरतीकरैं माता । कनक बसन मणि वारिवारि बर पुलकि प्रफुल्लित गाता ॥ पालागनि दुलहिनिहिं सिखावति सरिस सासु सत साता । देहिं अशीश ते बरिस कोटि लगि अचलहोउ अहिवाता ॥ रामसीय छबि देखि युवति जन करहिं परस्पर बाता । अब जान्यो सांचेहु सुनहुसखि कोबिद बड़ो बिधाता ॥ मंगल गान निशान नगर नभ आनँद कह्यो न जाता । चिरजीवहु अवधेश सुवन सब तुलसिदास सुखदाता ॥ दोहा ॥ निगम नीति कुलरीति करि अर्घ पांवड़े देत । बधुन सहित सुत परिछि सब चलीं लेवाय निकेत ॥

रघुराज०पद ॥ दुलहिन दूलह चलीं लेवाई । सकुचति सिय सासुनको निरखति चलति मंद पद पद्म उठाई ॥ पग आगे सखि धरहिं ठीक री सिय पग गहि तेहि देहिं छुआई । कहहिं रामको लाल उठावहु प्रभुजननी लखि रहै लजाई ॥ पुनि प्रभु को करकमल पकरि अलिलेहिं ठीकरी हठिउठवाई । यहिबिधि हास विलास विविध विधि करहिं सखी कौतुकदरशाई ॥ गावत बाज बजावत बहुबिधि नाचहिं भाउ बताय बताई । बैठाई रघु- राज बधूवर रंगनाथके मंदिर ल्याई १ करवावतीं बर बधुन कर

श्रीरंग पूजन बिधि सहित। सिय रामको सिखवहिं सखी इनकी कृपा मेटति अहित॥ करिछोह पूत पतोहुको बहुदान करवावहिं सुखित। सब रंगनाथ मनावतीं निज ओढ़ि अंचल चितचहित॥ सिय राम पूतपतोहु मिलहिं अनेक जन मन जनैजित। युग युग जियैं जोरी सु चारिहु लखैं हम यहि भांति नित॥ यहि विधि मनावैं पुनि खेलावैं द्यूत दोहुन मोदमित। कोउ कहैं मोर पतोह जीती कहैं कोउ मम लाल जित॥ रनिवास हास बिलास यहि बिधि होत सखिगण अति हँसित। शिरनीचकरि दूलह दुलहिनी बैठि गुरुजनको लजित॥ यहिभांति लोकाचार करि सब बरबधुन लैगई तित। जहँ सभा मंदिर बन्यो सुंदर बिशद मणिगण ते जटित॥ तहँमातु कौशल्या सुमित्रा केकयी कछु है श्रमित। बैठाय पूत पतोह आगे सुछबि लखि सबभइ चकित॥ कुलनारि सब रघुबंशकी देखहिं दुलहिनी आइ इत। रघुराज अंगनमें बिराजत देव जय जय आलपित॥

संग्रह०चौपाई॥ दो मुनि सँगलैके महराजा। आये जहँरहि रानि समाजा॥ भूप ऋषिन लखि उठि सबरानी। बैठाये सिंहासन आनी॥ कह्यो बशिष्ठ रानि सुनि लीजे। बर दुलहिनि को पूजनकीजै॥ सुनि गुरुबचन रानि सुख पाई। कनकासन नवीन मँगवाई॥

श्रीतुलसी०॥ चारिसिंहासन सहज सुहाये। जनुमनोज निज हाथ बनाये॥ तिनपर कुँअर कुँवरि बैठारे। सादर पायँ पुनीत पखारे॥ धूप दीप नैवेद्य वेदबिधि। पूजे बर दुलहिनि मंगल निधि॥बारहिं बार आरतीकरहीं।ब्यजन चारु चामर शिर ढरहीं॥ बस्तुअनेक निछावरिहोहीं। भरीप्रमोद मातु सबसोहीं॥ पावा परमतत्त्व जनुयोगी। अमृत लही जनुसंतत रोगी॥ जन्म रंक जनु पारस

पावा । अंधहि लोचन लाभ सुहावा ॥ मूक बदन जनु-
शारद छाई । मानहुँ समर शूर जयपाई ॥ दोहा ॥ यहि
सुखते शतकोटिगुण पावहिं मातु अनंद । भाइनसहित
ब्याहि घर आये रघुकुलचंद ॥ लोकरीति जननी करहिं
बर दुलहिनि सकुचाहिं । मोद विनोद बिलोकिबड़ राम
मनहिं मुसुकाहिं ॥ चौपाई॥ देवपितरपूजेबिधिनीके । पूजे
सकलबासनाजीके॥ सबहिंबंदि मांगहिं बरदाना । भा-
इनसहित रामकल्याना॥ अंतरहित सुर आशिष देहीं ।
मुदित मातु अंचलभरि लेहीं ॥

रघुराज० ॥ तेहिअवसर अवास आनंदा । केहिबिधि बरणौं मैं
मतिमंदा ॥ रत्नदीप फैली उजियारी । नाचिरहीं सनमुखसुर
नारी ॥ गुरूबशिष्ठ सहितमहराजा । गेबाहेर जहँ भूपसमाजा ॥
चढ़िसिंधुर मंदिर तहँ गवने । हिमगिरिसम उतंग जे भवने ॥
पुरशोभा निरखहिं महिपाला । नहिंअमरावति कौनेहुकाला ॥
लसहिं कनकके तुंगपताके । मनहु भवन त्रिभुवनताराके ॥ क-
दली क्रमुक खंभ प्रतिद्वारा । कनकपत्र फल फूलअपारा ॥ हेम
कुंभ दीपावलि सोही । खड़ेनारिनर सुखसंदोही ॥ वृन्दवृन्दबर
बन्दनवारा । चामीकरके चारु केंवारा ॥ धवलधाम हिमवान
समाना । अटाअनेकन छटाअमाना ॥ दीपावलि सिगरेपुरमा-
हीं । खैरभैर थलथल चहुंघाहीं ॥ पुरजन अति आनंदरससाने।
बित्तलुटावत नाहिं अघाने ॥ आयआय नरनाथ जोहारैं । देहिं
नजरि बहु मणिगणवारैं ॥ बरणैकौन अवधपुरशोभा । सुर नर
मुनि मानसलखि लोभा ॥ दोहा ॥ यहिबिधि निरखत नगर
छबि सहितसमाज नरेश । कियो राजमंदिरसुखद समयबिचा-
रि प्रवेश ॥ चौपाई ॥ बैठेउ सभाभवनमहँ जाई । राज समाज
सहित छबिछाई ॥

संग्रह०॥अवधनरेन्द्र सुमंत हँकारे। परममनोहरबचनउचारे॥

रघुराज० ॥ कह्योजो मिथिला ते जनआये। दुहितन के सँग जनक पठाये॥ सहित सकल सोपत सतकारा। बास करावहु बिशद अगारा॥ जाय सुमंत किये तेहि भांती। मिथिलापुर-बासिन सोइ राती॥ बसे सकल सुख सहित अगारा। वरणत दशरथ कृत व्यवहारा॥

श्रीतुलसी० ॥ भूपति बोलि बरातिनलीन्हे। यान बसन मणि भूषण दीन्हे॥ आयसु पाइ राखि उर रामहिं। मुदित गयेसब निजनिज धामहिं॥ पुरनरनारि सकल पहिराये। घरघर बाजनलाग बधाये॥ याचक जन याचहिं जोइ जोई। प्रमुदित राउ देहिं सोइ सोई॥ सेवकसकल बजनियांनाना। पूरण कीन्ह दान सनमाना॥ दोहा॥ देहिं अशीष जोहारिसब गावहिं गुणगण गाथ। तब गुरु भूसुर सहितगृह गवनकीन्ह नरनाथ॥ चौपाई॥ जो बशिष्ठ अनुशासन दीन्हा। लोक वेदविधि सादरकीन्हा॥ भूसुर भीर देखि सबरानी। सादर उठीं भाग्य बड़ जानी॥ पायँ पखारि सबहि अन्हवाये। पूजि भली बिधि भूप ज्येंवाये॥ आदर दान प्रेम परि-पोषे। देत अशीष चले मनतोषे॥ बहुबिधि कीन्ह गाधिसुत पूजा। नाथ मोहिंसम धन्य न दूजा॥ कीन्हि प्रशंसा भूपति भूरी। रानिनसहित लीन्ह पगधूरी॥

अग्रदासपद० ॥ ऋषिकी लेत बलैया रानी। जिनके संग सद्य फलपाये अद्भुत दुलहिनि आनी॥ सूरजबंश बिषे हम सुनसखी ऐसी सुनी न देखी। रूप शील शोभा गुणसागर सबहि सब बर बधू बिशेखी॥ मुनिकी कृपा जनकसे समधी भलभलाभ मैं पा-

यो । कर पुट जोरि कहत कौशल्या भयो मनोरथ भायो ॥ विद्या निपुण किये सुत मेरे वरणौं केतिक बाता । कौशिक मुनिपर मन धनवारत अग्रदास बलिजाता ॥

श्रीतुलसी० चौपाई ॥ भीतर भवन दीन्हँ बरबासू । मन जोगवत सब नृप रनिवासू ॥ पूजे गुरुपद कमल बहोरी । कीन्ह विनय उर प्रीति न थोरी ॥ दोहा ॥ बधुन समेत कुमार सब रानिन सहित महीश । पुनि पुनि बंदत गुरुचरण देत अशीश मुनीश ॥ चौपाई ॥ विनय कीन्ह उर अतिअनुरागे । सुत संपदा राखि सब आगे ॥ नेगमांगि मुनिनायक लीन्हा । आशिर्बाद बहुत विधि दीन्हा ॥ उरधरि रामहिं सीय समेता । हरषि कीन्ह गुरु गमन निकेता ॥ विप्रबधू सब भूप बोलाये । चीर चारु भूषण पहिराये ॥ बहुरि बुलाय सुआसिनि लीन्ही । रुचि बिचारि पहिरावनि दीन्ही ॥ नेगी नेग जोग सब लेहीं । रुचि अनुरूप भूपमणि देहीं ॥ प्रिय पाहुने पूज्य जे जाने । भूपति भली भांति सनमाने ॥ देव देखि रघुबीर बिवाहू । बर्षि प्रसून प्रशंसि उछाहू ॥ दोहा ॥ चले निशान बजाय सुर निज निज पुर सुखपाय । कहत परस्पर राम यश प्रेम न हृदय समाय ॥ चौपाई ॥ सब विधि सबहि समादि नरनाहू । रहा हृदय भरिपूरि उछाहू ॥ जहँ रनिवास तहां पगुधारे । सहित बधूटिन कुवँर निहारे ॥ लिये गोदकरि मोद समेता । को कहिसकै भयो सुखजेता ॥ बधू सप्रेम गोद बैठारी । बारबार हियहर्षि दुलारी ॥ देखि समाज मुदित रनि-

वासू। सबके उर आनँद किय बासू॥ कह्यउ भूप जिमि भयउ बिवाहू। सुनि सुनि हर्ष होहिं सब काहू॥

रघुराज० ॥ कोउ नहिं जनक सरिस सतकारी। मैं लीन्हेउँ सब भुवन निहारी॥ गये बरात मनुज बहु लाषा। को अस जेहि न पूरि अभिलाषा॥

श्रीतुलसी०चोपाई ॥ जनकराज गुण शील बड़ाई। प्रीति रीति संपदा सुहाई॥ बहुविधि भूपभाट जिमि बरणी। रानी सब प्रमुदित सुनि करणी॥

रघुराज० ॥ सुनि सुनि अति हरषहिं सबरानी। कौशल्या बोली तबबानी॥ सुनहु भूप ममपति अकुलानी। जियसंदेह न जाय बखानी॥ डरतरहे गवनत अँधियारे। कुँवर कौन विधि निशिचर मारे॥ कथत उठावत भाजन हाथा। हरधनु किमि टोरयो रघुनाथा॥ बिहँसि भूप बोलेउ तब बानी। औरहु अचरज सुनुमहारानी॥ गौतमको आश्रम रहसूना। कौशिकगे लेवाय दोउ सूना॥ प्रविशत आश्रम गौतमनारी। नाम अहिल्या जासु उचारी॥ रही पाप बश अंतरध्याना। प्रगट भई पूजेउ विधिनाना॥ यह बशिष्ठ कौशिक प्रभुताई। और हेत नहिं परै जनाई॥

संग्रह० ॥ असकहि उठे प्रेम उरभारा। भई बिलंब करनि ज्यो नारा॥ कुवँरनको भूपति सँगलीने। भोजन भवनगये सुखभीने॥

श्रीतुलसी०दोहा ॥ सुतन समेत नहाइनृप बोलि विप्र गुरु ज्ञाति। भोजनकीन्ह अनेक विधि घरी पांच गइ राति॥

रघुराज०चोपाई ॥ रानी पुत्र बधू लै आई। निज निजसंग सकल बैठाई॥गावहिं रसिया उर सब नारी। बजै मृदंग बीन मनहारी॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ मंगलगान करहिं बरभामिनि । भइ सुखमूल मनोहर यामिनि ॥

रघुराज० ॥ सिय करसों भूपहिं परुसावैं । श्वशुर हाथ पुनि नेग देवावैं ॥ सकुचहिं दुलहिन दूलह देखी । भोजन करैं न अशन विशेखी ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ अचै पान सब काहुन पाये । स्रग सुगंध भूषित छबिछाये ॥ रामहिंदेखि रजायसु पाई । निज निज भवनचले शिरनाई ॥

संग्रह० ॥ चले मुदित दशरथ महराजा । सुख देखनि जहँ रची समाजा ॥

रघुराज० ॥ बैठे पुरट पीढ़ महँ जाई । तीनिहुं रानिन लिये बोलाई ॥ कह्यो बदनदेखनकोचारा । करवावो लागै नहिंबारा ॥ दोहा ॥ राजकुमारिन चारिहू रानी आशु लेवाय । बैठाई भूपति निकट कुल तिय वृद्ध बोलाय ॥

कविदुर्गादत्त०तिवारी कवित्त ॥ सासुकीलेवाई सियआई अँगनाई बीच ताक्षण मृगाक्षिणि के हेरे हियो हरिगो । उलही दुकूलन ते दुलहीके अंगओप चंचला चमंक चौंध लोचनमें भरिगो ॥ घूंघट उघारि मुखदेखत दशा बिसारि फैलत प्रकाश पुंज चंद मंद परिगो । गिरिजा गिरा गुमान सिंधुजा शचीकी शान कामै बाम रूपको गुमान कूच करिगो ॥

रघुराज० ॥ रतिरंभा मेनका तिलोत्तमाहू पूर्वचित्ति उर्वशी घृताची आदि अप्सरा अपारहैं । रघुराज अवध अधीशजू के अंगनमें गावैं नाचैं रंगनमें अंग सुकुमारहैं ॥ शक्ररानी ब्रह्मरानी शंभुरानी विधुरानी देवरानी जेतीआई अवध अगारहैं । मिथिला नरेन्द्रकी कुमारीको बदन चंद देखि मंदपरीं जैसे इन्दु आगे तार हैं ॥

अन्यकवि० ॥ आनँदको कंद मिथिलेश जाको चंदमुख ली-

ताही सों राघवके मानसकोचोरे है। दूजो ऐसो रचिबेको जोहत बिरंचि भजों शशिको बनावै नेकु मनको न मोरेहै॥फेरतहै सान आसमान पै चढ़ाय फेर पानिब चढ़ाइबेको बारिधिमेंबोरेहै । जानकी के आनन समान ना बिलोके बिधु टूक टूक तोरे फेर टूक टूक जोरे है ॥

पंडित हरिहरप्रसाद०दोहा ॥ जनक लड़ैती छबिछटा राजतमेरु समान । रति ताके ढिग रतीसम लक्ष्मीपल परमान ॥ नख शिख सिय छबि लखि रमा वारहिं तन मन प्रान । हरिहर रघुबर भाग को करहिं सदा गुणगान ॥

रघुराज०कवित्त ॥ कौशला हुलासि हँसि छोहसों पतोह मुख घूंघटको टारयो प्रभा पुंज दिशि छायगो । परयो सबहीके चख चौंधा सों चहूंधा चितै चकित चितौनलागी भानु तो भुलायगो॥ रघुराज पलक नेवारिकै निहारिछके रति रुचिराईको गुमानहूं हेरायगो । फैलत प्रकाशको पसारा अभिमानसारा तारनसमेत तारापति को परायगो ॥

देवस्वामी०पद ॥ सियजूको मुख जनु पूरण चंद । जहँबरसि रहा आनंद ॥ झलकत दंतकला तेइ सोरह अधर अमिय को कंद। हँसनि लसनि चंद्रिका हरति सो ध्यानि ननकीदंद॥अंबर में तारा मोतिनकी झल झल झलक अमंद । एकौअंक अचल व्रत पालन अंकन और पसंद॥करत निशानिशा शरदकी जाको सुयश बिलंद । श्याम ललित चोटी बंधन मिस परो राहु जनु बंद ॥ परम सुखद उल्लू जनहूंको जो बिहरत निजछंद । राम चकोर देव बंदीजन हरत मोह तम फंद ॥

श्रीतुलसी०बरवा ॥ का घूंघट मुख मूंदहु नवलानारि । चांद सरगपर सोहत यहि अनुहारि ॥

पंडितहरिहरप्रसाद०दो० ॥ सिय नख शिख बरणन करत पुर नारी सुखपाय । निजरचनाते अधिकगुनि शारद मनसकुचाय ॥

रघुराज० ॥ कह्योतुरत केकयसुता बदन देखाई नेग । जनक दुलारीको अबहिं देहु महीपति बेग ॥ कवित्त ॥ बोलेरघुराजराज राज शिरताज सुनो कैसेकरौं पूरोकाज लाजकरि हारौंगो । कर तो बिचार बारबार में खभारही सों होतहै लचार जिय कैसे निरधारौंगो ॥ भूषण बसन गेह गाउँकी चलावै कौन संपति सकल ढूंढि ढूंढि मुख वारौंगो । अवधकी साहिबी अमरपति साहिबीहूं तुलिहै न नेक जो अनेकदेयडारौंगो॥१॥ लोकनकीलाज लैकै शीलको बनाय सांचो चित्रको रचाय चित्रकारकै मदन को । शैलजाते शारदा ते तैसही पुलोमजाते शोभालिये छीनि रति मदके कदनको ॥ भाषौं सत्य रघुराज आजु सुनौ प्यारी करि सुन्न सुंदराई ते त्रिलोक के सदनको । सुधा लै सुधाकरकी लूटि बसुधाकी द्युति हद्दकै बनायो बिधि जानकीबदनको॥२॥ सोरठा ॥ रहिहौं ऋणीसदाहिं कहादेहुं कछु जचतनहिं । दीबेको कछु नाहिं बदन देखाई नेगको ॥ चौपाई ॥ असकहि पाय परम अहलादा । दियोमहीपति आशिरबादा । पूत पतोह जियें युग चारी । अवध प्रजा नितकरहिं सुखारी ॥

प्रियाशरण० ॥ नेगथार रानिनकी आई । अगणित मुक्ता रतन भराई ॥ भूषण बहु अमोल सोहाई । एक एक छबि बरणि न जाई ॥ सब रानी दइ मुख देखलाई । तेहिबिधि परिजन नारी लाई ॥ भूषण मणिगण अगणित जाती । लियेमहामणि ठाढ़ि सोहाती ॥ कबदेखब हम राजदुलारी । महाभीर कब आवहि पारी ॥ सखियन बधू बिकल जबदेखी । गइलेवाइ लखि प्रीति बिशेखी ॥ कौशल्या सबही दिखलाई । प्राणबधू मुखचंद सोहाई ॥ लेइभेंट सबकी महरानी । बैठीढिग सुख शोभा खानी ॥ दोहा ॥ नाउनि बारिनि भाटनी बधुनिनिछावरि पाइ । सकल अशीशत मोदमन जयध्वनि अतिहि सोहाइ ॥ चौपाई ॥ गावहिं मंगल सकल सहेली । रूपराशि छबिधाम नवेली ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ प्रेम प्रमोद बिनोद बड़ाई । समय

समाज मनोहरताई ॥ कहि न सकहिं शत शारद शेशू। बेद बिरंचि महेश गणेशू ॥ सो में कहों कवन बिधि बरणी। भूमि नागशिर धरै कि धरणी ॥ नृप सब भांति सबहिं सनमानी। कहि मृदुबचन बोलाई रानी ॥

रघुराज० ॥ सोंपति किह्यो पतोहुँन केरो। रंचक नहिं बिसंच जेहि हेरो ॥ ये नवबधू बिदेह दुलारी। नयन पलक सम करि रखवारी ॥ रंच बिसंच होन नहिं पावें। नेक बिषम तिनके नहिं आवें ॥ जनक राज अरु रानि सुनैना। चलत समय मोसे कहे बैना ॥ सौंपों तुमहिं कुमारी चारी। तुमहिं मातु पितु परहु निहारी ॥ दून होयँ सुख नैहर केरे। तब मम बचन सत्य जे टेरे ॥ केकय सुता कही करजोरी। होई यहै गिरा सति मोरी ॥ याम याम महँ सुधि सब लेके। कीजे सोपत सब सुख देके ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ बधू लरिकनी पर घर आई। राखेहु पलक नयनकी नाईं ॥ दोहा ॥ लरिका श्रमित उनींद बश शयन करावहु जाइ। अस कहिगे बिश्राम गृह राम चरण चित लाइ ॥ चौपाई ॥ भूप बचन सुनि सहज सोहाये। जटित कनक मणि पलँग डसाये ॥ सुभग सुरभि पय फेनु समाना। कोमल ललित सुपेदी नाना ॥ उपवर्हण बर बरणि न जाहीं। स्रग सुगंध मणि मंदिर माहीं ॥ रतन दीप सुठिचारु चँदोवा। कहत न बने जानु जिन जोवा ॥ सेज रुचिर रचि राम उठाये। प्रेम समेत पलँग पोढ़ाये ॥ आज्ञा पुनि भाइन कहँ दीन्हे। निज निज सेज शयन सब कीन्हे ॥ देखि श्याम मृदु मंजुल गाता। कहहिं सप्रेम बचन सब माता ॥ मारग जात भयानक भारी। केहि बिधि तात ताड़का मारी ॥

दोहा ॥ घोर निशाचर बिकट भट समर गनै नाहिं काहु। मारे सहित सहाय किमि खलमारीच सुबाहु॥ चौपाई ॥ मुनि प्रसाद बलि ताततुम्हारी।ईशअनेक करि वरैंटारी॥ मख रखवारिकरी दौभाई। गुरुप्रसाद सब बिद्यापाई॥ मुनि तियतरी लगत पगधूरी। कीरतिरही भुवन भरि पूरी॥ कमठ पीठ पवि कठिन कठोरा। नृप समाजमहँ शिवधनुतोरा॥ बिश्व विजय यश जानकि पाई। आये भवन ब्याहि सबभाई॥ सकलअमानुष कर्म तुम्हारे। केवल कौशिक कृपा सुधारे॥ आजु सुफल जग जन्म हमारा। देखितात बिधुबदन तुम्हारा॥ जो दिन गये तुमहिं बिनुदेखे। ते बिरंचि जनि पारहिं लेखे॥ दोहा ॥ राम प्रतोषी मातु सब कहि बिनीत बरबैन। सुमिरि शम्भु गुरु बिप्रपद किये नींदबश नैन॥ चौपाई ॥ उनिंदे बदन सोह सुठि लोना। मनहुँ सांझ सरसीरुह सोना॥ घर घर करहिं जागरन नारी। देहिं परस्पर मंगलगारी॥ पुरी बिराजति राजतिरजनी। रानीकहहिं बिलोकहु सजनी॥ सुंदरि बधुन सासु लै सोई। फणिपति शिर मणि उर जनु गोई॥

कृपानिवास० ॥ अवध बिनोद प्रमोदअपारे। गावत श्रुतिशारद फणि हारे॥

रघुराज० ॥ भई महा सुख छावनि रजनी। गायबजाय बिताई सजनी॥ बंदीजन गण औसर जानी। मागध सूत महा मुद मानी॥ पृथक पृथक महलनके आगे। द्वारद्वार यशगावनलागे॥ भूपति बिरद बिरति सबिबेका। करणी जो सुरपतिहु न छेका॥ जेइक्ष्वाकु बंशते आजू। गायउ यश जस दशरथ राजू॥ उठेउ

भूप सुमिरत भगवाना। रघुपति दरशन को ललचाना॥ प्रात कृत्य करि बाहेर आई। सविधि कियो मज्जन मनलाई॥ दीन्हे दान वित्त बहुभाई। लहें राम मंगल युतभाई॥ सजिपट भूषण सचिव बोलाई। बैठ सभामहँ दशरथराई॥

संग्रह० दोहा॥ बेद भेषधरि बंदि है मुदित करत सेवकाइ। गुण प्रभाव श्रीरामके गान करत मनलाइ॥

देवस्वामी० पद राग भैरव॥ बंदीजन बेद महाराजको जगावैं। ललित मधुर सुर सवाँरि बिमल सुयश गावैं॥ योग ज्ञान धर्म चरत कोटि जन्म जावैं। रावरो स्वरूप बिना जाने फिरि आवैं॥ छवो शास्त्र उलटि पढ़ि जीभ मन थकावैं। राउर लीला पियूष अँचइ ठौर पावैं॥ नाम ब्रह्मको नजानि बादको बढ़ावैं। नाममें अनामता बिलास देव भावैं॥

केशवदास०छंद हरिप्रिया॥ जागिये त्रैलोक देव देव देव राम देव भोर भयो भूमि देव भक्ति दरशपावै। ब्रह्म मन मंत्र अरन बिष्णु चित्त चातृक घन हृदय कमल नित्त ज्योति जगत गीत गावै॥ गगन उदित रवि अनंत शुक्रादिक ज्योतिवंत छिन छिन छबि छीन होति लीन पीनतारे। मानहुं परदेश देश ब्रह्म दोष के प्रवेश ठौर ठौरते बिलाइजात भूप भारे॥ अमल कमल तजि अमोल मधुप लोल टोल टोल बैठे उड़ि करि कपोल दानमान कारी। मानहुं मुनि ज्ञान वृद्ध छोड़ि छोड़ि गृह समृद्ध सेवत गिरि गण प्रसिद्धि सिद्धि धाम धारी॥ तरनि किरन उदित भई दीप ज्योति मलिन भई सदै हृदय बोध उदय ज्यों कुबुद्धि नासै। चक्रवाक निकटगई चकई मन मुदित भई जैसे निज ज्योति पाइ जीव ज्योति भासै॥ अरुण तरुण के बिलास सहस किरण के प्रकास सातदीप आस पास दीपति दिशि नावै। दीसत आनंद कंद निशि बिन द्युति मंद चंद ज्यों प्रवीण पुरुष युवतिहीन दीन भावै॥ निशिचर चरके बिलास हास होतहैं निरास सूरके प्रकास

त्रास नाशत तमभारे । फूलत शुभ सकल गात अशुभ शैलसे बिलात भावतज्यों सुखद राम नाम मुख तिहारे ॥

श्रीतुलसीछन्द ॥ बंदौं रघुपति करुणानिधान । जातेछूटै भवभेद ज्ञान ॥ रघुबंश कुमुद सुखप्रद निशेश । सेवत पदपंकज अज महेश ॥ निजभक्तहृदय पाथोज भृंग । लावण्य बपुष अगणित अनंग ॥ अति प्रबल मोहतम मारतंड । अज्ञान गहन पावकप्रचंड ॥ अभिमान सिंधु कुम्भज उदार । सुर रंजन भंजन भूमि भार ॥ रागादि सर्पगण पन्नगारि । कंदर्प नाग मृगपति मुरारि ॥ भव जलधि पोत चरणारबिंद । जानकीरमण आनन्द कंद ॥ हनुमन्त प्रेम बापी मराल । निष्काम काम धुक गो दयाल ॥ त्रैलोक्य तिलक गुण गहन राम । कहतुलसिदास बिश्राम धाम ॥ पदभैरव ॥ देव दीनको दयाल दानि दूसरो न कोई । जाहि दीनता कहौं हौं दीनदेखौं सोई ॥ मुनि सुर नर नाग असुर साहब तो घनेरे । पै तौलौं जौलौं रावरे न नेकु नयन फेरे ॥ त्रिभुवन तिहुंकाल बिदित बदत बेदचारी । आदिअंत मध्यराम साहबी तिहारी ॥ तोहिं मांगि मांगनो न मांगनो कहायो । सुनि स्वभाव शील सुयश याचन जन आयो ॥ पाहन पशु बिटप बिहंग अपने करि लीन्हे । महाराज दशरथके रङ्कराव कीन्हे ॥ तू गरीबको नेवाज हौंगरीब तेरो । बारक कहिये कृपाल तुलसिदास मेरो ॥ छप्पै ॥ जय ताड़ुका सुबाहु मथन मारीच मानहर । मुनि मख रक्षण दक्ष शिला तारण करुणाकर ॥ नृपगण बल मद सहित शंभुकोदंड बिहंडन । जय कुठार धर दर्प दलन

दिनकर कुल मंडन ॥ जय जनक नगर आनंद प्रद सुखसागर सुखमा भवन। कहै तुलसिदास सुर मुकुट मणि जय जय जय जानकि रमन ॥ कनक कुधर केदार बीज सुंदर सुर मुनिवर। सींचि कामधुक धेनु सुधाय पय बिशुद्धतर ॥ तीरथपति अंकुर स्वरूप यक्षेश रक्ष तेहि। मरकतमय शाखा सुपत्र मंजरी सुलक्ष जेहि ॥ कैवल्य सकल फल कल्पतरु शुभसुभाउ सब सुख बरिस। कहै तुलसिदास रघुबंश मणि सोकि होहिं तुव कर सरिस ॥

देवस्वामी०पदरागभैरव ॥ बाजतबीणा मृदंगताल बांसुरी उपंग बढ़त तानकोतरंगनाद ब्रह्मजगिरह्यो। नाचत ततथेयथेय करन ताल देयदेय उपज बिबिध लेयलेय सुनि मुनिमन डगिरह्यो॥ साज मनहुं कमलपुंज तहां उठत भँवरगुंज यहीमें राग कुंज समुझत मन पगिरह्यो। होत लाग डाटडपट बीचबीच झांक झपट धैवतालिये परत त्रिपठ गुनिजन मनठगिरह्यो ॥ झमकि धमकि घूमि झूमि आइजाइ ताकि डाकि नूपुर झनकार झरत तिनमें जियलगिरह्यो। साजनाच दूनौ मिलि गीतहीको पुरन करत तीनिहुंमें एकरूप रागताग तगिरह्यो॥ जहँ न जाइइंद्रिय मन शब्दतहां करैगमन जगेदेव रमारमन पाप दोष भगिरह्यो। उघरेतब सुभगद्वार होत आरतीप्रकार भक्तनको मानस श्रीराम रंग रंगिरह्यो ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ प्रात पुनीतकाल प्रभुजागे। अरुण चूड़बर बोलनलागे ॥ बंदी मागध गुणगणगाये। पुरजन द्वारजोहारनआये॥ बंदि विप्र सुर गुरुपितुमाता। पाइअशीष मुदित सब भ्राता ॥ जननी सादर बदन निहारे। भूपति संग द्वारपगुधारे॥

रघुनाथदास० ॥ मित्र सुसेवक प्रभु पद बन्दे । पाइ दरश सब भये अनन्दे ॥

श्रीतुलसी०दोहा ॥ कीन्हशौच सब सहजशुचि सरितपुनीत नहाइ । प्रातक्रिया करि तातपहँ आये चारिउ भाइ ॥ चौपाई ॥ भूप विलोकि लिये उरलाई । बैठे हर्षि रजायसुपाई ॥

संग्रह० ॥ रामसखा सबराजकुमारा । भूपबंदिबैठेसुकुमारा ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ देखिराम सबसभा जुड़ानी । लोचन लाभ अवधि अनुमानी ॥ पुनि वशिष्ठ कौशिक मुनि आये । आसन सुभग मुनिनबैठाये ॥ सुतनसमेतपूजि पदलागे । निरखिराम दोउ गुरुअनुरागे ॥ कहहिं वशिष्ठ धर्म इतिहासा । सुनहिं महीप सहित रनिवासा ॥ मुनि मन अगम गाधिसुतकरणी । मुदित वशिष्ठविपुलविधि बरणी ॥ बोले बामदेव सबसांची । कीरतिकलित लोक तिहुं माची ॥ सुनि आनंदभये सबकाहू । रामलषणउर अधिक उछाहू ॥

अथश्रीअन्तःपुर विहारवर्णनं ॥

श्रीतुलसी०दोहा ॥ मंगलमोद उछाहनित जाहिंदिवस यहि भांति । उमँगि अवध आनंद भरि अधिक अधिक अधिकाति ॥

प्रियाशरण०छप्पै ॥ रंगनाथके महल तहां बहुबाजन बाजे । बंदनवार पताक ध्वजा कलशा शुभ भ्राजे । दूलह दुलहिनि सहित सकल रानी हरषाई । गानकरत श्रीरंगनाथके मंदिर आई ॥ सविधिपूजि कंकणखुले मौर मौरि पधराइकै । तेहिक्षण पुरनारी सकल बहुविधि मंगलगाइकै ॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ सुदिनसाधि कर कंकणछोरे। मंगल मोद विनोद न थोरे॥

संग्रह० ॥ रामसखा रघुबंशकुमारे। सबकेमन आनंदअपारे॥ सरित बाग बनमें सबजावें। भोजन नाच गान करवावें॥

श्रीतुलसी०चौपाई ॥ नितनवसुख सुर देखि सिहाहीं। अवधजन्म याचहिं बिधिपाहीं॥

रघुराजसिंह० ॥ भूप युधाजित दशरथस्याला। आयउ बिदा होन तेहिकाला॥ करिसतकार अवधपति बोले। बनतन अबै आपके डोले॥ नेउतहरी भूपति सबआये। यथायोग्य सबकहँ बैठाये॥ भूपतिकिये सबनि सतकारा। विनयकियेते जानअगारा॥ देनलगे नृप तिनहिं बिदाई। रथ तुरंग मातंग मँगाई॥ रतन आभरण अम्बर नाना। जो जन जौनलेत ललचाना॥ सकल कहहिं नृप आजु कुबेरा। देतलगत लघु जाहिंसुमेरा॥ प्रीति रीति बर विनय बड़ाई। कोअस जाहि तुष्टि नहिं पाई॥ बरणत दशरथसुयश नृपाला। निजनिजदेशन चलेउउताला॥

संग्रह० ॥ बरबस नृपसों बिदाकराई। चलेयुधाजित पदशिरनाई॥ कह्यो सुमंतहि अवधभुवाला। बनवावन चहुं भवन बिशाला॥ राम सिया तहँ करहिं निवासू। होयधाम सबभांति सुपासू॥ सुनि दशरथके बचन सुहाये। सपदि सूत्रधारन बुलवाये॥ छंद॥ आयउ तहां चलि विश्वकर्माधरि सूत्रधार स्वरूप। शासन सुन्यो अवधेश को लगे रचन धाम अनूप॥ अशोकबाग निकट तहां शोभित कलित आवास। षटऋतुनके सुख भवन बर सियराम करहिं निवास॥

कविकेशव०नाराचछंद ॥ सुदेशराजलोक आसपास कोटदेखियो। रची बिचार चारिपौरि पूरबादिलेखियो॥ सुवेषएक सिंहपौरि एकदंतिराजहै। सुएक बाजिराज एक नंदिवेष साजहै॥ दोहा॥ पांच चौक मध्यहरच्यो सात लोक तरहारि। षट ऊपर तिनके

तहां चित्रे चित्रबिचारि ॥ दोधकछंद ॥ मंदिर कंचनकोयकसोहै । श्वेत तहां छतुरी मनमोहै ॥ सोहत शषिर मेरुहमानो । सुन्दर देवदिवान बखानो ॥ मंदिर लालनको यकसोहै । श्याम तहां छतुरी मनमोहै ॥ ताहि यहै उपमा सबसाजै । सूरजअंक मनों शनिराजै ॥ मंदिर नीलनको यकसोहै । श्वेत तहां छतुरी मन मोहै ॥ मानहुं हंसनकी अवलीसी । प्राबिटकाल उडायचलीसी ॥ मन्दिर श्वेत लसे अति भारी । सोहतिहैं छतुरी अतिकारी ॥ मानहुं ईश्वरके शिरसोहै । मूरति राघवकी मनमोहै ॥ तोटकछंद ॥ सब धामनमें यक धाम बन्यो । अतिसुंदर श्वेत स्वरूपसन्यो ॥ शनि सूर बृहस्पति मण्डलमें । परिपूरण चन्द्र मनो बलमें ॥

बिश्वनाथ०पद ॥ सिय रघुनन्दनके रहिबेको महिप महल यक अमल बनायो । सियको भोर राति रघुबरको प्रवेशको शुभदिन बनवायो ॥ सिय तहँ जाय निरखि गृह हरषी जैसे तैसे दिवस बितायो । बिश्वनाथ पिय मिलन जो मनमुद कोई कवि सों जात न गायो ॥ पद ॥ अति हरि हिय सिय मिलन अकुलई ललकत कलपहि सम दिन बितयो । लखन संग बैठे सरयू तट कौनिहुँमिस हिमकर दिशि चितयो ॥ हरिहि हरषलखि कहेउ सखा कोउ रघुनन्दन यहि दिशि छबि छाई । रबि आगम गुनि युत कलकुंकुम लाक्षारस धालित इव भाई ॥ नारिन मन बि-हारउतकंठित भयसराग समय यहिलेखी । मानहुँ यहि प्रतिबिंब परेते स्वच्छ हिये रहिगये बिशेखी ॥ कोउ कह जैसे अरुणहि आगे करि प्राची रवि ऊगत भावै । तैसे रस शृंगार फैलावत काम राग आगू करि आवै ॥ कोउकह रजनिराज आवत गुनि अपने कहँ हत तेज बिचारी । लैसंन्यास चहत रबि बूडन पटकाखाथ बारिधरबारी ॥ अथये पति पूरब दिशि सोकित मुकुतन हारनि तोरिपवारे । सकल भुवन महँ परितेहिं मुकुता तकियत जहँ तहँ है नहिंतारे ॥ कोउकह कामपाइ निज औसर सुर सुरतिय मनहरन बिचारी । बिश्वनाथ मल्लिका कुसुमनकी सुखअवली

जनु गगनपसारी ॥ पद ॥ कोउ कह प्राची दिशि रघुनंदन जो यह लखियुत ललित ललाई। कैधौं सुर सिंधुर शिरसेंदुर करत प्रणाम कहत बिधु भाई ॥ के विद्रुम बितानरथ ऊपर सोई पहिले देत देखाई। बिश्वनाथ के आवत पति गुणि प्राची प्रेम रच्यो सरसाई ॥

सखनकी रसभरि युक्ति सुनकर श्रीरघुनंदन बोले ॥

पद ॥ अरुण इंदु यह उदै भयोहै लखहु सखहु बोले रघुनंदन। कैधौं आनंद कुंभ रँगि रागहि पूजति मदन हेतु मन फंदन ॥ कैधौं निज निज मुखनि मित्रगुणि सुरनारिन किय याको चुंबन। बिश्वनाथ लगिगई ललाई युत तमोलतिन अधरन बिंबन ॥ पद ॥ परस्पर बरणत चारिउ भाई ॥ संध्या समय अरुण शशि ऊग्यो काहे भै पियराई ॥ रिपुहन कहत कि प्राची दिशि हुतकाल पियपाई। गाढ़े मिलि निज कुचको कुंकुम याके अंग लगाई ॥ लषण कह्यो कमलनि कर परस्यो यह रबि भेष बनाई। हिम गुनि मुँदी सो कुमुदिनि बिहँसी पियरो परयो लजाई ॥ भरत भन्यो शशिपीत कमलनसों केमित करी लराई। रजसर छीनि लगायो निज तन तेहि मुख दियो नवाई ॥ कह रघुनंद कुपित यह ऊग्यो चहि कोऊ मुख समताई। बिश्वनाथ भो असम करत तप तनरज पीत चढ़ाई ॥ पद ॥ कह्यो हरि बंधुन चंद कलंकी काहेते मधिभोहै। रिपुहन कहजग वृथहि कहतहैं मधि कलंक यामो है ॥ बेद पुराण परम पुरुषहि की आंखी रबि शशिलेखी। रबिखर तेज न तकी जाति यहि प्रकटि पूतरी पेखी ॥ लषण कह्यो औषधि निशिपति ढिग रहहिं सदा हरियानी॥तिनको चरत पियूष पियत मृग बसत सदासुखमानी॥ कह्यो भरत शशि मदन चक्रके द्युति सो मधि बिनु न लखाई। याके मध्यश्यामता नाहीं मदन मूर्त्ति दरशाई ॥ कह बिसुनाथ नाथ यहशशिनहिं मनु संध्यातन छाजै। मध्यश्याम नहिं आनौं तनधरि बैठि रह्यो रसराजै ॥ पद ॥ पुत्रपुरोहितको तेहि अवसर

रामचन्द्रढिग आइगये । कलश गणेश पुजाइ सुदिन शुभलगन सदन लैजातभये ॥ ड्योढ़ी लों पहुँचाय सखासब अपने अपने धामगये । विश्वनाथ प्रभुगे भीतरको बैठत अनुपम पलँगभये ॥

केशवदास०सुंदरीछंद ॥ सुंदर मंदिरमै मनमोहत । स्वर्णसिंहासन ऊपर सोहत ॥ पंकज के करहाटक मानौ । है कमला बिमला यह जानौ ॥ फूलनको सुबितान बन्योबर । कंचन को पलिका इकतातर ॥ ज्योति जराय जरयो अतिसोभनु । सूरज मंडलतें निकस्यो जनु ॥ कुसुमबिचित्राछंद ॥ दरशतहीं नैनानि रुचिबने । बसन बिछाये सब सुख सने ॥ अति रुचि सोहैं कबहुं न सुने । जनुतनुलै कर शशिबुने ॥ चंपकदल द्युतिकेगैं डूबे । मनोरूपके रूपकऊबे॥कुसुम गुलालनकी गलसुई ।बरणीजाइ ननैननछुई ॥

संग्रह०दोहा ॥ करहु बयारु प्रीतम प्रिया कह्यो सखी हरषाय । जेंई दौ बीरी लई बैठे पलिका आय ॥ चतुष्पदी ॥ द्युति रंगसदन की सहसबदनकी बरणै मति न बिचारी । अथ ऊरध राती रंग सँघाती रुचिबहुधा सुखकारी ॥ चित्री बहुचित्रिनि परमबिचित्रि- नि रघुकुल चरित सुहाये । सबदेव अदेवनि अरु नरदेवनि निर- खि निरखि शिरनाये ॥ आई बनि बाला गुण गण शाला बुधि बल रूपनिबाढ़ी । शुभजाति बिचित्रिनि चित्रग्रेहते निकस भईं जनुठाढ़ी ॥ मानौ गुण संगिन यों प्रतिअंगन रूपन रूपबिराजै । बीणानि बजावैं अद्भुत गावैं गिरा रागिनी लाजै ॥ दंडक ॥ अपघन धाई न बिलोकियत धाइलनि घनों सुख केशोदास प्रगट प्रमान है । मोहै मन लोभै तन नैननि रुदनहोइ सूखै शोच मोच दुखमारन निधानहै॥अगमअगमतंत्र शोधिसबयंत्रमंत्र निगर निवारिबेको केवल अपानहै । बालनिकी तनतान अमित प्रकार सब राखि रामदेव कामदेव कैसे बान है ॥ पंकजवाटिका छंद॥ शुभनाद ग्राम नृत्यतसुताल । सुख बर्ग बिबिध अलप काल ॥ बह कलाजाति मूरछना जाति । बह लाग गुमकगुन चलीजाति ॥ बहु बिधि चलन आकाश चालि । मुख चालि

चालि अरु शब्द चालि ॥ बहु उरप तिरपती बटि अड़ाल। भरु राम राड़रा रंगलाल ॥ उलथालेकी अलिगम सुडेड़। पद पलटी उरमनि संकरेड़ ॥ सुतिनकी प्रभा देखि मतिधीर । भ्रमशोषत है बहुधासमीर ॥ तोटक ॥ नाचैं रसवेष अशेष तबै । बरषै बिरसै बहु भांति सबै ॥ नौऊं रस मिश्रित भावनचैं। कौनौ नहिं हसत भेद बचैं ॥ दोहा ॥ पाइ पखावज तालसों प्रति धुनि सुनियतु गीत। मानो चित्र बिचित्र मति पढ़त सकल संगीत ॥ अमल अमल कर अंगुली सकल गुणनकी मूरि । लागत मूढ़ मृदंगमुख शब्दरहत भरि पूरि ॥

श्रीतुलसी०बरवै ॥ उठीसखी हँसि मिसकरि कहिमृदुबैन। सियरघुबरके भये उनींदे नैन ॥

संग्रह०दोहा ॥ अलसाने प्रीतम प्रिया सखिकरि बिदा समाज। परम प्रेम आनंदभरि पौढ़े द्वौ सुखसाज ॥

बिश्वनाथ० पद ॥ सोय दोऊ श्रमित सनेह सुखरंग । व्यजन करहिं कोउ सखिपद दाबहिं छकहिं तकत यक संग ॥ हरिभुज ऊपर सियमुख शोभित पैरि यमुन जनुचंद । बिश्वनाथ थिर भयो थकितह्वै लहि अधार आनंद ॥

कृपानिवास०पद ॥ सेज सुख सोये सांवल गौर । प्राण बपुष मन लगन गोद मुख सिमिटि भये यकठौर ॥ लपटि भुजातन सोहति मानों नेह लतासुख द्रुमनिसकोर । पलकलगे धरबदन मनोहर मीन सुधारस बोर ॥ शीतल मंद सुगंध शुचीमय समय समुझ गुणकौर । कृपानिवास सिया पद पंकज सेवनि नैन निहौर ॥

संग्रह०दोहा ॥ द्वार झरोखनके सखिन दीन्हे परदे डारि । ठांव ठांवपर पाहरू बैठि चतुर बरनारि ॥ प्रातहोत बंदीजनन अंतःपुरके द्वार । गावन लागे मधुर सुर बाजन ललित सुधार ॥

बिश्वनाथ० पद ॥ जागो रघुपति कुमार प्राणप्रियहि प्राणप्यार

खोलु नैन कंजमार प्रात भयो पेखो । भूपति उठि मंजन करत सुकवि सुभग पदनिधरत सुमिरत हरिभक्त कोकशोकअंतलेखो॥ प्राचीपति साथ करन होम हेतु लिये हाथ लाजातारनिके गाथ बेदी नभमाहीं । थापित किय अमल अनल लपट ज्वलित लहलहिं भल सोई लखि परति प्रथित पूरबदिशि पाहीं ॥ निज बियोग दुखित दहत दहन नखत देखि चंद मुद्रितकरि द्युतिहि देह बारिधि चहुं बोरै । कमल कोष कढ़त अलिन अवलि लै कृपानिपानि हनत रैनि अरुण फट्यो हियो नहिं कठोरै ॥ यही दाह मध्य स्याह वृथहिं कहिय महिय छांह नाह बिकल जोहि रैन प्रथमहि तन छान्यो । बिश्वनाथ नाथ बिजय देखत अरबिंद बंद मोचत मकरंदआशु महामोद मान्यो ॥

संग्रह०दोहा ॥ इतभीतरको सहचरिन जानी समय रसाल । आय खड़ी बाहर तहां जहँ सोवत सिय लाल ॥

कृपानिवासकृतजगावनपद ॥ प्रात अलीपुंज मिलि श्रीरंग भवन गावैं । तीनिग्राम सप्तसुर सुरागमधुर भावैं ॥ ललितबीन झीन गति नबीन बीन ल्यावैं । मंद मंद कोउ मृदंग संग रंग छावैं ॥ नूपुर धुनि झनकि झनकि रमकि रमकि आवैं । स्वल्पतान मान भनत अनँगसो जमावैं ॥ बिबिध रहसि गहसि गहसि बिहँसि बिहँसि यावैं । चन्दबदनि रमनि चपल चातुरी चलावैं ॥ युगल नेह देह भोय लोयनललचावैं । माधुरी सुहाग रहसिलाग लगि सुनावैं ॥ केलि सरस रेलि भाम कामरति लजावैं । कृपानिवास आशु ललि लालको जगावैं ॥

अग्र०पद ॥ भोरहिं चंद्रकला अलबेली बीणबजाई प्यारियां । बिमलादिक सखि कुंज कुंजते मिलि जुरि आई सारियां ॥ कनक भवनमें भँवर पलँगपर जागे युगल बिहारियां । मृदु मुसुकात जम्हात रंगभर अँखियां सुरत खुमारियां ॥ अमित बाल सेवायुत राजत करकंचनकी थारियां । अग्रभाग श्रीअग्र सहचरी युगल प्रिया बलिहारियां ॥

कृपानिवास० प० रा० नटमूलताल ॥ रँगीली सखि रंगमहल रँग छाये। रंग रसीले रंगरस बस रहे रंग भरि सेज सुहाये॥ रंग अनंग अंग सरसाये रंग उमँग दरशाये। रंगबरकी सब सखिय रंगीली रंग अमल रंग गाये॥ रंग सरोवर सुधि नहिं तनमन रंग सुलहर लहराये। रंग रहसकी थाह न पावत मन धाये नहिं आये बिमल रंग सिय राम धामको सुकृति उपासिन पाये। कृपा निवास चढ़ै न और रँग जे यहिरंग रँगाये॥ ख्याल॥ रंग रँगीले दोउ सोयजगेरी। बिथुरी अलकैं अलसी पलकैं रंग सनेह सुरंग मगेरी॥ मद रस छके बिराजत लालन ललनाके रसरंग ठगेरी। कृपानिवास श्री जानकी बल्लभ सखियनके दृग निरखि पगेरी॥ देशमूलतालपद ॥ रामरसिकसों रसकरि प्यारी लसिरहे नैन खुमारी। झुकि झुकि आवैं अलकैं पलकैं मुखपर बिना सँवारी॥ कृपानिवास बिलासिनि सिय जू पियमादक मतिवारी १ उरझ रहे बार शिर पेचन रामरसिक सिय प्यारी के। नहीं सँवारत रति मतवारो बशमें परयो मतवारीके॥ नासा चढ़नि बिलोकनि तीषी भीज गये रसवारीके। कृपानिवासी मान मनोरथ उघरत प्राण बिसारी के २॥

बिश्वनाथ०कृतपद॥ अलसानी अँखियनपर सखियन अनिमिष अँखियन दीठिलगी। किंचित बिकसितकमलनपरजनु अलिअवली उड़ि प्रीतिपगी॥ अरुणैकोरैं तिमिहैं डोरैं अँखियों जनु उर राग रँगी। बिश्वनाथ तेहि अवसर थिरजनु निरखि परस्पर सुछबि ठगी १ नैननिभरि छबि लेहु निहारी। पलँग ललित अलसाने राजत राजदुलारो राजदुलारी॥ बिथुरे बार बदन बर बिलसहिं में उपमा यक मनहिं बिचारी। बिरल मलिन मालती कुसुम गण लपटिरहे अलकन सुखकारी॥ छबितरंगिनि तरंग चलाये फेन खंड लघु लगे सिवारी। ओसनसों मूंदे कलकुंडल राजि रहेहैं थिरताधारी॥ दुहुँदिशि मनसिज धुज झष शोभित सुखित रहे जनु यमुन दहारी॥ खुलत मुदत दोउ दृग तकि सुखमा

कहत सुकवि अस हेतु सँवारी ॥ बिकसत मुँदत कोक नदतकि जनु शीशफूल रवि कच निशिकारी। अमल कपोलन पीकलीक बर उपमा तिनकी ललित उचारी ॥ मानहुँ श्रुतिभूषण के माणिकमुकुर कपोलनि किरणि पसारी। सदरद छदबर लसत अधर जनु दरकित बिंब सुफल छबि भारी ॥ थिर बुलाक मोती अधरनपर बरणहुँ मैं आभा अनुहारी। मानहुँ रदछद परिहरण हित धरि दिय बिधुमुख बिंदु सुखारी ॥ बिश्वनाथ ये छबि सुख सींवां कहि न जाय शोभा बलिहारी २ ॥

कृपानिवास०पद ॥ आरती जानकीलालकी कीजिये। आनंद कंद चंद कोटिन छबि नैन रसिक रसपीजिये ॥ प्रेम थार कर सकल सौज भरि समय समय सुखलीजिये। कृपानिवास बिलास भवनमें युगल रमण रसभीजिये ॥

बिश्वनाथ०पद ॥ दै गलबांह परस्पर दोऊ पुहुमीपर पगदीन्हे। मानहुं शिवाहोन चाहत उर बिलग होवभै भीन्हे ॥ आलसबश पुनि पलँगहिंपर बैठे जात झुकि झुकि हैं। बिश्वनाथ ज्यों त्यों करि गवने चरणधरत रुकि रुकि हैं १ प्रीति पग दंपति चलत पग पग थकत। बिलग ह्वै गवन दुख दुसह मनमैं गुनत ॥ जिमि जुराफा बिहंग बिछुरन नहिं उड़िसकत। मिले पुनि पुनि परम प्रीतिसों अंक भरि धरत ॥ पद ठटुकि दोउ चले मुरि मुरि तकत। गेहकी देहरी मेरुसी ह्वैगई बनत बिसुनाथ तन रामसों नहिं न कत २ ललितपलँग लालिमा लहरि दरशातिहै। चलत गजगतिधरैं दोऊ अति रतिभरे पुहुमिहुं प्रीति जनु प्रकट सरसातिहै ॥ लपकि पटुका पीत परत अवनी उपर धरत पगदंपति कछुक रुकिजाति है। चलत डगमग डगनिजात जमुहात गुनि प्रात पछितात अंगिरात अलसातहै ॥ झरत सिररूह सुमन मलिन पूषणढरन जगनतें भजि चली मनहुं तारावली। छुटि पगरी अरुण छोर कंधनिछजत छलकि अनुराग की धार जनु बहिचली ॥ पलकपे पीक निजराग रसबोरि जनु

असम शरछापकिय परम असमै गनी। लसत बिसुनाथ मंजन अधर मोद कर मनहुं बिद्रुम तखत बैठेहैं रसधनी ३ लखन आनंद रघुनंद चलिदेतभे। मंदबिहँसत बदनचंद करिलेत तर सकुचि अरबिंदचख मूंदि कछुलेतभे॥ पाणि परणामकरि सखा अभिराम यक कह्यो सुखधाम अबहमहुंको सकुचिये। जगेनहिं रैनि जो अरुणहैं नैन यह लखनपर राग अति जो हिये हेरिये॥ आजु अंगिरात अलसात जमुहात ज्यों रंगोतकिगात हमजानि चिन्है सबै। भोरके भोरतें बहुत बाकीयहे रैनहिन्हाय अंधियारहीं तिलककीन्हे तबै॥ सुरति इमि उक्तियुत युक्ति सब सखन की बिहँसि चलि राम सुन्हातभे। सखिनके साथ सियन्हाय पियपांयको ध्यान बिश्वनाथकिये रोम हरषातभे ४ सरयूलसत राम नहात। सखन तनकर देतछीटे कहि न परत लजात॥ जल बिहार अनेक बिधिकरि पहिरिलिय पटगात। जनचोवति बजितपट बिछुरत मनहुं बिलखात॥ ध्यान हरिमिसिध्याय सिय मनमोद सिंधुसमात। तिलकतन करि धारि भूषण बसन अंग सोहात॥ पहिरि पद पदत्राण गवने सखन सँग बतरात। कहहिं तिय कुसुमनि बरसि बिसुनाथ बलि बलि जात ५ आजु अलि अमित आनंदकी खानिरी। हेरि हरषितहिये सखा चौरन लिये छांहकोउ किये रविमुखी सुखदानिरी॥ छजहि मंडल जनन छकित छबि सज्जनन रवनकी बनगनन होत सुरसानिरी। मध्य अनुजन सहित लसत उपमा रहित बदत कछुबैन युतमंद मुसक्यानिरी॥ पीतपगरी कलित मणिन कलँगी ललित भूषणन तनहोति द्युति आनिरी। कंधपटुकापीत छजतयुत तिलक बहु रीति तकिप्रीति अधिकानिरी॥ चलतयुत मान छुटिजात गजमान यकपाणि धनु बाण चल कमल यकपानिरी। तकत बिसुनाथ रतिनाथ छबिलाथ रघुनाथ छबि छलक चहि निजहिं लघुमानिरी ६ राजकिशोर ओर यहि आवत। लैकर कमल सुगंधलेत जनु बरसियबदन सुवास मिलावत॥ फिरिफिरि ताहि

फिरावत भावत भये न सम जनु उर समुझावत । विश्वनाथ यह छवि सिय पियकी सखि लखिकोन नैन फल पावत ७ ॥

इतिरामप्रतापचित्रकारविरचितेश्रीसीतारामविवाहसंग्रह परमानंदत्रैलोक्यमंगलबीसवांप्रकरणसमाप्तः २० ॥

श्री जानकी बल्लभाय नमः ॥

अथ मृगया का वर्णन ॥

इक्कीसवां प्रकरण प्रारंभः ॥

दोहा ॥ करि सरयू मज्जन सदन आये रघुकुल चन्द । यज्ञ शाल भ्राजतभये जहां बिप्र मुनिवृन्द ॥

रघुराजसिंह० कवित्त ॥ दीन्हे तिल धेनु दश धेनु हेम धेनु पुनि तेरह सहस्र धेनु दीनि हेम शृंगी हैं । अवनि अभूषणदै अन्नदीन्हे अम्बर दै शय्यादान दीन्हे गज बाजि बहु रंगी हैं ॥ अग णित आयाद्विज वृंदन अनंदनसों पूरे मन काम रघुनंदन उमंगी हैं । रघुराज रामदान धाराके प्रवाह भेदरिद्रीके दरिद्री बिप्र आनंदके दंगीहैं १ तर्पण हवन आदि प्रातकर्म कैकेपुनि दीन्हो माथे मुकुट अनन्त भानु भासी है । जामा जरकसी वारो फेंटा मुक्त छोर वारो हीरनको हारो धारो अंगद बिभासी है ॥ करमें कटक अं-गुली न मुंदरी न रचिकटि करवाल पीठि तूणशर रासीहैं । धारे धनु एक हाथ एक हाथ सखा हाथ आये रघुराज सभा अवध

बिलासी है २ औसर बिचारि पौर प्रकृती अमात्यगण सखा सरदारेते सिधारे दरबारेहैं। पुरकाज भृत्यकाज गृहकाज राज काज अरज सहित निज गरज उचारे हैं ॥ समुझि निदेश दै दै कीन्हे कृत काज तिन्हें रघुराज धर्मयुत हुकुम निकारे हैं। सुख को पसारे दीन दुखन निवारे न्याउ नीके निरुवारे प्रजा कीन्हे जै जै कारे हैं ३ बासर बिचारि डेढ़ पहर बितीतो राम बिदा करि मंत्रिनको सखा बैठारे हैं। लषण भरत शत्रुसूदन पठाइ दूत तुरत बोलायेके शिकारके बिचारे हैं॥ गावै लागे गानवारे नाचै लगे नृत्यवारे बाजन बजावैं बाद्यवारे सुर धारे हैं। राज शिरताज महाराजके दुलारे राम जन रघुराज पीछे चारु चौंर ढारे हैं ४ बांकी पागे पेंचै बांकी कसे शिर पेंचै बांकी भृकुटी न ऐंचै बांकी कलंगी सँवारे हैं। बांकी करवालैं बांकी कसी काटि ढालैं बांकी पीठि ढपी ढालैं बांके नैन अरुणारे हैं॥ रघुराज योबन ललाई मुख बांकी फबै बांकी गति बांके सखा संग अनि-यारे हैं। आये श्रीलषण प्यारे केकयी कुमारे तिमि सभापगुधारे शत्रु दमन दुलारे हैं ५ रामको सलाम करि बैठे बंधु आसपास हाँस इतिहासन अनेक परकासेहैं। भुवन विभूषणते भासेभास भासवान सज्जन सुशील शीतभानु से बिलासे हैं॥ रघुराज लोकपाल उपमा सेखासे बैठे आमखासे काम धामको निरासे हैं। राम मुख बचन सुधासे सुनिबे के प्यासे हियके हुलासे मृगयाके गौन आसेहैं ६ जानि रुखबंधुनकी खेलिये शिकारआजु बिपिनमझार राम गिरा यों उचारी है। भाई सखा बोले यक बार सबै मोद भरे आछी कही आप अभिलाषऊ हमारी है॥ बेगिप्रतीहारको बोलाइकै निदेश दीन्हो सैनको सजाइये शिकार की तयारीहै। दूत दौरि तुरतही देवाइ दियो दुंदुभीको रघुराज भाई सैन सुनत शिकारीहै ७॥

बिश्वनाथसिंह कृत कवित्त ॥ बाजि रथसारे गज शुतर कतारे केते प्यादे ऐंडवारे जेसचीह सरदारके। कुवँर छबीले जेरसीले

राजबंशवारे शूर अनियारे अति प्यारे सरकारके ॥ केते जाति-वारे केते केते देशवारे जीवसिंह श्वान आदि शैलवारेजे शिका-रके । डंकाकी धुकारहै तयार सब एकैबार राजे वारपार द्वार कौशल कुमारके ॥

ईश्वरीप्रसाद छप्पै ॥ प्रतापाग्नि सवलाश्व बीरभद्रादिकआये । नीलरत्न हरिदश्व श्रोणनख सहित गनाये ॥ चन्द्रचारु बल-वान चन्द्रभालहु रिपुवारन । शत्रुंजयसे अपर महाबल साथ हजारन ॥ भद्राश्व महामति जय बिजय अरु जयंतसेबहुलखा । शस्त्रास्त्र साजि गज बाजि चढ़ि राजद्वार लाखन लखा ॥

संग्रह०दोहा ॥ चारिहुबन्धु सखानलै कौशल्या गृहजाय । करि कलेउ मांगी बिदा गवने आशिषपाय ॥

बिश्वनाथसिंह०कवित्त ॥ पागजरकसी कसी कलँगी त्यों बसी बांकी लंकद्वाल असी लसी कसी पटछोरसों । भीजी मुख शशि मसी हांसी खासी कौमुदीसी फँसी अहिरसीशोभा जुल्फ मरोर सों ॥ प्रियसख सोहैं बातेंकरत रसोहैं कछु बिश्वनाथ सोऊसोहैं जोहैहैं चकोरसों । दूनोओर चौंर चलेभाय पौर आये रामसेवक-सलाम दामकीन्हे चहुंओरसो १ पगरीसुरंगीअरबंगी बंधी छैलन की झुकी है कलंगी त्योंत्रिभंगीमनिसारकी । कसीकटिद्वालैयुग परी करवालैं बंधी लालैं उरमालैं ढकी ढालैं पीठि ढारकी ॥ बाजिन उछालैं करिख्यालैं सांगघालैं बीर जगीजीन जालैं बि-श्वनाथ हेमतारकी । कहैं रघुबीरं बैनदेखु तौ प्रतापी नैन आई या शिकारी सैन भरत कुमारकी २ श्याम समलापैं शिरपेचैं त्यों कलंगी बसी बेसरि रुमालैं कसी केसरिके बोरकी । भरउत्साहैं गरे हरिन हराहैं धरें सिफर सलाहैं सैफ वाहैं जंग जोरकी ॥ घू-मत निशानसांन सजी सरदारकी त्योंही छरींदारन की बोलनि मरोरकी । हँसि हँसि भाखैं राम लखन समाज बीच कढ़ी असवारी प्यारे लषण किशोरकी ३ मंडित मंदीरे चीरे हीरेवारे गोसवारे मोतिन कतारे तुर्रा जीते ज्योति तारेकी । कसि कसि

फेंटे पेशकबज लपेटे सबै शत्रु भटभेटे राज बेटे रुचिरारे की ॥ करनि बैठारे बेगवारे बांसे बिश्वनाथ कुलहीं सँवारे शीशसजनि शिकारे की। मोरि मोरि बदन बखानैं राम रीझि रीझि चाहि चमू बांकी शत्रुदमन दुलारे की ४ एकओर भली तरा बंधी परा बाजिनकी एकओर ऊंट जूट कोगनै अनंतको। बीचमें बिराजे गोल गर्बित गयंदनकी आगे पीछे प्यादे व्यूह बांधेतके कंतको ॥ बिश्वनाथ कौतुक बिलोकैं राजबंशी सबै आयो डंका नाद ते पूरतदिगंतको। स्यंदन सवार सरदार बीर वृंदनको सैनीरघुनंद-नको नंदन सुमंतको ५ देखि सब त्यारभय अश्व असवार राम डंकाकी धुकारैं यकबारैं परी आनिकै। जांगरे अलापैं चोपदार भटथापैं दास सूरमुखी ढापैं राम शीश सुखमानिकै ॥ गैयर गराजे बाजी हींसिराजे बिश्वनाथ बाजे बहु बाजे बीर गाजे हैं कलानिकै। एकओर छरेछैल लोने निमिबंशिनके एकओरगौने रघुबंशी मंडलानिकै ६ पाय राम अंग संग बाढ़ो मोदको उमंग कौतुकी तुरंग कोटि कौतुक में मातोहै। मोरही सो मोरि मोरि मोरि नचै मोरही सो हाथके उठाये कईहाथ ठहरातोहै ॥ करत इशारो नाक नाकन बिचारो करै टापन उचाय बेगवारे अग्रता तो है। बामन कहाय एक पाय नभनाके याते महिमा बचाइ पछिताय रही जातोहै७चटकीली चोटी जीन जटितजवाहिरसों छिटिकी छबीली छटा पेटी पटा तंगकी। बाग जरबीली छाजै ज्योतिजाल जेवर स्यों झमकीली गति न उठावै अंग अंगकी॥ लौट पौट चंचलौत चौगुनी चलाकी चाहिचाकी मति मारुत औ माधव बिहंग की। रीझि रीझि सखनि समाजछाकी बिश्व नाथ कलनि बिलोकि बांकी राम के तुरंग की ८ घोरेरथ जोरेबहु कोतल अथोरे दोरे पाइ मद घोरे घोरे कुंभिनकी भीरहैं। भूषण सँवारे धनुधारे अनियारे प्यारे काम काय वारे घेरे नेरेबंधु बीर हैं ॥ शोभित शशी तैं मुख मंद मुसकातैं श्रोण सुनत शिकार बातैं सबुज सुबीरहैं। नौबत कलापै सुनि सुनत सतापैदैत्य कांपै

कहैं कापै चढे राम रणधीर हैं ९ श्वान स्याह गोश औ महान चीते सिविकान चले चढि त्योहींभीम केहरी सुकेसरा । कुही औ कुहेला बहरी हूं बच्चा बहरी औ बांसाबांसी नलगर लगरेट बेसरा ॥ धुतवा औ टोनवा सचान ज्वर्रा बाज वेस मूसा न्योरी जर्कटी चरष त्रितेसरा । फंद बहु बैलन फंदैतहैं कुरंग संग फंदी है बिहंग पिंजरानमें सुदेसरा १० ॥

रमणबिहारी०चौपाई ॥ सेना अग्र चले ध्वजधारी । नाना विधि बाहन असवारी ॥ तिनपाछे दुंदुभि वाद्यनकर । चलहिं बजावत मन उत्सव कर ॥ अवधनगरकी नारि रमासी । रामस्वरूप पियूष पियासी ॥ जहँ तहँ चढ़ि महलनपर देखहिं । लखि निज नयन सुफल करि लेखहिं ॥ कोउ लखिनयन मूंदि धरिध्यानहिं। रामरूप निज हियमहँ आनहिं ॥ कोउलखि कोटि मदन छबि रामहिं । बिसरी देह नेह निज धामहिं ॥ पुष्पांजली करहिं सब नारी । बिधिहिं कहहिं अंचलहि पसारी ॥ नारी सकल स्वरूप निहारहिं । यकटक लोचन पलकन डारहिं ॥ कहहिं परस्पर सकल बखानी । दशरथ धन्य धन्य सहरानी ॥ जो कछु सुकृत हमारे अहहीं । तो निजभाव इनहिंमहँ रहहीं ॥ इमि नारिनके मंजुल बयना । सुनहिं राम पंकजदल नयना ॥

संग्रह० ॥ सकल सैनयुत श्रीरघुराई । बिपिन निकट तब पहुँचे जाई ॥

रमणबिहारीचौ० ॥ जिहि बन थल बनचर बहु रहहीं । ताहि देखि गुह रामहिं कहहीं ॥ राजकुमार बिकटबन येहू । व्याल शिवा घूकन कर गेहू ॥

बिश्वनाथसिंह०कवित्त ॥ बकुल तमालकृत माल ताल औ रसाल शाल कचनाल औ प्रियाल जाल सोहरो । रंग रंगके बिहंगकूजैं गुजैं भृंगपुंज गैंडा गज गवय अनेक मृगसो भरो ॥ झरनानि सोरा कैसे झीले जल झरै कन झीने झीने उडि कीन्हे नाकहू को सीयरो । देववृंद देखैंछबि राघवेंद्र नंदतहां खेलत शिकारहैं

बिहार के मनोहरा.१ ॥ सवैया ॥ दूरिते देखि द्विरदनको दलपालक सिंहन छोरिप्रचारै। धाइधरै अतिक्रोधको धारिकै कौतुककुम्भ कदम्बबिदारै ॥ छींटेदे अम्बुके चेते तहां कहिबेटेहो बेटे तिन्हें पुचकारै। रीझिकै राम इनामदै मोदित दारिद दासनके दलि डारै २ हार में हेरिघने हरिना हरिहाथ लै टोपी हेरायकै छोरै। चूपाचले चटकीले चिते चखचाहिकै नेरै कुलांचलै दोरै ॥ मारि मृगानको कोपित होत ते पालकजे पुचकारि निहोरै। देखि कै रीझि सराहि सखानको देत हैं राम इनाम करोरै ३ हांकतभा-जत जोहि शशानको छोरिकै श्वाननको ललकारै। रामहू लीन्हे हैं लीन्हे कहैं सब त्योंहीं सुखी ह्वै सखाहू पुकारै ॥ लोटहिं कोई उठावत आशुहि धाइधरैं पुनि झारिकै मारै। कोई कहै निज नाथपै ल्यावहिं पालक पावैं इनाम अपारै ४ ॥

रघुराज कबित्त ॥ जुर्रा बाज बांसे कुही बहरी लगर लोने टोने जरकटी त्यों शचान सान वारेहैं। लैलै सखा हाथनमें चारोबंधु साथन में छोड़्यो पग गाथनमें कूकदै पुकारेहैं ॥ गगन गगनचर गगनचरनधारे धाये बीर बेगते गगनचर हारेहैं। रघुराज राम के निहारेते अपारे पक्षी बसे अभिराम रामधामके अखारेहैं ॥

रघुराजसिंहकबित्त ॥ चित्रमृग समर गवैगन बिलोकि बनटीले चटकीले ग्रामसिंह चले धाइकै। पीछे राजकुवँर धवायेहैं तुरंग-नको धायेहैं मतंग पीछे बेगनबढ़ाइकै ॥ रघुराजसिंहके समान सहसान गहे बिबिध मृगान कोपि कुत्ते अतुराइकै। रामजू के श्वान इतै खींचैं बनजीव उतै गोपुरकी ललना लेजाती हैं छोड़ाइकै ॥

विश्वनाथसवैया ॥ तीतर भाजिलुको यकझौंड़में हौदा तेहूंतकै वासालियो हरि। हांके छरीनके भाजे बिलंदसो मूठिचली तेहि बीच लियो हरि ॥ बीजुरी सो तेहिबेग बखानिकै संग सखानि-कै आनँदमों भरि। पालक को पहिराइ पोशाक त्यों भूषण भू-षिकै दीन्हे कितेकरि ॥

रामसखेसवैया ॥ आजु शिकारमें चारो कुमार नचावत बाजि परी कलनाहै । शूकर जो करसों दिखराइ करी बहुभांतिनसों छलना है ॥ रामसखे मिल्यो आनँद ओक मिटे सब शोक गई पलनाहैं । ऐंचैं इतै रघुबीरके श्वान उतै गहे गोपुरकी ललनाहैं १ बाज भरत्तको देखि शशा शशि गोदते भागि महाडरपाक्यो । जुर्रा जुरावर लक्ष्मणको लखि मोर सेनापतिको बल थाक्यो ॥ बहरी रिपुसूदन की दुर्गा मुरगा तिहिहेरि हृदय अति साक्यो । रामसखे हरि हाथते छूटी कुही कलहंस बिरंचिको ताक्यो २ ॥

बिश्वनाथर्काबित्त ॥ राज के कुमार को शिकार कलकौतुक बिलोकिबेको आये देव बाहननि लसि । श्वान चितै जुर्रा बेस देखत भदेस गये छूटि तेहिकाल पाल कान किने बसि बसि ॥ भाग्यो मोर औ मराल शशा मूसा शिखालाल रुकत न हारे देव केते बाग कसि कसि । तकन तमासो आये आपुही तमासो भये भाखैं सुरनारी मुखसारी मूंदि हँसि हँसि १ भांति अनेक भूरिपक्षी जे अहारी मांस पक्षिनके लक्षि लीन्हें तिनसों धराइकै । हांके भीति भागे बन मृगजे अनेक जाति मारे बंदूक बाण बर्छिन चलाइकै ॥ भय सब परमप्रकाशी रूप ब्रह्महीके कौतुक अनूप देखैं ध्यानी ध्यानलाइकै । करत उचार जो अपार शोक साने जानि जीवन उधारत शिकार राम आइकै २ ॥

रघुराजर्काबित्त ॥ जानि दुपहर बेला सखा सब हेलाकरि करि सरयू में रेला बाजिन जल प्यायेहैं । पुलिन निकुंजनमें भौंर भीर गुंजनमें तजिकै तुरंग बिशराम हित ठायेहैं ॥ जानिकै श्रमित सैन चैनभरि चारोबंधु ऐन ऐसे कुंजन में बैठे मनभायेहैं । जुरिगे समाज रघुराज राजबंशिनकी हँसत हँसावत शिकार सुखगायेहैं १ मातुनके भेजे मेवा करनकलेवा हेत ल्याये सूपकार सेवा आपनी देखायेहैं । व्यंजन अनेक मनोरंजन सुधारे मंजु भरि भरि चामीकर थारन धरायेहैं ॥ चारोबंधु बांटत सखानसरदारनको हीरा हेम भाजनमें भोजन उराये हैं । रघुराज रामको

सलामकरैं राजबंशी अतिसतकार सरकारनते पायेहैं २ खेलत शिकार चहुँओर बन ठौरठौर जानि दिन थोर बाणी सहित निहोरकी । भाखी सखाजाइ राम ढिग खरो जोरिकरऐसीहै रजाइ पिता भूप शिरमोरकी ॥ रघुराज आइयो अजोरही में भौन ओर चलो चितचोर कीन्हीं क्रीड़ा सुखओरकी । सुनिकै प्रतापी बैन चमू चतुरंग फेरयो अवधकी ओर चली अवध किशोरकी ३ ॥

संग्रहकर्त्ता० दोहा ॥ इत पियको करि ध्यान सिय दीने बहुविधि दान । पुनि पट भूषण लाइ सखि उरमहँ अतिहरषान ॥

बिश्वनाथ ॥ पहिराये नूतन बसन अँग अँगरागन कीन । भूषितकरि अँग भूषणनि शुभपद जावक दीन ॥ चौपाई ॥ तिलकनि रचि पुनि दिय शिर बंदन । किय दीरघ दृग रेखा अंजन ॥ दंतरागदै अधरराग किये । केशबास बेनी सु गूंदिये ॥ अंगनधुरि सुगंध चूरन बर । पहिराई फूलन मालागर ॥ कोऊलैकर अतर लगावै । कोऊ चमर करैं सुख छावै ॥ कोउ बनाइ बीरी अलि देहीं । सिय सेवाकरि सखि सुखलेहीं ॥ पुनि सिय सब सासुन गृहगई । सबनि यथोचित पूजित भई ॥ सबसों आशिष बहु बिधिपाई । फिरि कौशिल्या भवनहिं आई ॥ दोहा ॥ शीशनाइ आशिषलई बहु सेवकाई कीन । शासनलय बैठतभई मन रघुबर महँ लीन ॥ चौपाई ॥ सुनतै सुखद राम असनामै । होत रोमांच अंग अभिरामै ॥ नयनन उमड़ि अंबु जब आवै । माइक सुधिकहि सीय छिपावै ॥

संग्रहकर्त्ता ॥ सिय उदासमन लखि महरानी । कथा कही सुंदर मृदुबानी ॥ सुनि बर बचन सीय सुखपाई । लागि सासु पद सदन सिधाई ॥ क्षण क्षण प्राणपती सुधि आवै । खान पान मंदिर न सुहावै ॥ वहां राम प्रिय सखन समेता । मृगया करि पुनि चले निकेता ॥

रमणबिहारी० दोहा ॥ जे मारे बन जंतु बहु शकटन तिनहिं लदाइ । राम चले सेना सहित बर दुंदुभी बजाइ ॥

बिश्वनाथसिंह० कवित्त॥ उलटे अखेट खेल छटी सेना उदभटी सखा अटपटी बातें हास लपटानी है। तरल तुरंगनके टापनसों कटी धूली हटी नहिं नाकधुव धामोंना पटानी है॥ रामै देखि नाकनटी कामै करकटी पाग लटपटी अज्ञ हालो धूरि धुरि टानी है। नारी पीतपट पेखिबेको हिय अटपटी चख चटपटी नाहिं अँटन अँटानी है १ धाम धाम धूमधाम रामकी अवाई धाम पाउँडे बिछाये सौध ध्वजन बँधाये हैं। बाजन बजाये जुरि मंगलन गाये दधि दूबन बिछाये फरि कुसुम लगायेहैं॥ रंकनिधि पाये सब मोद उरछाये अति नेह सरसाये पुरबासी उठिधायेहैं। बचन सुहाये एक एकसों सुनाये मनभायेलै शिकार रघुनंदआये आये हैं २ प्यादे सेना भारी पीछे बाजिन सवारी कसी कनक अँमारी नीके गजन गरट्ट हैं। चाके घहरात हैं पताके फहरात व्योम बिलसि बिमान आततांकें देवठट्ट हैं॥ कोई बगमेलें कोई भालनको खेलें कोई शक्तिनको मेलें सुख संयुत सुभट्टहैं। मध्य दल गैल मैल करत सु ऐल फैल चढ़े चारो छैल बाजि सिखे-कला नट्टहैं ३ तन सुकुमार मारहूंते छबिसार कलमुकुट किरीट बार जरतार बागे हैं। सोहैं गले हार हैं तुरंगन सवार करे सेना के श्रृंगार उर रामराग रागे हैं। दीरघ हँकार कोकिलाहूंते बचन प्यार कैयकहजार संग संघत्यों न भागे हैं॥ ऐसे चोपदार खासे खासे बरदान सोन सोंटे बरदार सरदारनके आगे हैं ४ जांगरन गान ढोल नौबति निशान भेरी तान जान चोपदार शब्दकान मोदयो। करि अनुमान प्राणप्यारेकी अवाई थान भूल्यो तनभान प्रेम पान मोदभोनयो। बिरह कृशान सुख आशु न बुतान सुधि-पाइके अपान चित्तचाहिबेको ह्वै गयो॥ संग लै समान सखि जानकी पयान कीन्हो सदन सो पान महान शैल सोभायो ५ सवैया॥ लै भरतादि बधून अनूप पगी पिय पेखनकी अतुराई। संग सखीनके सीय उमंगसों आइ उतंग अटा अँगनाई॥ जोहि जिन्हैं दिबिदारनकी दिन दीपति दीपति देती देखाई। ऐसी

अनेक मलीन जमाति समाति न सौधनकी समुदाई ६ कोई कह्यो ताके नाके उड़त पताके पुंज बिमल बलाके पांति जांति याभुमंडी हैं। तरल तुरंगनको गोनसाई झंझा पौन चौंर चारु धुरवारी सरस उमंडी हैं॥ दुंदुभी अवाज पूरो गगन गराजचाय पीठि चपलानकी चमंक चारु मंडीहैं। सिंधुरानि सिंधुरानि रेख सुरचाप वेषअरषे अनंद सेना घनसी घमंडीहैं७भालेको भवावैपाग छोर छूटिभावे हास छटाछहरावै छनछटासी विछावैरी। बाजीको नचावै कहूं मंडल फिरावै कहूं व्योमको उड़ावै देव दारन लो-भावैरी॥ कलानि लखावै रामै मोद उपजावै बैन सखन सुनावै श्रुति कीर्ति मन भावैरी। बिश्वनाथ गावै देखि फूल बरसावै देव लषणको लघुभैया शत्रुहन आवैरी ८ पाग जरकसी कसी ललित कलंगी गसी भासी कांति शीश पेंच अति द्विति रासीकी। भाल अधशशी तिलकाली काम वांगुरीसी भौंहैं असीनैन छवि खंजन हुलासीकी॥ नासा तिलक फूल लसी अलिकाली धूलि धसी लहर सुधासी खासी सरसीभ हांसीकी। भावै उरबसी उरवसी ह्वैके फँसी उरबीस बिसेवसी मूर्त्ति उर्मिला बिलासीकी ९ तुरंग उमंगी में सवार है निषंगीकर धनुष त्रिभंगी महाबीर समजंगी है। भृंगीपांति अलकैं अनंगीचाय भौंहैं चारु अमृत तरंगी हांसी तिलक सुढंगी है॥ ललित कलंगी पचरंगी पाग शिरसोहै पहिरे सखा संगी पोशाक बहुरंगी है। छवि सरवंगी बैन जाके वरव्यंगी मांडवीको रसरंगी देखि देवदार दंगी है १० अति चंचल बाजि नचावतहै अति नैनन चैन मचावत है। तनकी छबिसों क्षिति छावत है नभ देवतियानि चकावत है॥ युग व्यंगकी बातन सों सब सैनहि आनँदसों बरसावतहै। रस उज्ज्वल जावत श्रीनिधि आवत राम हिये भल भावतहै ११ कल कुंडललोल कपोल डुलैं ललना अलिको ललकावत है। अलकैं हलकैं छलकैं छबि त्यों मुसक्याइ सखानि छकावत है॥ मन भावन बाजि नचावत भावत छैल कलानि लखावत है। यह जानकी दूलह देखिभटू

दृग दूसरो ओर न आवतहै १२दुहुंओरनि चारु चलैं चखहैं चम-
काहंट व्योम मचावत है । करि खेल कोई प्रिय संग सखा कहि
बात हँसी उपजावत है ॥ चख चारु नचाय छबीलौ लखा मुस-
कानि छटाछिति छावतहै । मनभावन सीय सुहावन देह दयामन
मैन बनावतहै १३मंडित रेणुसो कुंचित कुंतल कानन कुंदकली
कलकानहै । मंजुगरे गजरानिमें गुंजत आवत पुंज अलीनलुभान
है ॥ सोहत स्वेदकेबिंदु कपोल लसी चखकोर त्यों ओरसखानहै।
पेखिकै पीय सुनै सुखसीय जो बाहिर सों बिश्वनाथबखानहै १४
छाकी सबै रघुनंदन बेष समाजते त्योंहीं सिया अलगाई । भीने
भरोखन में दृगदै दुरि देखतही सुखमा सुखछाई ॥ राजकुमा-
रनि मध्य लसै पुरनारि निहारिके चारिहु भाई । आनँदआंसुन
की भरिलाइकै फेरि सुफूलनकी भरिलाई१५सोहीपोशाक हरी
सिगरी त्यों बिभूषणहूंकी रही छबि छैहै । आननइंदु अमी लहरैं
शशिसी मुसकानि बसी कर नेहै ॥ श्रोणलोंसोन सरोजसे नैन
बनै न बखानत बैन रसेहै । रामैंनिहारि यों धामें बिसारि छकी
जनु जाल भो चित्र लिखेहै १५ ॥

रामसखे०दोहा ॥ मुरके युवती दृगकमल बिरहचंददिन लेखि ।
रामसखे फूले उदित सांभ अवधि रविपेखि ॥ यहां रूपकी चोट
को करें नहीं दृग कोट । रामसखे प्रभुरूपकी सो कहजानेचोट ॥

रघुराज०कवित्त ॥ शरदघटासी ऊंची अमलअटामें चढ़ी बिज्जु
की छटासी छटा छावैं पुरनारी हैं । चितै चतुरंग चमू भरि कै
उमंग उर साजे आरती को लिन्हे चामी कर थारीहैं ॥ रुचिरुचि
रंग रंग विविध प्रसूनलाजा हर्ष उतकर्ष कीन्हे बर्ष तयारी हैं ।
रघुराज सहित समाज राजबंशिन की आवैं कोशलेशजू के कुँवर
शिकारीहैं १ बिज्जुछटा सी अटानि चढ़ी अति मोदमढ़ी दृग
नारि निहारैं । मोतिन तंदुल लावनकी फल फूलनकी बरषा
बिसतारैं ॥ भांति अनेकन अंबर भूषण श्रीरघुनंदन ऊपर वारैं ।
थार सँवारि कै बारहिबार छकी छबि आरती अंबुउतारैं २अवध

बजारबीच आईहै सवारी जब देखि पुरनारी तन मन धन वारी है। चामीकर थारनमें आरती उतारी आशु बरषैं प्रसून लाजा मोद भार भारी है॥ लेतीं बलिहारी मनहारी मंजु मूरति की राजमाधुरी निहारी पलकनेवारीहै। रघुराज कोटिन अनंग छबि वारी छबि वारी बैसवारी देखि छैलन शिकारी है ३॥

बिश्वनाथ० ॥ लैफलसैं हुलसैं बनिता बिलसैं बहुमैनका मानहु आनै। त्योंही बिराजतीं बारबधू लियमंगलद्रव्य किये कल गानै॥ बाजत बाजने वृंद गयंदनि मंजु पताकनि पुंज बितानै। बोलत जांगरे टेरैंनकीब त्यों बंदिहु बंशके बाने बखानै १ बांके कसे बिलसे बरबीरन हीरनके शिर पेंच दिपैंहैं॥ मंजुमहा मुकुता कलँगीन त्यों माल मणीन प्रभापसरैंहैं। हास बिलास औ कुंडल लोलकी गोलकपोल छटाछलकैहैं। भ्राजत्यों भरतादिक छैलनि छाके बधून के वृंद लखैहैं २ बरबाजि चढ्यो उमड्यो छबि छैल मड़ावत बीथिन माहँ अरो। निज छाहँ छबीली लखै छकिकै अलि जात शिकार शृँगारभरो॥ झुकि मैं जु झरोखनि सों निरखी इन नैननिमें रसखानि परो। तबतें दरशावतही अबलों नहिं जानिपरै मोहिं काहकरो ३ अलकैं ललितलोल हलकैं कपोल गोल झलकैं निचोल मोती जाल जगमाथ हैं। चलैं चौंर दोनोओर भूपति किशोर आछे और सब आगे पाछे सोहैं सखा साथहैं॥ आवत शिकारसों शृँगार बन फूलन के गजरे अनूपगूंधे बेलागूंमी गाथहैं। राममुख मंडित अखंडित मयंकदेखि दिल देवदारन के रहत न हाथहैं ४॥

रघुराजसिंह० ॥ मंद मुसक्याइ लेत जियरो लोभाइ नैनपथह्वै हियमें आइ फेरि टारे ना टरैं। कोटिन अनंगनकी सुछवि तरंग अंग अंग प्रति होति बहुरंग सम क्योंधरैं॥ डहरडहर परी कहर शहरबीच चहर पहर माचि रह्यो तेहि पहरैं। रघुराज कौन कामिनी जोकरै कुलकानि कोशलेश कुँवर कटाक्षनकटाकरैं १ सोहैं सबै चलि चौक चमूयुत बादक बाजनवृंद बजाये। यानन

किंकिणि बारनघंटनि बाजिन पैंजनियां रवभाये ॥ त्योंहीं रहेलसि सूरमुखीन पताकनके गण अंबर छाये । मागध सूत बखानत राम रिझावत ढाढ़ी रबालै गाये २ रानी महामुदमय अवधेशहु जोहैं अटानि चढ़ेअतुराने । धावनधाय सुनाइकै आवनि बारन बाजि लहे मनमाने । चारु मणीनके चौकरचाय तहां मणि-मंडित मंजुलठाने । गावत गायन चायन चायन राजत राम शिकारबखाने ३ धाइनि चारिहु भाइन चाहिकै चूमिमुखै सुख आंशु नहाये । रामै निहारि निमेष निवारिकै मोदित भूपशरीर भुलाये ॥ जातते गाये न आनन एकई पेखि प्रमोद जो मातन पाये । दै द्विजदेवन दान महान नरेशकुमारन बेगि बोलाये ४ संग सखान समेत अनंदसों जाइ पिता पद बंदित भाये । सूंघिकै शीश सबैके शिकारके कौतुक राउ क्रमै कहवाये ॥ फेरि दिये फल बांटि प्रशंसि लै भीतर सानुजराम सिधाये । बारि उतारिकै बारि मनी मुख चूमि महामुद मातन पाये ५ कौशिला आपने पाणि सों आनि कलेऊ दियो सो बखानिकै खाये । राम सखान समेत अँचै करि बीरी मुखै कढ़ि बाहिर आये ॥ हास बिलासकै लेत हुलास दुवारलों खास सखा पहुंचाये । नाथ निहारि लियो सिय मोदसों पावत पार न शेशहु गाये ६ उतरी सियनारी सखीनके संग हिये अति मोद उमंग भरी । उतरे रघुनंदन द्वारमें देखि करी कल आरती हीय हरी ॥ उर अंचलके चलतै पिय चंचल डीठि चली तरसी सकरी । रसना रददाबि उतारि दरैं लैगई घरै पीय करैं पकरी ७ ॥

संग्रह० दोहा ॥ बैठेजाय सिंहासन राम सिया सुखछाय । बोली सखियां जोरिकर उरमें अति हुलसाय ॥

बिश्वनाथसिंह०पद ॥ सुठिसुंदर यह सिय पिय अँखियां लागि रूप रहैं । सकल सुकृतकर फल यहपावैं बिधिसों बाल कहैं ॥ जनम जनम जनमाहिं अवधहिमें पैनहिं पलकगहैं । बिश्वनाथ छबि लखि लखि अनिमिष लोयनलाहु लहैं १ अँखियन बिधि

तुव कहाबिगारयो। येते बड़े जानि इनऊपर नाहक निमिष सवांरयो ॥ यकतो सांझ सकारे निकसैं छैल छबीले बागें। बिश्वनाथ ताईपर ताकत पलक निगोड़ी लागें २ ॥

रामसखे०रागश्रीबडोताल ॥ अहोपिय आरति जिय लगी तिहारी। सुंदर अवधबिहारी ॥ बिनुदेखेयह सांवलि मूरति एकहु पल न सुहाई। बदन चंद मुसुक्यान माधुरी चितबित लियो चुराई ॥ भौंहन अरु आंखिन जुलफन बिचभुरकीसी शिरडारी ॥ जैसिय मुकुट कि लटक बसातिउर निशिदिन टराति न टारी। जबलगि रहत शिकारकेलिमें तबलगि मन अकुलाई। झांकहिं जाइ झरोखन क्षणक्षण सांझ समय अति चाई ॥ सुनहु सुजान प्रेम रस सानी बिनती ललित हमारी। नैननतें न होउ अब न्यारे रामसखे बलिहारी ॥

संग्रह०दोहा ॥ हेमथार भोजन बिबिध परुसिधरे नवबाल। पुनि बोली करजोरिके ब्यारुकरहु ललि लाल ॥

कृपानिवास० पद ॥ दोउ जेंवत हास बिनोद करि रसरंग उमंग अंग अंग बरसै। परसि परस्पर स्वातिक मातिक ग्रास उठै मुख ना परसै ॥ सुकर सुधार सकौर सियाको राम जिमावतहितदरसै। दृगछोर सिहाय सुभागभरे कर चूमिमहा मनमें हरसै ॥ गीत बाद्य नवतार तरंगनि संग सुहागिनि सुख सरसै। कृपानिवास प्रसाद मिलै मोहिं जाको महामुनि मनतरसै १ ब्यंजन समय बिनोद नवल नवनेहनयेकर पैकररी। मानो पंकजकोशभरे कलकेसरकौर कमलटररी ॥ कंजबिलोचनि उरझ बिमोचनि बारि सुधा रससों भररी। कृपानिवासी सबकर बैनन परस बदन सियजू बररी २ भोजन करत प्रभंजन नंदन प्रेमाकर सुंदर जगबंदन। शेष मैथिली रमण थारके सने कमलकर मुख अरबिंदन ॥ बिबिध प्रकार स्वादहित मूरति कृपा चारुशीला अधिकारी। नेह बिवश बर सुघर राम सिय स्वकर जिमावत कर ककनारी ॥ सखी सकल रुचिकारि प्यारसों देत बदन हँसिकौरे। यह बलिशेश

प्रवेश समयको मादक तर कर जोरि निहारे ॥ पूरबरोचक पाक बताये पाये हनुमत सुखद खवाये । सरजू पय शीतल जल झारी रूप लता ललचाव पिवाये ॥ षोडश कोटि सखी सब धामहिं लेत प्रसाद प्रसादी संगहिं । देखत लाल बिलास हास रस खास खवासिनिके रंग रंगहिं ॥ समय समय सुख भक्त भोगिया अचवन करि फिरि मोहिं बुलावैं । कृपानिवासी टरि प्रणाम करि गुरु पनवारो हरषि उठावैं ३ ॥

संग्रह० दोहा ॥ चौपर खेलत राम सिय मुदित लखाति सब बाल । कोइ कहैं जीतहि लाड़िली कोइकहे जीतहिंलाल ॥

कृपानिवास० राग सोरठ जैजैवंती ॥ लाल तिहारी चौपरि ने चित चोरि लियो है । पांसे में फँसिरही किशोरी नवनेरी ललकार पार यह सार मार मै मार मरोरी ॥ दाव घातमें भावभई है हार जीतकी प्रीति निचोरी। कृपानिवास श्रीरामरसिक पिय बाजी में राजी करिगोरी १ राम रसिककी चौपरि में चतुराई भरिपाई । ज्यों खेलै मनलाई ॥ दंपति जीते रसिक सुजीते हारि कहत सब सार बचाई । युग जीते फूटे जुरबेकी चाह चौगुनी चेत चिताई ॥ कृपानिवास गुरुकृपा पठाई । काचीकरि पाकी घर आई २ ॥

संग्रह० दोहा ॥ नींद बिवश होय रामसिय उठि तब कीन्हेउ शैन । सहचरि परदे छोड़ि सबआई बाहिर ऐन ॥

श्रीतुलसीदासजी०पदरागललित ॥ भोर जानकीजीवन जागे । सूत मागध प्रबीण बेणु बीणा धुनि द्वारे गायक सरस राग रागे ॥ टेक ॥ श्यामल सलोने गात आलस बश जँभात प्रिया प्रेम रसपागे । उनींदे लोचन चारु मुख सुखमा शृंगारु हेरि हेरि हारे मार भूरि भागे ॥ सहज सुहाई छवि उपमा न लहै कवि मुदित बिलोकन लागे तुलसीदास निशिबासर अनूप रूप रहत प्रेम अनुरागे ॥

कवि केशव० दोहा ॥ जागत श्रीरघुनाथके बाजे एकहिबार । निगर नगारेनगरके केशव आठहु द्वार ॥

सयह० दोहा ॥ प्रात कृत्य निरवाहिके दीन्हे बिप्रनदान । नीति प्रीति पालक सदा सिय पिय परमसुजान ॥

रघुराजसिंहछंदचौबोला ॥ सोहत अवध तखतपर दशरथ बिभव शक्र संकाशा । फेरत शासन नवौखंडमहँ मित्रहरष अरिनाशा ॥ नित नवआनँद होत अवधपुर सुखरासी पुरबासी । रघुपतिशील सनेह सुभाउ कथत नित दरशन आसी ॥ चढ़िमतंग कहुँ चढ़ि तुरंग कहुँ चढ़िसतांपुर माहीं । बिहरत सखनसहित सुखदायक प्रातहुसांझ सदाहीं ॥ प्राणहु ते प्रिय राम जाहिं नहिं असकोउ त्रिभुवन नाहीं । काकहिये प्रभु अवध प्रजनको बसहिं जे प्रभुभुज छाहीं ॥ पुलकित प्रजा प्रमोदित भे सब कीन्हे जयजय कारा । युग युग जियें जानकी रघुपति हमरे प्राणअधारा ॥ उठिप्रभात करि प्रात कृत्यसब करहिं सो मातन काजू । पुनिगुरु बिप्र काज निरधारत गुरुगृहचलि रघुराजू । याम दिवस बाकी रघुनंदन निकसहिं सहित सवारी । अथवा मृगयाहेत जातकहुँ सुंदररूप शिकारी ॥ सांझसमय पितु निकट आय पुनि अपने महल सिधारे । लषन सखनयुत लखतनृत्यनित सुनतगान सुखसारे ॥ बीतत याम निशा जननीगृह करहिं सबंधु बियारी । करहिं शैन पुनि कनकभवनमहँ मोदित अवधबिहारी॥अतिप्रसन्न पितुकारजलखि करहिं बखान सदाहीं । सज्जनसाधुबिप्रपुरबासिन काहिं प्राणप्रिय नाहीं ॥ पुरजन परिजन सभ्य देशजन सज्जन भूसुर साधू । राम सनेह शील गुण बांधे लहे न सपेनहुबाधू॥ कियेबिमल यशधवल दिगंतन बिक्रमबिश्वबड़ाई । रमारमण सम सकल गुणाकर को पावै समताई ॥ दोहा ॥ ऋतुपति ग्रीषम पावसहु शरद शिशिर हेमंत । जनकसुता युत सुखलहत अवधनगर निवसंत ॥

इतिरामप्रतापचित्रकारबिरचितेश्रीसीतारामबिवाहसंग्रहपरमानंदत्रैलोक्यमंगलमृगयाइक्कीसवांप्रकरणसमाप्तः २१ ॥

अथ हेमंतऋतु बिहार ॥

संग्रह

अनेक सद ग्रंथोंसे

बाईसवां प्रकरण ॥

रघुराज०कवित्त ॥ हेरिये हवेलिनमें हेलिनके हेलामचे हरबर होत हुब्ब हौंसहू शहरमें । हृदिमें हुलास हिलिकै हँसनहेत हँसहौंसलाते हीन हंससे डहर में ॥ ह्वै गयो हेमंत हद हायन में हानि हनि हाउको हटाउनहिं अहनि पहरमें । रहैंक्योंहूं बास हिय हियके हटाये हठि हार हेरवायदेहु हिमकी हहरमें १ सरमें सरितमें सरोवरमें सघन सहेटनमें सदन सिविर है । सैनमें सु-सैननमें सब सजनीनहूंमें सज्जन समाजमें दिशाननके शिरहै ॥ सोखमें सरोपहूमें शीलमें स्वभावहूमें सांकरे सहजहूमें शीतकी सफरहै । रघुराज सीते सुनैसिखिको सोहागसांचो सरस्यो सरस सनसारमें शिशिरहै २ सोखभे सदनमें समीर ना सोहात श्याम शैल सरितानकी न सैर सुखदाई है । सिरिफ सोहात सिखी सलिल सरोजसुम सदल उसीरहूं सजाई शत्रुताईहै ॥ रघुराज शशि की सहाई ते शिशिर शान सरसै सरस सूर शोभा सरमाई है । सुख सरसावनी नसावनी की सीत शेखी सांची सजनीन ही की संगति सोहाई है ३ ॥

बिश्वनाथ०पद ॥ सियसँग बैठेश्रीरघुनंदन कहेउ लखहु हेमंतै । परम सुखद यह शीत भीत तिय लागिजाहिं गरकंतै ॥ बनियन को उपकार करत रजनीको बहुत बढ़ावै । निज प्रताप करि तरणि तेज हत शीतल जगत बनावै॥जेहि जेहि यह प्रिय लगत

न तेहि कोपित हिम ते जारैं। याते निदरि सकल ऋतु निज गुण हास कुंद मिस धारैं॥ उदय होहिं जगहित निज पूषग लजि भजि आशुहि जाहीं। याहीते प्रगटै यहि लोकहिं छोटे दिवस देखाहीं॥ रिपुते भीत रिपुहि के रिपुको करियमीत अस नीती। असगुनि अगिनि दिशा में ऊगत करि अगनिहिं सों प्रीती॥ बिपति परे सब जगत नीति बिद सांची नीतिहि गाई। अनिल अनल को सखा दासको भो अब शीत सहाई॥ पाला सों पूरणकै पुहुमी पेखहु परम सोहायो। बिश्वनाथ जनु महा सुयश निज जगत सुपेत बनायो १ यह हेमंत महँ अति सुख लेखी। तिय पिय बिनुहुँ कम्पित पुलकित बिहरन उत्कण्ठितहि लेखी॥ पावन सहित हिमिसर अगाध को लिये निज सरिस बनाई। अचरज यह बियोगिनिन आवत आंसुनि हियरै राग रमाई॥ जो तिय परम सुकिया काहू को नाहिं बदन देखावै। ताइ के अधरन में क्षद रद यह रसिक हेमन्त बनावै॥ याकी रजनी जो बियोगिनिन महा काल सी जाती। बिश्वनाथ सोई संयोगिनि क्षण ही इव दरशाती २॥

देवस्वामी०पदरागधनाश्री॥ राम को हिमऋतु में शृंगार गेंद बरण सबभार॥ गेंद बरण पट भूषण तैसे तुरंगनपर असवार॥ धनुष बाण दोउ करन बिराजत कमर कसे तरवार॥ संग लखन सुठि छरे छबीले बहुतक राज कुमार। चँवर ढुरत शिर छत्र लसत अति बरसत सुमन अपार॥ सैन सहित श्री राम समय में आवत खेलि शिकार। डंका धुनि हय गय रथ गाजत उठि रहि जै जै कार॥ होत आरती मंगल साजत पुरजन बिबिध प्रकार। नगर देवता हरषि उठी जनु देखि राम छबिदार॥

बिश्वनाथकृतपद॥ एक समय बैठे रघुनन्दन सिय सों कह्यो शिशिर नृप आयो। लीन्हों यह कै अमल आपनो धूमकरी सु धुजा फहरायो॥ क्रमही ते रिपु प्रबल पराजय होति अहै अस नीति बिचारी। क्रम क्रम लागे तेज बढ़ावन पाय सहाय शिशिर

तिमिरारी ॥ लोध पुहुप की उड़ी पराग यह पंखि परति प्रकृति नभ छाई । संग बसंत अनंग अवाई रेणु अगिली सैन पठाई ॥ योगिनिहू मन लीन्हो बश करि मंत्रित मदन बिभूति किधौंहै । कै बिशुनाथ बसंत चलायो फैल श्रृंगारहि चूनरि सोहै ॥ यहि ऋतु कामहि बागवान अतिसुघर बनोहै । बिधि बिसकरमौ जाहि निपुण ते निपुण गनोहै ॥ पत्रपुराने झारि श्रृंगारै रसे भिगोये । आलबाल उपबन बन बीच बसंतहि बोये ॥ पुनि पिय बिनहूं तियनि शिशिर कहावै । याही ते सबलोक नाम यहि शिशिरहि गावै ॥ अलभ जानि पुनि तिय कुच गरमी मोद महाई । बिश्व नाथ पिय तियनि पांय परि लेत मनाई ॥ यहै श्रृंगारै बिभव प्रगटि यशदेत बसंतै । बरणहिं सिगरे सुकवि प्रथित गुण अहैं अनंतै ॥ जहँ तहँ मुकुल रसाल मधुप मकरन्द पिये हैं । बिश्व नाथ तजि योगिन मानस मृता जिये हैं ॥ नहिं अति शीत न गरम शिशिर ऋतु सुखद बिराजै । पुनि शीतहूं औ गरम बिरहिनिन योगहिं छाजै ॥ सित बसंत पंचमीते सेवा करत बसंतौ । शिशिर अधिक ऋतु बिश्वनाथ स्वाधीनहिं कंतौ ॥ सुनि सिय पिय कह फागुन गुनि गुनि कोउ कोउ मुनि अस बरणत अहईं । गुनियतु फागुन चैत ऋतुनपति माधव कविगन हठकरि कहईं॥ इमि बरणत बिहरन उतकंठित दंपति कछु दिन मुदित बिताये । कह बिश्वनाथ बसंत पंचमी आवतभे पुरकहँ हरषाये ॥

युगलानन्यशरण० पद ॥ आयो बसंत रसवंत आज । सजिसाज सोहावन सुमन साज ॥ सुन्दर मन मोहन सुछबिछाज । गावें गुणपिक मधुकर समाज ॥ पल्लव नूतन मंजरिन व्याज । निज यश सरसावत कलित काज ॥ ऋतुराज रिझावत महाराज ॥ रघुराज बंश शिरताज राज । बीणा डफ बेणु मृदंग बाज । अलि युगल अनन्य सुनत सुराज ॥

देवस्वामी० पदराग बसंत ॥ सिरी पंचमीपाय सियाबर को सजिये श्रृंगार गुलालनसों । श्वेतचांदनी तर ऊपर रचि पूजै

चनक रसालनसों॥ कनक रतन भूषणसे सजिकै औ मोतिन की मालनसों। रामदेव की आरति कीजै बजै साज स्वरतालन सों॥ मकरअयन से कुंभअयन लौं सियबरको ऐसो शृंगार। सिय नीलांबर राम पितांबर मनहुं युगलमें युगल बिहार॥ प्रथम यामके भीतर करिये गरम सुगंधित सबउपचार। इष्टदेव को ध्यान राखिउर बार बार लीजै बलिहार॥

कृपानिवास०पद॥ देखौ बसंत कंतबल पायो कैसो बन्यो बलवंत आजरी। प्रमदागनमनजीतन कायो काम पठायो साजरी॥ भई हैं अधीरा धीरा धीरा नागरि शीला शील हरयो ऋतुराजरी। कृपानिवास रहस्य रसमाती बोलति युवति बिगतलाजरी॥

बिश्वनार्थसिंह०पद॥ बसंती बस करिये रघुनन्दन। अति अनुपम सिंहासन सोहै चौंर करहिं अलि भरी अनंदन॥ लै रसाल मंजरिनि पल्लवनि गायक गेंदुवा चले बनाय। करि प्रणाम आगे धरि दियसो बिश्वनाथ हिंडोलहि गाय॥

कृपानिवास०पद॥ शुक्ल पंचमी आई सुहागिनि सुघर सुभगतन सजिय शृंगार। आगम फाग बसंत मनावो राम रसिक सँगरस को त्यौहार॥ बरष दिनन्ह के मनके मनोरथ सुफल फलनकी आई बहार। कृपानिवास सिया स्वामिनि सुख श्याम सखा हित सकल उधार॥

रसरंगअली०पदसवैया॥ सब जोरि समाज शृंगार किये लिय मंगल भाजन सौंज भली। निकसी हुलसी नव यौवन में रस रंग उमंग सों गाय चली॥ मणिमंदिर कुंज निकुंज बनी अली पुंज सुगन्ध लौं फूली कली। रस रंग भरी बहु हास करी सिय लालै बसन्त बँधायो अली॥

बानाअली०पदगजल॥ पहिरे बसन बसंती यौबन उमंग भरा। श्री अवध नृप लाल छबि लखि मार मन मरा॥ चीरा सुरंगी शीशपर सित पितरंग हरा। कँल्गी झुकी शिर पेचपरमोती लरें

परा ॥ ऋतुराज साज साजिके क्या क्या न रंग करा । ज्ञाना अली जाहिर सदा जुल्मी जबरवेरा ॥

कृपानिवास०पद ॥ प्रथम बसंत समाज नवल सुख पवन कुंवर दरबारं । राम रसिक सब नव रस गुण भरि गावत नवल बिहारं ॥ नवल प्रेम नव रहस्य गान रस बांटत परम उदारं । कृपा निवास शरण सुखदायी श्री हनुमत सिरदारं ॥

अग्रअली०पद ॥ आजु बसंत पंचमी पूजा श्रीरघुबरको बधाई । कनक कलश सजि भरि धरि शिर पर आंब बौर जब ल्याई ॥ चोवा चन्दन और अरगजा मोतियन चौक पुराई । रतन जड़ित पिचकारी कर गहि केशरि रंग भराई ॥ तकि तकि मारत श्री रघुबर को अबिर गुलाल उड़ाई । रघुनन्दन सिंहासन बैठे निरखि निरखि सुख पाई ॥ छोरब छिरकब भरत परस्पर ऐसो खेल मचाई । नवलबसंत नवलबन मौरे नवल लाल मनभाई॥ अग्रदास गावहिं श्री रघुबर फगुवा परम पद पाई ॥

कृपानिवास० पद जंगला ॥ रंग रंगीले रंग होरीखेलत।रंगमहल रंगभरि भरि दोऊ रंगउमंग अंगपर रेलत ॥ रंग छके रंग गौरि श्यामापग रंग अनंग उघरि सुख केलत। कृपानिवास रँगीली सखिजन सियबल्लभ रंग नैननिझेलत ॥

युगलानन्यशरण०पदगजल ॥ भावे मुझे सखियों सुनो मनमोहनी होरी । मतवारनी जिसमें भई रँग भीजती गोरी ॥ सिय श्याम की प्यारी सदा कमली करीसनी । निज परकी होश कुछनहीं बेहोश सी गोरी ॥ श्यामाके साथ सहचरी सेना नहीं थोरी । सँग सांवरी के सुखसने सहचर सखी सोरी ॥ पिचकारियां कर कंज गुलालोंसे पुरझोरी । किसहीको कोइ माने नहिं करती बरजोरी ॥ इसकेसिवाय सौजकहे तिसकीहै मतिथोरी । जिसमें हमेश जीती जनकराज किशोरी ॥ जी युग्म सखी भावती होरी सुरंग बोरी । गुनगाइये तर तानसरस सानसे भोरी ॥

कृपानिवास०पद ॥ राम रसिकसों खेलिखरी जू जनक लली

अलबेली छबिसों । केसरि बूंद झरै वल झलकें ॥ लाल गुलाल कपोलनि सोहै झीने पट लपटेहैं तनसों । मिलि उघरेअँग महा द्युति झलकें। पिचकारी करकमल धारति चोंप भरी चित चंचल ललकें । कृपानिवास सिया स्वामिनि को रूप अनूप बिलोकत प्यारो । खुले नैन कल परत न पलकें ॥ पदकाफी ॥ बेसरि सों केसरि की बूंदें ढरि ढरि सुभग कुचनपर आवत । चंद्र कुंडली युगल कोक शिर झर जनु मनमथ झार सिरावत॥ हेरतकर फेरत पुनिप्यारोचाटत फणि मनु गरलगिराबत । कृ-पानिवास सिया स्वामिनिकी होरी में छबि छैल छकावत ॥ राग सोरठ ॥ प्यारी जीरा सालूड़ासों रंगझरै । मनु शशि नभचढ़ी अरुण बादरी संगम दरश ढरै ॥ हँसत श्याम मुख मोरि लजा-वति कामण कौतुक करै । कृपानिवास सिया स्वामिनि लखि रामरसिक मनहरै ॥

संग्रह०दोहा ॥ पिय प्यारी सुखमा निधी अलिन अघावत नैन । रंग बोरी जोरी यहै सदा बसहु उर ऐन ॥ खेलि बसंत अनन्द सों चतुर सखिन के संग । करि मज्जन बैठे मुदित सिय पिय सहित उमंग ॥ दिवस याम बाकी रह्यो राम सिया हरषाय । अनुज सखन को तुरतही लीन्हें निकट बुलाय ॥

श्रीतुलसीदासजी०पदरागबसन्त ॥ खेलत बसंत राजाधिराज। देखत नभ कौतुक सुर समाज ॥ सोहैं सखा अनुज रघुनाथ साथ । झोलिन्ह अबीर पिचकारि हाथ ॥ बा-जाहिं मृदङ्ग डफ ताल बेनु । छिरकहिं सुगंध भरैं मलय रेनु ॥ उत युवति यूथ जानकी संग । पहिरे पट भूषण सरस रंग ॥ लिये छरी बेत सौंधे बिभाग । चांचरि झू-मकं कहिं सरस राग ॥ नूपुर किंकिणि धुनि अति सु-हाइ । ललना गण जब जेहि धरहिं धाइ ॥ लोचन

आंजहिं फगुवा मँगाइ। छांड़हिं नचाइ हा हा कराइ॥ चढ़ि खरनि बिदूषक स्वांग साजि। करैं कूट निपटगई लाज भाजि॥ नर नारि परस्पर गारिदेत। सुनि हँसत राम भाइन्ह समेत॥ बरषत प्रसून बर बिबुध बृन्द। जय जय दिनकर कुल कुमुद चन्द॥ बृह्मादि प्रशंसत अवध बास। गावत कल कीरति तुलसिदास १ खेलत बसन्त रघुबंश बीर। सँग भरत लषण रिपुदवनधीर॥ तनु नील कांति मणि लसत श्याम। राजीव नयनछबि कोटि काम॥ पटपीत तड़ित शोभा न थोरि। लियबंधु सखा कर अबिर झोरि॥ केसरि कपूर कुंकुमा घोरि। छिरकहिं यक यक तिय दौरिदौरि॥ डफ ढोल भेरिबाजैं निशान। सुर कौतुक देखैं चढ़ि बिमान॥ खेलन आईं सिय सखिन संग। पट बिबिध भांति पहिरे सुरंग॥ भूषण विचित्र पट अधिक रूप। राजत मयंक मुख छबि अनूप॥ रघुपति चितये जानकी ओर। आनन्द सिंधु बाढ़्यो न थोर॥ को बरणि सकै यह सुखसमाज। सब मगन भये गइ लोक लाज॥ यक चतुरनारि कीन्ह्यो उपाय। छलिकैं पकरे रघुबीर जाय॥ मुकुतामणि भूषण काढ़ि लीन्ह। सखी मन भायो करि छांड़ि दीन्ह॥ यक सुमुखि सखी सिय बोलि लीन्ह। अँचरा पटपीत सों गांठि दीन्ह॥ महिमा अतुलित शोभा अपार। मनु कनक लता ढिग तरु तमार॥ फगुवा मांगन मिसि देहिं गारि। सखी लोचनलाहु लेउ निहारि॥ जोरी अद्भुत युग बिधु प्रकास। यह सदा बसो उरतुलसिदास २॥

बिश्वनाथपदरागबसन्त ॥ खेलत बसन्त दोउ सजनि साजि। रचि अवध राज ऋतुराज राजि ॥ इत बजहिं बीण नूपुर सुपुंज। उत लसहिं कपोतन मधुप गुंज ॥ इत नचहिं अप्सरा देहिं तोर। उत थरकि रहे बन हरषि मोर ॥ इत कीन अलिन गण गान भूरि। उत कूक कोकिलन रही पूरि ॥ इत उड़ि गुलाल भोडर सोहाय। उत उड़हिं पराग सुपवन पाय ॥ इत भरे गुलालहिं लाल बाल। उत किंशुक फूले हैं बिशाल ॥ इत चपल चलहिं पिचकारिबृन्द। उत चुवहिंचारु मकरन्द बृन्द ॥ इत करहिं बिदूषक स्वांग भांति। उत बोड़ बिलसहिं बिबिध पांति ॥ इत बिश्वनाथ मन हरत राम। उत मोहत कामिनि मनहिं काम ॥

चन्द्रअली०दोहा ॥ यहि बिधि उत्सव पंचमी भयो अवध पुर मांह। सब घर अति आनन्दहै अति सुख उर न समांह ॥

श्रीतुलसीदासजी०चौपाई ॥ बिश्वामित्र चलन नितचहहीं। राम सप्रेम बिनय बश रहहीं ॥ दिन दिन सौ गुण भूपति भाऊ। देखि सराह महा मुनि राऊ ॥

संग्रह० ॥ देखत नित नव मोद बधावा। माघ पूर्णमासीदिन आवा ॥ गाधिसुवन कह सुन अवधेशा। चलन चहौं मोहिं देहु निदेशा ॥

रघुराज० ॥ बहुत काल बीत्यो महराजा। पाये मोद सिद्धि सब काजा ॥

संग्रह० ॥ अब तो हिमगिरिको हम जाउब। राम लषणहित पुनि यहँ आउब ॥

रघुराज० ॥ सुनि कौशिकके बचन सुहाये। अवधनाथ अति ही बिलखाये ॥

तुलसी० ॥ मांगत बिदा राउ अनुरागे। सुतन समेत ठाढ़ भय आगे ॥

रघुराज० ॥ सजल नैन गद गद कहबानी । नाथ देति दुख तव बिलगानी ॥ अस कहि नृप षोडशउपचारा । करि मुनि कर पूजन सतकारा ॥

तुलसी० ॥ नाथ सकल संपदा तुम्हारी । मैं सेवक समेत सुत नारी ॥ करब सदा लरिकन पर छोहू । दरशन देत रहब मुनि मोहू ॥ असकहि राउसहित सुत नारी । परे चरण भरि लोचनबारी ॥

रघुराज० ॥ मिलेउ महीपति कहँ मुनिराई । पुनि चारिहु बंधुन हिय लाई ॥

तुलसी० ॥ दीन्ह अशीष ऋषय बहुभांती । चले न प्रीतिरीति कहि जाती ॥

कृपानिवास० ॥ प्रेम बिवश लोचन भरि आये । संत बियोग कठिन दरशाये ॥

तुलसी० ॥ राम सप्रेम संग सब भाई । आयसु पाइ फिरे पहुंचाई ॥ दोहा ॥ राम रूप भूपति भगति ब्याह उछाह अनंद । जात सराहत मनहिं मन मुदित गाधि कुल चंद ॥ चौपाई ॥ बामदेव अरु कुल गुरु ज्ञानी । बहुरि गाधिसुत कथा बखानी ॥ सुनि मुनि सुयश मनहिंमन राऊ । बरणत आपन पुण्य प्रभाऊ ॥ बहुरे लोग रजायसु भयऊ । सुतन समेत नृपति गृह गयऊ ॥

संग्रह० ॥ नृप रानिन रघुकुल परिवारा । अवधपुरी बासी नर दारा ॥ परम प्रमोद सबनि मन माहीं । निशा दिवस क्षण सम दरशाहीं ॥

श्रीतुलसी० ॥ जहँ तहँ रामब्याह सब गावा । सुयश पुनीत लोक तिहुँ छावा ॥ आये राम ब्याहि घर

जबतें । बसेअनंद अवधसब तबतें ॥ प्रभु बिवाह जस भयउ उछाहू । सकहिं न बरणि गिराअहि नाहू ॥ कबि कुल जीवन पावन जानी । राम सीययश मंगलखानी ॥ तेहिते मैं कछु कहा बखानी॥करन पुनीत हेतु निजबानी ॥ हरिगीतिकाछंद ॥ निज गिरा पावन करन कारन रामयश तुलसी कह्यो । रघुबीर चरित अपार बारिधि पारकवि कवने लह्यो ॥ उपवीत ब्याह उछाह मंगल सुनि जे सादर गावहीं । बैदेहि रामप्रसादते नर सर्बदा सुख पावहीं ॥ सोरठा ॥ सिय रघुबीर बिवाह जेसप्रेम गावहिं सुनहिं । तिनकहँ सदाउछाह मंगलायतन रामयश ॥

इतिश्रीमानसरामायणबालकांडअरुहेमन्तऋतुबिहार संग्रह समाप्तः ॥

अथ शिशिर ऋतु ॥

बिहारसंग्रह बर्णन ॥

संग्रह०दोहा ॥ कनकभवन महँ रामसिय सिंहासन आसीन । चामर मुरछल ढारहीं सुंदरि सकल नवीन ॥ बिबिध बस्तुलीन्हे खड़ीं सेवामें सब बाल । जनक लली रघुलाल मुख निरखति रूप रसाल ॥ सीताराम प्रसन्नमन सकल समाज हुलास । कह्यो

एक सखि आजुतें लाग्यो फागुन मास ॥ जनु अलबेलो रसपती छैलो परम प्रवीन । सुन्दरनर नारीनको बिनालाज करिदीन ॥

युगुलानन्यशरण०पदहोरी ॥ होरी आई प्राण प्रिय प्यारी । रसिक जनन जीवन हित मानो मनमथ साज सँवारी ॥ बरसत घन रसराग चहूंदिशि सरसत हिय सुकुमारी ॥ फागुनगावन भावन मन चितचावन सुखकारी । युगुलअनन्यशरण सुखमासर उमँगायो छबिभारी १ होरीखेलो लडैती के संग आज । तेरीछबिपर वारी गईहौं राज ॥ मंदमधुर मुसक्याय गाय तरतान सरस रसखान साज । ललित लाड़िली लसन लखो ललचाय लाल सजवाय साज ॥ होय हरष उत्साह हिये हरसायन सुख सरसे समाज । युगुलअनन्यअली प्यारी छबि सुधास्वाद फागुन के ब्याज २ होरी में लाजको कौन काज । हिलि मिलि खेलिये रघुबंश राज ॥ फूली ललना बरबेलि आज । लीजिये मधुर मकरंदराज । पगिप्रीति परम पिचकारिलाज । मुदमानि चलाइय चतुर राज ॥ उमँगायशौक सरसाय नाज । डारो रंगीन रस रँग रिवाज । फागुन मनमोहन मिलि समाज । अलिहेमलता उर मन बिराज ३ ॥

संग्रह०दोहा ॥ अससुनिकै बिहँसे दोऊ बोले राम सुजान । ललना तुम्हरे हृदयकी हमैं परी पहिचान ॥ नयनसयन दीनी सिया चली चतुर बरनारि । फागुअयन में आयकैं लागी करन तयारि ॥

कृपानिवास०पदरागगोरीरेखता ॥ सियाजू सहज हँसि बोली । पियाजू आज है होली ॥ भरोतुम रंगसों झोली । हमोंने केसरै घोली ॥ टेक ॥ मेरा दिल अब नहीं रुकता । करोमन आपनो पुख्ता ॥ फिरौं क्या बुतपैक लुख्ता । समझलो मजेका नुक्ता ॥ दिखावो सैर बागनकी । मिलावो मौज फागुनकी ॥ सुनावो तान रागनकी । भुलावो बाणि भागनकी ॥ प्यारिकी रसभरी बानी ।

सुनी जब राम दिलजानी ॥ कृपानिवास मनमानी । रमाई रंगसों रानी ॥

विश्वनाथसिंह०पदहोरी ॥ छवि पूरी कस्तूरी धूरी रासिम है। भोड़र धूरन चंदन चूरन केसरि कुरन कौन कहै ॥ शोभन भरी छरी कुसुमन की धरी हजारन राजिरहीं। भरीअबीर भोरोरिन झोरिन गोरिन केती धारिमहीं॥धरे कुमकुमा कंचन किशितन कुंदन मणि पिचकारि सचै। केसरि पैवरि अतर अरगजा जावक कुसुमन रंगरचै ॥ हरदी मंजु मँजीठानि पीठनि सखियन कुंडन घोरि दिये। योहीं हरिहु तयारी कीन्ही गौने भोड़र ढालिलिये ॥ बीण मृदंग उपंग तमूरे बेणु सितार गितार सजे। जलतरंग मुरचंग झांझडफ अरगन सुरगन सरसबजे ॥ सुखप्रिय उज्ज्वल प्रिय गंधर्ब प्रिय लक्ष्मणहुँ भरतभले। रिपुहन बिश्वनाथ रघुनन्दन सजिकै खेलन फाग चले ॥

प्रेमसखी०दोहा ॥ राम बुलाये सखा गण सबै काम के रूप। आये पिचकारी लिये केलि कलह अनुरूप ॥

रूपसखी०पदहोरीकाफी ॥ कोशलराज लला मिथिलेश किशोरी हो। खेलत हैं दोऊ मोदभरे रंग होरी हो ॥ टेक ॥ लीन्हे सखा संग सोदर श्री रघुबीर है। मैन महीपति साथ मनोभट भीरहै ॥ केसरि पेंच बिराजत हैं जरतारी के। राजत हैं तिन पै शिर पेंच किनारी के ॥ एकन के शिर सोहति पाग मुकेशकी। छाजि रही झुकिकै कलँगी अति बेश कीं ॥ एकन के शिर चीरन पति बुताने है। मनौ मनोज महीपति खोले खजाने है ॥ एकन के कुलही शिर कञ्चन की लसैं। एकन के शिर पागैं प्रसूनकीबसैं ॥ एकन के झिलमैं सम रेशमजारी हैं। नयन गुलाल बचावनकी हुशियारी हैं ॥ एकन के कल कुण्डल डोलत कानमें। खातबीरी यक ठाढ़े अनंगकी शानमें ॥ एकन के जुलफैं हैं कपोलन पै छुटीं। है हरके गिरि में मनो सम्बुल की बुटीं ॥ एकन के नख शिख बनेअंगद हेमके। बांधेमनौ लिखि यंत्र सदा सुख क्षेमके ॥

झीने झगा तन सोहत सौंधनि सों सने। कोर किनारिन मणि गण मोतिन सों बने॥ केसरि सों दुपटा रंगि रूपें छपाय है। तारजरी दोउ छोरन छैलन लाय है॥ कञ्चन के पिचिका काटि फेंट गुलालकी। रंगन की गरमी उर गात है शालकी॥ को बरनै छबि सुन्दर राजकिशोर की। जाकी कटाक्ष विशाल प्रिया चित चोरकी॥ सीय सहेली सबै अलबेली नवेलि हैं। गौरि गिरा कहिये जिन आगे गँवेलिहैं॥ सारी सबै पहिरे तन रंग रंगीलि है। पीरी हरी कुसुमी सित ऊदी ओ नीलि है॥ एकन के शिर सोहै जराव सरासरी। मोतिन सों भरिमांग कलाब लगी जरी॥ मालती कि कलिका भरी एककी मांग है। रूपे मढ़ी छुरि ढाल पै मैन की सांगहै॥ फूलनसों गुहीं बेनी पीठि पै यों लसैं। मनहुँ दुरंग भुजंग गिरा जल में बसैं॥ एकन के शिर छूटे राजत बार हैं। श्याम बड़े चिकने घुँघुरे सुकुमार हैं॥ चन्दन की सित खोरिन रोरि न बेंदा है। गंग के भौंर परे ज्यों गुलाब के गेंदाहै॥ एक सखी के ललाट जड़ाव की आड़ है। शीश चढ़ी हिय तें सिय जयतिकी चाड़ है॥ एकन के भृकुटीपर श्याम डिठौना है। डीठि डरावनको मनो रीछ के छौना है॥ नयन निरञ्जन एकन के छबि यों लहै। गर्भ भरे भट मनहुं न अञ्जन को गहै॥ एकनके दृग अंजन रंजित लोल हैं। लीन्हे मनो निशिते तम पंकज ओलहैं॥ लाल जड़े श्रुति भूषणते न कहे परे। मैन महीप सभा दोऊ दीवटसे बरे॥ एकनके नकबेसरि मोर सुहावने। है सुरतरु की डारपै मोर लजावने॥ एकनके लर मोतिनकी बर ग्रीव है। चंद सरोज सुदेश मनों नदसींव है॥ रंग रंगी तन, तासुकी कंचुकी है बनी। राजतिहै जरि घुंडिन फुंदिनसों तनी॥ कंचनके भुजबंद पुहे पटनील है। आये मनो शिव पै दिन रैन उकील है॥ नींबी मढ़ीजरतारि रूमावलि संगिहै। है अबनूसकी डांड़िन हेमकी बंगिहै॥ नील रंग लहँगा कटि घूम घुमारे है। नूपुरकी ध्वनि मानहुं होत अखारे है॥ को बरणै छबि सुंदर

राजकिशोरकी । जाकी कटाक्ष बिलास प्रिया चितचोरकी ॥

प्रेमसखी०दोहा ॥ सखिन मध्य श्रीजानकी सखन मध्य रघुनंद॥ प्रेम सखी बाढ़त हिये लखि लखि परमानंद ॥ कवित्त ॥ होरी खेलबेको खरी जानकी सखीन मध्य रोकेकौन प्रेम सखी उरके अनंदको। आस पास यूथ यूथ युवती समूह ठाढ़ीं गीत मिस गारीदेत सिगरी गोबिन्दको ॥ अंगनि झुकाय कछु मंद मंद मुसुकात चन्द्रिका झुकी है मत्त मानों जीति चंदको। प्रेमते पगी हैं रसरूप उमँगी हैं अली अंशते लगीहैं करलीन्हे अरबिन्दको ॥ प्रेमसखी जानकीको बदन मयंक देखि उपमा बतावै कैसे चंद्रमा बिचारेको। कंजते अमल मीन खंजनते चंचल है मैनशर सकुचात नैन अनियारेको ॥ नासिका सुहाई शुक नासिकाकी छीनी छबि तरल तरौना युत रौनि उजियारेको। लटकन लटकि छबीलीके अधरपर मानहुं चुनौती देत जुलफनवारेको ॥ सवैया॥ लाल लिये पिचका करमोंभय आपुखरे सियसामुहें आइकै। तैसीबढ़ी मुखकी सुखमा बिधु पूरण शंति निशाजनु पाइकै॥ पीत दुकूल कसेकटिमें जिनते बिजुरी दबिजात लजाइकै। प्रेमसखी हियमें वह माधुरी राखत ज्यों निधि रंक चोराइकै ॥ कवित्त ॥ प्रेमसखी शीशपै किरीटकी चमक तैसी हलकैं कपोलपै सुगंध भीनी अलकैं। ओठ अरुणारे तैसे कुंदसे दशन प्यारे कुंडल कनक गंड मंडित ह्वै गलकैं ॥ लोचन बिशाल लाल कुंकुम तिलक भाल नासिका बुलाक पै अधिक छबि छलकैं। तन घनश्याम कोटि कामहुते अभिराम राम रूप देखि आली परती नपलकें ॥ दोहा ॥ सियाराम शोभा अवधि बरणि सकै कबिकोइ। प्रेमसखी ठाढ़े दोऊ दृगन फागसी होइ ॥

हरिहरप्रसाद०दोहा ॥ खेलिरहे दोऊनैके होरी नैनअनूप। सखा सखी चितवहिं चकित युगलचंदको रूप ॥

प्रेमसखी०कवित्त ॥ कुटिल कटाक्ष पिचकारी सी चलत चारु दुहूंओर नेह को उमंग रंग बोरी हैं। पलकैं परतमनो दुरत

करत चोट मंद मुसकानि गहि पाणि झकझोरीहैं ॥ भावकै बचावैं हाहा हावकै खवावती हैं बदन बिलासते करत बरजोरी हैं। देखि देखि आजु छबि प्रेमसखी दंपतिकी नैननतें होरीखेलैं कुँवर किशोरीहैं ॥ सवैया ॥ भूषण भूषित संग सखा इतसंग सखी सब कीन्हे शृंगारहैं । कोवरणै तिनकी छबिको बहुरूप धरे बिलसैं रतिमारहैं ॥ लीन्हे उतै पिचका करमें इततें बहुफूलके गेंद अपार हैं । प्रेमसखी सियके पियके ढिग ठाढ़े भये सब खेलनहार हैं ॥

विश्वनाथ०पद ॥ खेलत खेलत यारी यारी तहीं तहींआहोत भई । लोकाचार चारुताई पटु चारु चारु मति चैन छई ॥ चन्दन चन्दन निन्दननिन्दन वृन्दन वृन्दन बदन लसै । छकि छकि बिश्वनाथ नाथहिं नाथ रतिके रतिकेलि हसै ॥ पद ॥ लाल लाल सावँरे सों खेलन खेलन खेलन । बाल बिचक्षन अक्षन अक्षन किय रस मेलन मेलन ॥ हो हो होली होली कहि कहि बन्धु प्रचारे उचारेउ । सुनि बिश्वनाथ नाथ गतिन तन भान बिसारेउ सारेउ ॥

प्रेमसखी० कवित्त ॥ बाजेको बजावैं झूमि झूमि फागुगावैं व्यंग बचन सुनावैं एकएकनिसों करषैं । झूमि झूमि आवैं चावअधिक बढ़ावैं नैन तुरँग नचावैं रसमत्त हिये हरषैं ॥ फागु रंग प्रेमसखी बादरसे छाइरहैं चढ़िकै बिमानते सुमन सुर बरषैं । रंग शस्त्रधारी बस्त्र भूषण सिलाहकारी बार बार रामसिया भौंहनिको परखैं ॥

पंडितहरिहरप्रसाद०दोहा ॥ कहि जयजय रघुबरबढ़े इत तें सखा प्रवीन । जयविदेह जयकहिबढ़ीं उतते सखी नवीन ॥

प्रेमसखी०कवित्त॥ रामरुखपाइ धाइआइकुँअरोटासब कंचनक-लित रंगभरी पिचकारी हैं । प्रेमरसमत्त बेगुमान गुन योबनको करषि करषि चलीं फौजें न्यारीन्यारी हैं ॥ एककहैं जीति सौज सगरे छिनाइलेहु एककहैं ठाढ़ीहोत अबला बिचारी हैं । प्रेमसखी लोने लोने छैलदेव छौनाऐसे बोलिबोलि चलेजैति अवध बिहारी हैं ॥ दोहा ॥ जयविदेहजा जनकजा कुजा भूमिजानाम ।

जय रघुबरप्रियबल्लभा जयजय बोलतबाम ॥ पियदल आवत देखिकै मंदमंद मुसुकाइ । नैनसैन दीन्हीसिया चलींसखी हरषाइ ॥ कबित्त०॥ शायक से प्रेमसखी चंचल चलत नैन भृकुटि विलास तौ धनुषबनिआईहैं। गोलीगोला हावभाव व्यंगकेबचन बान मंद मुसुकानिजानि सेहथी सुहाईहैं॥ झलकैं सुगंधभीनी झलकैं कृपाणऐसी तरल तरौनाजू सिफर छबिछाई हैं। नूपुर नगारेभारे होरीजंगजीतिबेको सुभटबधूटिनकीफौजैंउठिधाईहैं॥

रूपसखी०होरीकाफी॥ कोशलराजलला मिथिलेशकिशोरी हो। खेलतहैंदोउ मोदभरे रँगहोरीहो॥ टेक॥ छूटैं दुहुं दिशि ते बर मूठि गुलालकी। हैइतघूंघुटओट उतैपटशालकी॥ धुंधि कपूर गुलालकी छाई अकासमें। भानुसकोचि दियोपटमानो बिलासमें॥ लालसखा झटकेउ इकलाडिली टोलमें। प्यारी एक सखी झटकी पियगोलमें॥ लालउतै नरभूषण बांको बनायोहै। दैतियकीछबि प्यारीजू पासनचायोहै॥ वाहिसबै रघुनंदन जयति सिखावहीं। जैमिथिलेशकिशोरी जू याहि पढ़ावहीं॥ पाट बँधी पचरंग प्रसूननकी छरी। आइमिली दोउफौज हरोलन होपरी॥ पागकेपेचछुटे शिरते पगआयहै। भीरपरे बिधु मानों सरोजमनायहै॥ मोतीलरैं छुटिशीशतेआइ उरोजहै। संकट में शिवपै जलछांड्यो सरोज है॥ पाइचले पियके दलदेखि सबै अलीं। ठठिभई धरि आगेसखागण लैचलीं॥ द्वैहैखरो जिनके जिय खेलकोदायोहै। सोनइहांते टरैगो एककोजायो है॥ कौन सुनैसबकेदृगमूंदे गुलालहै। पीठिछांड़ि उपटीमुखचाटनलालहै॥

संग्रह०दोहा॥ फिरेलजाय सरोपद्वै रामसखासमुदाय। करिपिचकारिनकी झरी दइनारिन घबराय॥ पुनि सिमिटीं नवनागरी बाल माल ततकाल। सखन वृन्दपर डारतीं रंग गुलाल उताल॥

प्रेमसखी०सवैया॥ चोवनके चरुवा इतते अलिडारैं गुलाल की मूठिअपारहैं। केसरिरंग रँगभिगरे पिचकानिकी मानो रहीजुरि

धारहैं ॥ प्रेमपयोधिमें जाइपरे बहिकै सिगरेसुर देखनहार हैं। प्रेमसखी नटरैरसमत्त इतैनृपजा उत राजकुमारहैं ॥

ज्ञानाअलि०पददादरा ॥ ललनालोनी नवल रंगबरसै । भीने पटभीने तनलपटत अटपट गारिनसरसै ॥ उड़तगुलाल कुम-कुमा मारत सुमन गेंदकर करसै । पिचकारी भरि पिय सिय ऊपर डारिसकत नहिंडरसै ॥ कोटिन राजकुमारिनके बिच राम इयाम घनदरसै । सियस्वामिनि दामिनि द्युति दमकत अरस परस तनपरसै ॥ जेहिसुखकोचाहत शुकशारद बिधिनारद हरि हरसै । ज्ञानाअलि सोई यशगावत मिलनआश जियतरसै ॥

बिश्वनाथ०पदहोरी ॥ सुघरि सुघरि अलि आली आली कर लैलै पिचकारी। श्रुति कीरति कीरति निधि सँगमिलि गनि गनि गावत गारी ॥ खेलन खेलन नवलालनसों झमकि झमकि भर झोरी । शत्रुशमन हरतर तरसहिं होहो होरी करि दोरी ॥ लाय लाय मुखलाल लालहि तरकरि करि रंगनते । लपटि लपटि उर उरज दरेइन रण जय लिय तन मनते ॥ छकिछकि श्रुतिकीरति करिति में बिहँसि लषणलघुभाई । झपटि झपटि पट फटकि फटकि गहि कुमकुम रँग अन्हवाई ॥ मिलि मिलि गयउ गातसों सारी सारी नहिं सकुचानी । गहन हनन सुधि रही न थकि थकि पीतमरूप लोभानी ॥ बिश्वनाथ नाथनुज होरी लखिलखि सुरसुरराई ।यानन चढ़ि चढ़ि छाय छाय नभ सुमन सुमन झरिलाई ॥

प्रेमसखी०घनाक्षरी ॥ लाखनके लाखलाख सखी एकएक बार मारैं कुमकुमा जाइ परैं करकासी हैं। फूलन के गेंदा फेंकि फेंकि फौजैं फारि दीन्ही निकसी कृपाणसी कनकलौं कलासी हैं ॥ चोटन बचाइ चोट क्रुरतीं बधूटी सबै प्रेमसखी चमकि चमकि चपलासी हैं। पावत न सासचलै सखागण बावरे है तोपि के गुलाल कीन्हेसगरे निशासी हैं ॥ दोहा ॥ ललकारे लोने लषण भये प्रबल बल पाइ । शाल ढाल आगे दिये जुरे

सामुहे आइ ॥ सवैया ॥ फूलछरी तरवारि चली उततेंपिचका भरि मारत तीरहैं। भीजिगई रँगते सिगरी बिथुरी अलकें न सँभारत चीरहैं॥ शस्त्र प्रहारसहैं सिगरे भट रीष भरे न गनें तनपीरहैं। प्रेमसखी प्रमदागण मत्त खरे मनों घायल घूमत बीरहैं॥

युगलानन्यशरण॰पदगजल ॥ भावे मुझे सखियोसुनो मनमोहनी होरी। मतवारनी जिसमें भई रंग भीजती गोरी॥ सिय श्याम की प्यारी अदां कमली करीसनी। निज परकी होश कुछनहीं बेहोशसी गोरी॥ श्यामाके साथ सहचरी सेना नहीं थोरी। सँग सांवरी के सुख सने सहचर सबी सोरी॥ पिचकारियां करकंज गुलालों से पुर झोरी। किसही को कोइ माने नहीं करती हैं बरजोरी॥ इसके सिवाय सौज कहे तिसकी है मति थोरी। जिसमें हमेश जीती जनकराज किशोरी॥ जीयुग्म सखी भावती होरी सुरंग बोरी। गुणगाइये तरतान सरस शानसेभोरी॥

रं गहमीरबड़ोतार ॥ आजु रंग होरी खेलत राम सिया रंग रचिकें। आवत दौरि मारि दुरि भागत केशरि पिचका सचिकें॥ कहुँ सोहति मूठिन गुलाल भरि डारत गति नचि नचिकें। बहु डफ बजत जुझाऊ धुनि सुनि अड़त तकत पल हचिकें॥ लिपटत झपटि रहत छबि चुभिमन सुमन छरी तन बचिकें। राम सखे रस बिवश महल बिच रतिपति मद अति मचिकें॥

प्रेमसखी॰घनाक्षरी ॥ सौंह सुनि सुभगाकी दामिनीसी दौरिदौरि कामिनी लपटि गई सबै सुकुमार सों। गहि गहि ल्याईं जो प्रबल घरहाई सब होरी होरी कहत किशोरी न्यारे न्यारे सों॥ प्रेमसखी गुलचाइ सिगरे नचाइ दीन्हे युवती बनाइ बहू कहत बिचारे सों। अञ्जन अँजाय हम चूनरिये पैन्हि आये कहियो हजूरि जाइ पीतम हमारे सों॥ जनकदुलारी की सहेली अलबेली एक लाड़िले लषण सों गुमान भरी झागरी। दूसरी चतुर वेष पुरुष बनाइ आइ जाइ राम पास ठाढ़ी भई छबि आगरी॥

तीसरी तुरत दौरि बेंदी भाल भरत के लाई रिपुसूदन की लई छीनि पागरी। बात कहिबे के मिस प्यारे को बदन चूमि भागि आई तारी दै हँसन लागी सिगरी॥ सवैया॥ और सहाय गई प्रमदा सौमित्र को ल्याई सखी यहि ओर कों। भाग बड़े इनके कहिये तिय की छबि दीजिये राजकिशोरकों॥ आजु खवासी करौ सियकी युवती तन धारि खवावो तमोर कों। दासी सबै हम ह्वै हैं लला इततें भरतार कहो चितचोरकों॥ बानि है बिश्व के पोषण की तिनको भरतार कहे कछु हानि हैं। हानिहैं प्रेमसखी कबहूं जिनको सिय आपु सखी करि मानि हैं॥ मानिहैं ताहि बिरञ्चि सदा जिन पै सियकी सियरी दृग जानिहैं। जानि हैं जानकी जीवन तौ जिनके सिय जूकी सिपारसि वानि हैं॥ लायक दास खवास नहीं अब मानिहैं कीन्हे करोरि उपायहैं। पाय बिना हम देखे नहीं अँग जानकी के कहिदेत सुभायहैं॥ भावते पूजतप्रेमसखी शिव आदि मुनीशनकी समुदायहैं।दाय उपाय यहै सिगरी सियके पदपंकजमें चितलायहैं॥दोहा॥ बातन कैसेजीतिहै जानत हैं हम शेष। देवर जाइ न पाइहौ बिना किये तियबेष॥ देवर देवर कहतहौ कहाकरौ बर और। बरदराज बरपाइ कै बरदन को शिरमौर॥ सवैया॥ कंचनकी गुजरी बिछिया तुमको लहँगो अँगिया पहिराइहौं। कंचुकी साजु खवाइ बिरी पहिराय चुरी अवतंस बनाइहौं॥ मांग सवांरिकै प्रेमसखी शिरसेंदुर दै फिरि अंग लगाइहौं। दै तिय को छबि सुंदर जू हम लाडिली जू के हजूरि नचाइहौं॥ दोहा॥ अंचल ओट हँसीं सबै मंदमंद मुसुकाइ। कमलनयनके दृगनमें अंजन रुचिरबनाइ॥ कवित्त॥ जावकलगायो जलजात ऐसे पायनमें बिछिया कलित ह्वै अधिकछबि छाई हैं। घूमिझ्ह्यो घेरवारो लहँगो सबजरंग नील जरतारी सारी कंचुकी सुहाई हैं॥ प्रेमसखी अंग अंग भूषण बिबिध साजि बहू बहू कहतबधूटी गहि ल्याई हैं। सुभगा सिया जू के तुरत हजूरि कियो नवलबधूटीएक सासुरेते आई हैं॥दोहा॥

जनकलड़ैती हँसिकह्यो फगुआ दीजे लाल। शेष तुम्हैं सब कहतहैं तिहुँपुरमें तिहुँ काल ॥ सखी कह्यो तियरूप ह्वै कीजे इहां बिलास। प्रेमसखी बोले लषण हम सियपियके दास ॥ सवैया ॥ सांसति होति बड़ी तिनकी नित जो रघुनाथको दास कहावत। सेवतहैं पदपंकजको मकरंदपियै अलिह्वैगुणगावत ॥ मर्दित हैं कमलाकर सों तिनको यह वेद पुराण बतावत। प्रेम सखी सियके पद सेवतते बसिरामहिये सुखपावत ॥ दोहा ॥ देखत लक्ष्मणकी दशा हिये बहुतहरषाइ। लालकह्यो रिपुदवन सों मंदमंद मुसकाइ ॥ रसिक शिरोमणि हँसिकह्यो जनकसुता ढिग जाय। बाहुआपने दीजिये ल्यावो सखी बुलाय ॥ रिपुसूदन तब हँसिकह्यो भली कहतहो नाथ। रहे तुम्हारे निकटही भयउ उघारो माथ॥ आयसु मेटीजात नहिं कीन्हों हृदय बिचार। पुरुषो-त्तम बिनुहै नहीं उहां पुरुष अधिकार॥बनिता रूपबनाइ कै पहुँचे जाय तुरंत। प्रेमसखी ठाढ़ेजहां युवती बेष अनंत॥कैप्रणाम बोले बचन सिय अनुशासन पाइ। लालबुलाई अली यक जैये तुरत लेवाइ ॥सवैया॥हंसबधूसी गुमानभरी गतिमंदचलै मिसकै सुसु-कातहैं। कांपेउरोज हराहलकैं झलकैं मुखभूषणके जलजातहैं ॥ भीनीसुगंध लसै अलकैं ललकैं जियदेखि भुजंगलजातहैं। प्रेम सखी सुभगासुथरी सियकेढिगते पियकेढिगजातहैं ॥ कबित्त॥ आवतनिकट अवलोकिछबि सांवरेकी जाकेआगे झांवरोसो लागै निशिनाथहैं। कंधटेकि ठाढे लघुबंधुके गुलालभरे आसपास काम से बिराजैं सखा साथहैं ॥ हँसिकै नवायो माथ पायँनको प्रेमसखी पूँछत कुशल देखि बदन सनाथहैं। तनमन बैन गति रावरी कमल नैन प्रेमरस मातीं खरी जोरे युग हाथ हैं ॥ दोहा ॥ सुधि आई वा बातकी कह्यो लाल मुसुकाइ। छलबल आवत तियन को तासों कहा बसाइ ॥ छली कौन सों कहतहैं कहै भरत जू न्याइ। बावन बटु ह्वै बलि छले आपु छलिनके राइ ॥ जनक दई तजि ताहि को रमत और सँग बाम। सुन्दर के ढिग जात

ह्यौ ताते सुभगा नाम ॥ रमत सबन में राम जू नेकु न हृदय लजात । लोकसार माधवतुम्हें कहैं जनकजामात॥ सुभग चातुरी केबचन सुनि सुभगाके राम । पानदये आदरकिये कोटि काम अभिराम ॥ पियरुख सुभगा सखिनते डीठिहँसोही कीन्ह । करतदंडवत दंडवत शीशदंडवत दीन्ह ॥ सवैया ॥ सौंहनहेरैं तिरीछे तकैं सुभगाकहँ देखतजात गड़ेहैं । कंचुकी चित्रलसै लहँगाप हिरे तियभूषण छोटेबड़ेहैं ॥ केलिकेहेतु कलानिधि रामउतारन देतन तैसेमड़ेहैं । प्रेमसखी प्रमदानके वेषबिराजैं सखापियपास खड़ेहैं ॥ दोहा ॥ सखन दिखावत आरसी सुभगा हँसत अशंक । कहा बनीछबि आजुकी देखौ बदनमयंक॥आई गौनेसी मनौ नव दुलहिनि ततकाल । सखा सुनत सकुचत सबै हँसत छबीले लाल ॥ नहिं तप ब्रत जप योग ते नहिं साधनते कोइ । उज्ज्वल रस अधिकार यह सिया कृपा ते होइ ॥ शिव बिरञ्चि देखे नहीं जोथल सुर समुदाय । सखी वेषधरि सहजहीं सो थल देखौ जाय॥सखा कहत सुभगा सुनहु आजुतुम्हारोदाउँ । जुआंयुद्ध जीते जोई शूर चतुर तेहिनाउँ ॥ सकुचभर पेखे सखा सुभगा पियपहँ जाइ । मंद मंद हँसिकरगह्यो सियढिग चली लवाइ ॥ आवत देखे जानकी प्राणपियारेलाल । आई खेप अनाजकी मानौपरे दुकाल ॥ कवित्त ॥ नूपुरकी ध्वनि मंद गाजत बलाहकसे तड़ित बसन कोटि काम अभिरामसे । पीत उपवीत सोई मघवाशरासनहै मोतिनके माल हिये राजैं बकदामसे ॥ प्रेमसखी सखी मत्त मोर ऐसी नाचउठीं बरषैं मुदितह्वै सुमन सुरधाम से । चातकसी पियपिय सिगरी पुकारतहैं तन घनश्याम राम आये घनश्यामसे ॥ सोरठा ॥ पिय ढिग आवत देखि सिया जाय आगे लिये । चक्रवाक जनु पेखि जनु चकई बीते निशा ॥ कवित्त ॥ होरी को लगाइ आई कुँवरि किशोरी सब मिलामिली चारकै पसारि भुजा भेटतीं । कुंकुम कपूर धूरि अभ्रक गुलाल पूरि युवती करनलै लिलाटमें लपेटतीं । एकै तृण तोरैं एकै हँसिकै

बदन मोरें एकै मिलपाई बर भुजा बश भेटतीं ॥ एकै हर्ष पाई प्रेमसखी पियढिग आई हियमें लगाइकै बिरह व्यथा मेटतीं ॥

दोहा ॥ भाल गुलाल लगाइके सिय पिय हिये लगाइ। सुख आसन बैठे निरखि प्रेमसखी बलिजाइ ॥

रूपसखी०पदहोरीरागकाफी ॥ कोशलराज लला मिथलेशकिशोरी हो खेलतहैं दोउ मोद भरे रँग होरी हो ॥ को बरणै छबि राजकिशोर किशोरी की। जोरी अनूपबनी रतिनायक होरी की ॥ नाचनलगीं अलीगण बाजै मृदंगहैं। कोइन बचे जितने जग होरीके रंगहै ॥ अंसधरे भुज देखत प्यारो औ प्यारीहै। रूपसखी तेहि औसरकी बलिहारी है ॥

प्रेमसखी० सवैया ॥ गावतराग रसीलि सखी गति भेदते बाजत लागो मृदंगहैं। कोबरणै तेहि औसरको सुख छाइरहे स्वरताल तरंगहैं ॥ राम सिया छबिऊ उरमैं बलिहारि करौंरति कोटि अनंग हैं। प्रेमसखी छबि दंपतिकी हियमें छहरायरह्यो वहरंगहैं ॥

पंडित हरिहरप्रसाद० दोहा ॥ गाय बजाय रिझाय हौं प्यारी सिय सुकुमारि। लेहौं मन भावत अली सेवामहल प्रचारि ॥

देवस्वामी० पद ॥ नाचनको साज सजावोंगी। श्रीसियजू को रिझावोंगी ॥ पदहे बचन सुवरणके घुंघुरू लालेपाट गथावोंगी। ताल सहित पदहीके गति में लैघरि भाव देखावोंगी ॥ समय बांधिकै रागभरी रंगतिकी गितियां गावोंगी। तीन ग्राममें घूमबामकै झमक समपर आवोंगी ॥ आपुस में मिलिसाज बजैंगे तिनमें फरक न पावोंगी। सिया राम दुइ कहन सुनन में एकै करि ठहरावोंगी ॥ लख चउरासी नाच बनेहैं सबको तारमिलावोंगी। ये सब देव स्वरूप बखानत यहरसमनहिं पियावोंगी ॥

देवस्वामी० होरीकाफी ॥ बिरियामैं ना खाउँगी सखियामें छिपि रह्यो लाल ॥ पान सुपारी खयर रस चूना कूचतही ततकाल। रंग रँगीलो निसरत मेरो चूम अधर औ गाल ॥ पंचतत्त्व मेलनहीं चेतन ऐसो सुगत मतवाल। सोई रंगमें यामें देखौं याको

अजब है ख्याल ॥ सुरक बीर रस ताते बीरा नामकहन की चाल । बिंदु त्रिकोण रूपको वाके बेद कहहिं गनमाल ॥ छोड़त लेत बनत नहिं अब यह भयरे मेरेजियको जवाल । बचन रँगीले देवरानी जेठानी सुनि सुनिहोत निहाल १ कजरा मैं ना देउंगी यामें श्याम रह्योहै समाय । यापै काहूकी नजरि न लागै याही से बेद लखाय ॥ अंगुरि धरत अँखियन में आइकै डारैगो मोहिं बउराय । तिल तिल नेह भराहै यामें मारैगो नेह लगाय ॥ यह जहँ लगत तहांते न छूटै दूजो न रंग रँगाय । सब रंगनको रहत दबाये कारो है बड़ी बलाय ॥ देव निरंजन मोहिं न भावै सिद्धि-उ नाहिं सोहाय । अस झटपट बानी बोलतपै नारि रँगीली देखाय २ लालैलाल भये सखिजित देखहुं तितलाल ॥ मेहँदी में लाल महावरहू में चुँदरी लाल कमाल । अनुरागहु को रूप लालहै लाल सिंदुरवा भाल ॥ लालै तरवा लाल हथोरी अधर ओट सोउ लाल । लालैलाल योबनवादोऊ नैन रतनसोउ लाल ॥ लाल गुलाल सकल बनफूले तागपाटहै लाल । भीतर बाहर लाल भरोहै सब बिनुलाल बिहाल ॥ लाल बिना कबहूंनहिं छूटै जनम मरण जंजाल । लालकी लाली मोहिं बनावे देव बनैतबलाल ३ ॥ रागभैरों ॥ सियाबोलाये सखासहित अनुराग । दै अशीशपट भूषण उचित बिभाग ॥ लक्ष्मण कहि रिपुदवन स्वस्ति सुखमूल । पट भूषण पहिराय जानि समतूल ॥ चले चन्द्र मनमुदित क्षुधित मन नैन । सिया रूप उरधारि रामसुख ऐन ॥ सखिन कह्यो पठइ करि फागु अब देहु । बिहँसि कह्यो रघुनाथ यथा रुचिलेहु ॥ स्वागत यह करजोरि सिया सियनाहु । प्रेमसखी हिय बसहु दिये गलबाहु ॥

अर्थ फूलडोल उत्सव ॥

बिश्वनाथ॰ पद ॥ राजत हिंडोल अयपवन लोल । पटुली अमोल मंडित निचोल । युग हेमरंभके खंभबीर ॥ धरि कुसुम

कारमुक कुसुमतीर। रसपातशाह करि तेहि वजीर ॥ जनु जयत खंभ गाड़े गँभीर। बहु बरण कुसुमके कलितमाल ॥ इमि चारु चारि डांड़ी बिशाल। जनु इन्द्र धनुष ऊगे अकाल॥ नीलकमणि भँवरा युगरसाल। बेलना बिलसत मणि ललित लाल॥ जनु अतनु बांधि युगरस भुआल। बनितबर अति अनुराग साल॥ रँग बिबिध जननके बँधेगाथ। बहुबाज बजावहिं युबति हाथ॥ गावहिं हिंडोल सब एकसाथ। सियहरिहिं झुलावहिं बिश्वनाथ ॥

रामशरण॰ पद ॥ आज झूलत रसीले सुमन हिंडोलहि डोल बसीले ॥ टेक ॥ सँगले जनक लली अलबेली अंग अंग प्रेम गसीले ॥ निर्तत कौतुक करत सखीजन सबके भाव लसीले। रामशरण अलि छबिपरवारी देखत नैन फसीले ॥

इति शिशिर ऋतु बिहार संग्रह ॥

श्रीसीतारामायनमः ॥

अथ बसंतऋतु बिहार ॥

संग्रह वर्णन ॥

बिश्वनाथ॰ पद ॥ बाग बहार बिलोकत रघुबर बैठे सखन संग इक औसर। सखा एक बोलतभो श्रवणन सुनि रसालरव कोकिलको बर ॥ यह बसंत दरशतै चैनुरस सींचत नैननि अद्भुत आयो। मनथल शिथिल बीज मनसिजको करि पल्लवित ललित छबिछायो ॥ अतिरस सहित बिहार मनोरथ कामिनि मनहिंअनेकबढ़ावैं। यहिसम सुखद न कौनिहुं ऋतुहै याहीते

ऋतुराज कहावैं ॥ जानि समान शीत्र रसराजहिं नीत बिचारि मीत कर लीनो । अपनी नानाविधि बिभूतिते बिश्वनाथ पूरित करिदीनो १ यह ऋतुराज अमित छबि सरसै । निरखतही नर नारिन नैननि हियरे अति आनँद घन बरसै ॥ बिन जल बन पल्लवित कियो अति फूली बसंतीलतिगन व्याजे । मानहुं हँसत अहै पावस कहँ मान सहित यहि समय बिराजै ॥ यह ऋतुलहि जड़तरु लतिकहुगण अंकुर मिस रोमांचलखावै । बिश्वनाथ आचरजकहाहै चेतनमन जो मदन बढ़ावै २ गुनियतु मनहिं कामतन जाग्यो यामें चित्त लगाई । ताते पंचतत्त्व मनसिजतन मिले बसंतहि आई ॥ अवनी अंश मिल्यो बनथलको सलिलत शशिभोलिनो । तेज बसंत शरीर समय जोतकियतुतामें भीनो ॥ मलय पवन यहि सांसताहि मिलि अनिल जुगत सुख छायो । बन अवकास निवास बसंतहि बसि अकाश तहँ भायो ॥ याते परम प्रबल ऋतु भूपति किय शिंगारको राजै । मुनिहु न मनते दूरि दियो करि करि रस शांत पराजै ॥ निज छबि ते मानिनि धीरज हरि पतिसों प्रीति करावै । बिन कारण उपकारण करिकै बिश्वनाथ संतत मन भावै ३ ॥

संग्रह०दोहा ॥ राम सखा गण परस्पर करत रसीली बात । पुनि सब आयसु मांगिकै गृह आये हरषात ॥

अथ श्रीरामचन्द्रजीकी वर्षगांठउत्सव ॥

समय शयन रघुवर किये जागे होत बिहान । सरयू जल मज्जन कियो दिय बिप्रनको दान ॥ सदा सजे दशरथ भवन, जनु ग्रह मार बिहार । रंभ खंभ सुंदर कलश द्वार सुबंदनवार ॥ चैत्र शुक्ल तिथि नौमि शुभ रामसाल ग्रहआज । सुनि प्रमुदित नर नारि सब सजे सुमंगलसाज ॥ रागगीती छंद ॥ गणपति नवग्रह आदि पूजन किये श्रीरघुराय । जिनहिं को भजत ब्रह्म हर सोइ भयउ नृपसुत आय ॥ कुल रीतिकरि गृह आयकै तन

सुभग राम सजाय । श्री रंग के मंदिर गमन कीन्हें सुगत-हरषाय ॥ दोहा ॥ धाम ललाम उतंग बर मनहुं रच्यो करतार। दरशन किय कुल इष्टके चारिहु राजकुमार ॥ नरिन्द्रछंद ॥ पिता सभा गमनतभे रघुबर बंधु सखनसँग लीन्हें । जनक चरणमें शीशनवाये भूपति आशिष दीन्हें ॥ रामचन्द्र मुखचंद देखि नृप चितवत मनहुँ चकोरा । अपने ढिग बैठायहु भूपति चारिहु राजकिशोरा ॥ चौबोलाछंद ॥ बर्षगांठ श्रीरामचंद्र की बाजत निकर नगारे । अवध नगर नर नारी प्रमुदित मंगलसाज सवाँरे ॥ बिधुबदनी मृगनयनी नवला पिकबयनी गजगमनी। चलीं मनोहर मंगलगातीं मनहुं काम की रमनीं ॥ कौशल्या आदिक महरानी बैठीं कर दरबारा । रघुनंदन दरशन की आशी कराति सुमंगलचारा ॥ पुरतिय आईं चरणन लागीं महिषी किय सतकारा । यंत्र बजावति नाचति गावति परम अनंदित दारा ॥ सजि पुरजन बाहन चढ़ि प्रमुदित दशरथ सभा सिधारे । सिंहासनपर लसत भूपमणि ढिग रघुलाल निहारे ॥ भूपति भेंट कीन हरषाने राम निछावरि कीनीं । बैठेलखत राम की सुखमा नवयौवन रसभीनीं ॥ रचिकर छंद बंदिजन गावत रघुकुल केरि प्रशंसा । राम सरिस सुत पायउ चारी जय भूपति अवतंसा ॥ बीण मृदंग बजत नटि नाचत गावति मंगल गीतैं । रामप्रताप अटूट कोशधन भूपदेत नहिं रीतैं ॥

कृपानिवास० पद चौताला ॥ राम रसिककी बर्षगांठ आज बाजत गाजत नवल नवल नगारे । युवती मंगल साजबनाये गाये मोद अपारे ॥ चंदन अंगनलेप सुगंधन रंगभरे बहु छुटतफुहारे । कृपानिवासी वारेमणिगण सारे दशरथवारे धारे ॥

युगलानन्यशरण०पद ॥ बधाई प्यारी बाजे आज । सुनत श्रवण सुख. सरस सौगुनो सुमन सुमति तरताज ॥ पुरघन बन बीथी बिच जहँ तहँ हुलसि रह्यो रसराज । रसिक सनेह सुआसाने मनु मधुकर रस सुखसाज । नृप रानिन उत्साह चाह चय अ-

कथ गिरा गणराज। युगलअनन्य बिपुल याचकजन करें कुतू-हल छाज १ रसीलीरंग बधाई बाजती चहुँओर ॥ कौनकह कौतुक कौशलपुर सुन्दर रंगरँगाई। बंदीवेद बिमल बिरुदावलि. बदहिं बिभव बरसाई ॥ सुनतशोर घनघोर मनोहर प्रेम प्रभा प्रगटाई। आली लिये कनकथाली कर कंज मंजु मनभाई ॥ सुधि बुधि भूलिगई निजयाकी कौन कहांते आई। युगलानन्य निछावरि तनमनदिन दृगदेवदिखाई २॥ गजल॥ सुनसुन सखी माती फिरै प्यारेकी बधाई। भला दिलबरकी बधाई ॥ हरतरफ नजर आतीहै रँगरंग की खुशियां। किसहीके नहीं होशमें उस जोशमें आई॥ कुर्बान किया दिल इसी दिलबरके वास्ते। पाया है प्रेमपान दरद दाह दवाई ॥ जो चाह मेरे मनमेंथी बिसयार दिनोंसे। करतारकी करुणाने युगल नैन दिखाई ॥

संग्रह०सोरठा ॥ अंतःपुर गय राम शासनपाय भुआल सों। हर्षित कीन प्रणाम सब जननिनके चरण महँ ॥ रानि प्रफु-ल्लितगात करतरामकी आरती। लेतिबलैया मात निउछावरि करिकै पुनी ॥ करत सहित सानंद राम आरती पुरतियें। गये धाम रघुचंद लैनिदेश निजमातुसों ॥ हरिगीतिकाछंद ॥ मणिहेम भवन बिशाल ऊपर संग सखि सियपिय गये। जगमगत हीरन सों सिंहासन ताहि पर बैठत भये॥ चहुँओर ठाढ़ीं सुन्दरी युग सखी चामर ढारहीं। दंपती रूप अनूप लखि तिय सकल तन मन वारहीं ॥ चौबोला ॥ सारंगी बीणा तंमूरा मंजीरा मिरदंगा। शब्दसुहावन यंत्रनके जनु श्रवण भरत रसरंगा॥ चन्द्रकला आदिक सखि चतुरी नाचति मनहुलसाये। गतिअनेक अरु हाव भाव बर पूरण सकल बताये॥ पिकबैनी शुभराग अलाप्यो सप्त स्वरन दरशीले। मनमोहनबर मदन मंत्र जनु गावति सरस रसीले ॥ सुनिकर कीन प्रशंसा सियबर अति प्रसन्न मनहोई। नाच गान अरु दंपति छबि लखि छकींतीय सब कोई ॥ दोहा ॥ अतर पान स्रग सखिनको देत सिया रघुलाल। परम प्रेमयुत

लेतहैं सब अंतःपुर बाल॥ अति पुनीत मधुमासबर सखिसोंकहे सखि बैन । सियबरकी सेवा करी सुखलीजै भरिनैन ॥

देवस्वामी०पदरागघाटो ॥ सियबरको शृंगार साजिये चैती दिन मो येराम फूलनहीसों । पीतबसन औ केसरअरपै भोग लगावे ये राम धूलनहीसों ॥ फूलनके भूषण रचिये छबि देखि नचिये राम फूलनहीसों । फूलन से हिंडोल बनावे सुख दून जामें ये राम भूलनहीं सों । इष्टदेव को ऐसे अरचत बचिजाय जियरा ये राम शूलनहीसों ॥

कविकेशवदास०दोहा ॥ प्राची दिशि ताहीसमय प्रगटभयो निशि नाथ । बर्णत ताहि बिलोकिकै सीता सीतानाथ ॥ हरनोछंद ॥ फूलनकी शुभगेंद नई । सूंघि शची जनु डारिदई ॥ दर्पण सो शशि श्रीपतिको । कै आसन काममहीपतिको ॥ आनंद कै पितु सों सुनिये । सोहति तारहि संगलिये ॥ भूपमनो भवछत्रधरेउ । लोक बियोगनि को बिडरेउ ॥ देव नदी जनु रामकह्यो । मानहुँ फूलि सरोज रह्यो ॥ फेन कियौं नभसिंधु लसै । देवनदी जनु हंस बसै ॥ दोहा ॥ चारु चन्द्रिका सिंधुमें शीतल स्वच्छ सतेज। मनो शेषमय शोभिजै हरिणाधिष्ठितसेज ॥ दंडक ॥ केशवदास है उदास कमला करसों कर शोषक प्रदोषताप तमोगुण तारिये । अमृत अशेष के बिशेष भाव बर्षत कोकनद मोद चण्ड खण्डन बिचारिये ॥ परमपुरुषपद बिमुख पुरुष रुख सुमुख सुखद बि-दुषन उर धारिये । हरिहैरी हियमें न हरिण हरिणनैनी चन्द्रमा न चन्द्रमुखी नारद निहारिये ॥

ज्ञानाअलि०पद ॥ प्यारी प्रियतम दृग अलसाने । उनिंदे मनहुँ सांझ सरसीरुह रतनारे मदसाने ॥ क्षण मूंदत क्षण खोलत नैना सखियन रुचि पहिंचाने । सुमन सेज मंडप सुमनन रुचि लखि सियपिय मनमाने ॥ अंसन भुज धरि बैठि सेजपर मंद मंद मुसुकाने । ज्ञानाअलि लखि यह दंपति छबि धनि जीवन निज जाने ॥

संग्रह०दोहा ॥ परमअनंदित शयन किय पिय प्यारी रसभीन। गान सखिनके सुनिजगे हरषित मज्जन कीन ॥ कह्यो सिया चलियेपिया देखन बागबहार। सुनि प्यारीके बैनमृदु बोले रामकुमार ॥ हरिगीतिकाछंद ॥ बोले बचन रघुलाल परम रसाल मृदु मुसकायकै। सुनियो बिदेह कुमारि जाहुसिधारि सखिनसजायकै॥ करि गमन प्यारी सकल नारी उर अति आनंद बढ़ी। सियकी सखी नवनागरी गुणआगरी यानन चढ़ी ॥ महाडोल बनोअनूप बैठी जानकी हरपायकै। गवनी सवारी बजत बाजेबाग पहुंची आय कै ॥ महा डोलते उतरी सिया तियगीत गावत सुखमई। आराम आनँद धामलखिकै नारि सब प्रमुदितभई ॥

पंडितहरिहरप्रसाद० दोहा ॥ नंदन हिय हहरत जरत चैत्ररथहु बिलखात। बैकुण्ठहुको बागबर श्रीवन देखिलजात ॥ श्रीबनमें बिहरत सिया लखिहंसी सकुचाहिं। लेशहु सम मम गंध नहिं कहि सब फूल लजाहिं ॥

देवस्वामी०पदजंगला ॥ सियाजू बिहरत श्रीबनमें। जहां छओ ऋतु सदाबसत है नयो सुख क्षण क्षणमें ॥ मंगल दिकन आठ सखियनके आठौ आसनमें। इनकेमध्य बिंदुसों राजत जस शशि तारनमें ॥ बहुत सुगंधित फूलन के द्रुम भँवर गुंज कुंजन में। रंगरंगके पक्षी बोलत लहरि उठत मनमें ॥ सियारूप पै झलकत जाके फूलन पातनमें। जो सुख यामें सो देवन के नाहीं नंदनमें ॥

पंडितहरिहरप्रसाद०दोहा ॥ कल्पवृक्ष मंदारयुत नितविनवत हरि पास। श्रीबिन सियमन सुखकरन तामें पाऊंबास ॥

देवस्वामी०पद ॥ सियाजूकोरमन श्रीबनमें। बेला गुलाब चमेली कमल जहँ महकतहैं क्षणक्षणमें ॥ छवोऋतुनके सुख नित जैसे इन्द्रिन के सुखमन में। कबहुं हिंडोला झूला कबहूं फूल डोलनमें ॥ शुक पिकआदि मनोहरपक्षी बोलिरहे कुंजनमें। जग मग ज्योति सियाजूकि सोहत सुंदर अलिजन में ॥ पूरण शरद

चंदकी चांदनि झलकति जस तारनमें। बन शोभा सखियनकी झमकनि अति शोभा सियतनमें। ईश्वर देवसुखहु को वारों जैसे कौड़िरतनमें॥

पंडित श्यामनाथ० सवैया॥ बिप्रनको शिरनाय तहां पुनिदान दिये नितके जगबन्दन। बाजन बाजत नौबतहैं कबिलोग पढ़ैं बहुभांति न छन्दन॥ राम सखा सब आये तहां सतकार किये तिनके रघुनन्दन। श्याम कहैं पुरबासी सदा चिरजीव रहौ दशरत्थके नन्दन॥

संग्रह० दोहा॥ करत बात मृदु सखनसों जहां सीयमन राम। चढ़े तुरंगन मुदित सब चले राम छबिधाम॥बागद्वार उतरेसकल कीन्ह प्रणाम प्रवीन। राम गये आराममें सखन गवन गृहकीन॥

देवस्वामी० पद॥ लाड़िली खड़ी हैं कंचन गोरी। अनियारे रत नारे लोचन औ बिछुवासी भौंह मिरोरी॥ दोउ पायँनमें लसत महावर अंजन लेत चितहि जनुचोरी। कुमकुम तिलक भाल अंगनमें सरस लगायो केशरि घोरी॥ मेहीं बिमल अम्बरिअम्बर रतनन जनु तारा छबि छोरी। आनन पूरण शरदचंद द्युति चहत श्यामको अंग किशोरी॥ करसे कदम डार धरि वाको जोहत चंदहि मनहुं चकोरी। तेहि क्षण भूषण देव रतनसी मिलि गइ श्याम गौरकीजोरी॥

केशव० सुंदरीछंद॥ अचानक दृष्टिपरे रघुनायक। जानकि के जियके सुखदायक॥ ऐसे चले सबके चल लोचन। पंकज बात मनो मनरोचन॥ रामसों राम प्रिया कह्यो यों हँसि। बाग देखा वहु लोचन के शशि॥ राम बिलोकत बाग अनन्तहिं। ज्यों अवलोकत काम बसन्तहिं॥

संग्रह० दोहा॥ देखनलागे बागकी सुंदरता सियराम। कहे बचन सखिसों सखी निरखहु जोरि ललाम॥

पंडित हरिहर० दोहा॥ इत कलँगी उत चन्द्रिका कुंडल तरिवन कान। सिय सिय बल्लभमो सदा बसौहिये बिचआन॥

देवस्वामी० रागपदधनाश्री ॥ बसौ यह सियरघुबर को ध्यान । श्यामलगौर किशोर बयस दोउ जे जानहुं की जान ॥ लटकत लट लहरत श्रुति कुंडल गहननकी झमकान । आपुस में हँसि, हँसिकै दोऊ खात खिआवत पान ॥ जहँ बसंत नित मह मह महकित लहरत लताबितान । बिहरत दोउ तेहि सुमन बाग में अलि कोकिल करगान ॥ ओहि रहस्य सुखरसको कैसे जानिस केअज्ञान। देवहुंकी जहँ मतिपहुंचति नहिं थकिगे वेद पुरान ॥

पं०हरि हर०दोहा ॥ बिहरत गलबाहीं दिये सियरघुनंदन भोर । चहुँदिशि ते घेरेफिरत केकी भँवर चकोर ॥ नकमुक्ता लहरैंइते उत नथमोतीहाल । बिहरतगलबाहीं दिये निरखहु झांकीहाल॥

केशव०सुंदरीछंद ॥ बोलत मोर तहां सुखसंयुत । ज्यों बिरदावलि भाटनकेसुत ॥ कोमल कोकिलके कुल बोलत । ज्ञान कपाट कुची जनुखोलत ॥ फूलतजै बहुवृक्षनको गनु । छोड़त आनँद आंशुनको जनु ॥ दाड़िमकी कलिका मनमोहति । हेम कुपी जनु बन्दन सोहति ॥ सवैया ॥ फूले पलास बिलास थली बहु केशवदास प्रकाश न थोरे । शेष अशेष मुखानलकी जनु ज्वाल बिशाल चली दिविओरे ॥ किंशुक श्री शुकतुंडनकी रुचि राचे रसातलमें चित चोरे । चोंचनचापि चहूंदिशि डोलत चारु चकोर अँगारन भोरे ॥

संग्रह०दोहा ॥ लतन पतनकी कुंजमें करत पक्षिगण शोर । नव नागरि बोली बचन सुनियो राजकिशोर ॥

पण्डितप्रवीन कवित्त ॥ बल्लीको बितान मल्ली दलको बिछौना मंजु महलनि कुंजहै प्रमोद बनराज को । भारीदरबार भिरी भौंरनकीभीर बैठी मंदन दिवान इतमाम कामकाजको ॥ पंडित प्रवीन तजि मानिनी गुमान गढ़ हाजिरहजूर सुनि कोकिला अवाजको । चोपदार चातक बिरद बढ़ि बोलेदर दौलतदराज़ महाराज ऋतुराज को ॥

प्रेमसखी कवित्त ॥ प्रेमसी कोकिला नकीबसी पुकारतीहै मंद

गति मारुत गयंदनको साजुहै । ठौर ठौर बाजीले बिराजे वृक्ष किंशुकके प्यादेसे गुलमलता भ्राजत समाजुहै ॥ स्यंदन रसाल नामें रथी रतिनाथ बैठो फूल शर धनु हाथ भट शिरताजुहै । महाराज रघुराज रावरे मिलनहेतु सेनाचतुरंगसंग आयोऋतु-राजुहै ॥ सवैया ॥ बौर झुके चहुँघा अवलोकिये मानो करै जु बसंत जोहारहै । डारैं रसालकी डोलैं सबै जनु राघवतेज ते कंपित मारहै ॥ सेवती कुंद निवारी गुलाबके फूल धरे सब भेंट अपारहै । प्रेमसखीकरजोरि खरो सबकोहितुहै ऋतुकोसिरदारहै ॥

अन्यकवि सवैया ॥ वृक्षन बल्ली चढ़ीकिरि चोप भली अलिनी मधुपी मुदकारी । कोकिल शारिका कीर कपोत करैं ध्वनि माधुरी कानन चारी ॥ फूले सबै बन बाग तड़ाग भरे अनुराग पिया अरुप्यारी । चैतमें चारु बिहार करैं दशरत्थकुमार बिदेह कुमारी ॥

रघुराजसिंह०कवित्त ॥ बिकसत कुसुम बिलास बर बेलिन को बगरी सुबास बन बिबिध बिहारहै । बिधु को बिकास बिश्व बिमल भयो है व्योम बोलत बिहंग वृक्ष बैठे बारबारहै ॥ बसुधाधिराजको सुबेटा बर रघुराज बलित बिदेह बेटी बिरचि बिचार है । बदत सुबैन बाम लोचनी बिलोके बसुधामें बसुधाधर बसंतकी बहार है ॥ बिकसे सुवारिज बिमल बारिजा करन बिश्व में बिभाकर बिभास बिलसंतहै । बीरुधत्यों बिदलबिलोकि बिरहीन व्यथा बिटप बिशोक करैं नवदल्लवन्तहै ॥ रघुराज बदत सुबैन हे बिदेह वाले बिपुल बिलोकिये बहार बरधन्त है । बालन में बागन में बासनमें बारनमें बनमें बगारनमें बसत बसन्तहै ॥

केशवदास०दोधकछन्द ॥ बेल के फूल लसैं अति फूले । भौंर भवैं तिन के रस भूले ॥ यों कर बीर करी बन राजैं । मन्मथ बाणन की गति साजैं ॥ केतक पुंज प्रफुल्लित सोहैं । भौंर उड़ैं तिनमें अति मोहैं ॥ श्री रघुनाथहि आवत भागे । जे अपलोकहु ते अनुरागे ॥ दोहा ॥ श्याम शोण द्युति फूलकी फूले बहुत पलास । जरे काम कैला मनों मधुऋतु बात बिलास ॥ तोटक

छन्द ॥ बहु चम्पक की कलिका हुलसी । तिन में अलि श्यामल ज्योति लसी ॥ उपमा शुक शारिक चित्त धरी । जनु हेम कुपी रस सोंध भरी ॥ चौपाई ॥ अलि उड़ि धरत मंजरी जाल । देखि लाज साजति सब बाल ॥ अलि अलिनी के देखत भाई । चुम्बत चतुर मालती जाई ॥ अद्भुत गति सुन्दरी बिलोकि । बिहँसति हैं घूंघट पट रोकि ॥ गिरतसदा फल श्रीफल ओज । जनु धर धरत देखि बक्षोज ॥ तारकछन्द ॥ उदरे उर दाड़िम दीह बिचारे । सुत तीन के शोभन दन्त निहारे ॥ अति मंजुल बंजुल कुंज बिराजैं । बहु गुंजनिके तन पुंजनि साजैं ॥ नर अंध भये दरशे तरु मौरे । तिनके जनुलोचन हैं यकठौरे ॥ थल शीतल तप्त स्वभावनि साजैं । शशि सूरज के जनुलोक बिराजैं ॥ जल यंत्र बिराजत भांति भलीहै । धरते जलधार अकाश चली है ॥ यमुना जल सूक्षम वेष सँवारेउ । जनु चाहत है रविलोक बिहारेउ ॥ चचरीकछन्द ॥ भांति भांति कहौं कहां लगि बाटिका बहुधा भली । ब्रह्म घोष घने तहां जनु है गिरावनकी थली ॥ नील कण्ठ नचैं बने जनु जानिये गिरजाबनी । शोभिजैं बहुधा सुगन्धैं मानों मलयबनकी धनी ॥ चौपाई ॥ करुणामय बहु कामनि फली । जनु कमला की बासस्थली ॥ शोभे रम्भा शोभासनी । मनो शची की आनँद बनी ॥ कमलछन्द ॥ तरु चन्दन उज्ज्वलता तन धरे । लपटी नव नागलता मनहरे ॥ नृप देखि दिगम्बर बन्दन करे । चित चन्द्रकला धर रूपनि भरे ॥ अति उज्ज्वलता सब कालहु बसै । शुककेकि पिकादिक कण्ठहुलसै ॥ रजनी दिन आनँद कन्दनि रहै । मुख चन्दन की जनु चंदनि अहै ॥ तोटकछन्द ॥ सब जीव को बहु सुक्ख जहां । बिरही जन हीं कहँ दुःख तहां ॥ जहँ आगम पौनहिं को सुनिये । नितहानि असौंधहि को गुनिये ॥ तारकछन्द ॥ तिनमें एक कृत्तिम पर्वत राजै । मृग पक्षिन की सब शोभहि साजै ॥ बहु भांति सुगन्ध मलय गिरिमानो । कलधौत स्वरूप सुमेरु बखानो ॥ अति शी-

तल शंकरको गिरिजैसो । शुभ श्वेत लसै उदयाचल ऐसो ॥ द्युति सागरमें मैनाकमनोहै । अजलोक मनों अजलोक बनो है ॥ तोटकछंद ॥ सरिता तिनते शुभ तीनि चली । सिगरी सरितानकी शोभदली ॥ यक चंदनके जलउज्ज्वल है । जग जह्नु सुताशुभ शीतल है ॥ चौपाई ॥ सुरगजकी मारग छबि छायो । जनुदिविते भूतल परआयो ॥ जनु धरणी में लसति बिशाला । त्रुटति जुही की है घनमाला ॥ दोहा ॥ तज्यो न भावै एकपल केशव सुखद समीप । जासों सोहत तिलक सो दीन्हे जंबूदीप ॥ दोधकछंद ॥ ऐंड़न के मदकै जनु दूजी । है यमुनाद्युति कै जनु पूजी ॥ धार मनों रसराज बिशाला । पंकज जाल मयी जनु माला ॥ दोहा ॥ दुख खंडन तरवारिसी किधौं शृंखलाचारु । क्रीड़ा गिरिमातंग की यहै कहै संसारु ॥ क्रीड़ा गिरिते अलिनकी अवली चली प्रकास । किधौं प्रतापा न लनकी पदवी केशवदास ॥ दोधकछंद॥ और नदी जल कुंकुम सोहै । शुद्ध गिरामन मानहुं मोहै ॥ कंचन के उपबीतहि साजै । ब्राह्मणसों यह खंड बिराजै ॥ स्वागताछंद ॥ लौंग फूल मय सेवटि लेखी । एक बीज बहुबालक देखी ॥ केरि फूल दल नावन माहीं । श्री सुगन्ध तहँ है बहुधाहीं ॥ दोहा ॥ खेवत मत्तमलाह अलि को बरणै वह ज्योति । तीन्यों सरिता मिलित जहँ तहाँ त्रिबेणी होति ॥ सीता श्रीरघुनाथजू देखी श्रमित शरीर । द्रुम अवलोकन छोड़िकै गये जलाशय तीर ॥ चौपाई ॥ आई कमलबास सुखदेन । मुख बासन आगे है लेन ॥ देख्यो जाइ जलाशय चारु । शीतल सुखद सुगन्ध अपारु ॥ मरहट्टाछंद ॥ बनश्री को दर्पण चन्द्रातप जनु किंधौं शरदअवास । मुनि जन गण मनसों बिरही जनसों बिशबलयानि बिलास ॥ प्रतिबिम्बित थिरचर जीव मनोहर मनुहरि उदरअनन्त । बंधुन युत सोहैं त्रिभुवन मोहैं मानों बलियशवन्त ॥ चौपाई ॥ विषमय यह सब सुखको धाम । शम्बर रूप बढ़ावै काम ॥ कमल न मध्य भ्रमर सुखदेत । सन्त हृदय जनु हरिहि समेत ॥ बीच

बीच सोहैं जलजात। तिनते अलिकुल उड़ि उड़िजात॥ सन्त हियनसों मानहुं भाजि। चञ्चल चलीअशुभकी राजि॥दण्डक॥ एक दमयन्ती ऐसी हरै हँसि हंस बंस एक हंसिनीसी बिशहार हिये रोहिये। भूषण गिरत एकै लेती बूड़ि बूड़ि बीच मीनगति लीन हीन उपमान टोहिये॥ एक पतिकण्ठ लागि लागि बूड़ि बूड़ि जाति जल देवतासी दृगदेवता बिमोहिये। केशवदास आस पास भवँर भवँतिजल केलिमें जलजमुखी जलजसी सोहिये॥ दोहा॥ क्रीड़ा सरवरमें नृपति कीनी बहुबिधि केलि। निकसे तरुणिसमेत जनु सूरज किरणि सकेलि॥ हाकलिकाछंद॥ नीरतें निकसीं तिय सबै। सोहतिहैं बिन भूषण तबै॥ चन्दन चित्र कपोलन नहीं। पंकज केशर शोभ तहीं॥ मोतिनकी बिथुरी शुभछटैं। हैं उरझीं उर जात न लटैं॥ हास शृंगार लता मनु बनी। भेंटतकल्पलता हित घनी॥ केशनि ओरनि सीकररमैं। ऋक्षनको तमयी जनु बमैं॥ सज्जल अम्बर छोड़तबने। छूटत हैं जलके कणघने॥ भोग भले तिनसों मिलि करे। बिछुरत जानि ते रोवत खरे॥ भूषण जे जलमध्यहि रहे। ते बनपाल बधूटिन लहे॥ भूषण वस्त्र जबै सजिलये। चारिहु द्वारन दुन्दुभिभये॥

संग्रह०दोहा॥ गलबहियां कीन्हेचले लैसखिवृन्द बिशाल। आय कुंजमहँ मुदित मन बैठे सिय रघुलाल॥

कृपानिवास०पद॥ बंदेसरसा सरसबसंते सीतासह श्रीरामं। सरयू पुलिनेमणिगणरमणे बिद्युद्युति घनश्यामं॥ बिपिन निकुंजे प्रफुलित कंजे प्रमदागण अभिरामं। बल्लीद्रुम भवने श्रम सशमने शोभिततन शतकामं॥ करिरिवकरणी नां बिहरंते केलि, कला गुणग्रामं। ललना लीला या खलु लुब्धं मम दृगलाभ ललामं॥ करपूरागर केशरि सलिले रमते रतिरस धामं। मनमथ मथने यत्न सुनिपुने कान्ताकृत भुजदामं॥ नवरँग मुकुरे मधुकर निकरे पिकमुखरे बिश्रामं। बिगलित कच कुच सुरति सुधीरा रमणी धरि भुज बामं॥ शीतलमंद सुगंधित पवने काम

कला कमनीयं। मद्मासने रसिकगिरजीतं रमणीरसरमणीयं॥ कोकिल कीर कुरंग बिलासे बालसुखद नवरूपं। परमानंदे सखिजनबंदे नायक गणमणि भूपं॥ ऋतुपतिकाले परमरसाले इत्थं नित्य बिलासं। कृपानिवास बदति मैंहूं दिनों कुरुकान्तास उरबासं १ आजत सुछबीलीतन बसंत। एजी प्रणतपाल हित रसिककंत॥ एजीबाल तरुणता संधिपाय। बैसंधिनि बाला बनि सुहाय॥ एजी मदन मनोरथ द्रुमन जाल। दल फूल फरे योवन रसाल॥ किंकिणिनादे भूषण नुनाद। एजी शुक पिक चातक शकुनसाद॥ एजी कुचन कुंभ उर चौक पूरि। पुनिपिय पूजी केशर कपूरि॥ एजी कर कटाक्ष शीतल सुगंद। एजीचिकुर अलिकुल बदन चंद॥ एजी बिगस सुमन रस हँसत मंद। रस राम रँगीले उरभिफंद॥ एजी रंगधाम अभिरामबाम। मन बांछित सुखप्रद सुघर काम॥ एजी जयति कृपा स्वामिनि बिलास। जहँ देखिभुलानी अलि निवास॥

देवस्वामी० पद॥ सिय भइ सुभग मदनकी बाग। सुमन बाटिका परम मनोहर ताको मनहुं सोहाग॥ रूप बसन्त मृदुल कर पल्लव भुज बल्लिनकी लाग। नयन कमल जंघारंभासी महक मनहुं अनुराग॥ देखि राम मन भवँर लोभाना अलख प्रेम रसपाग। नाभि बहुतगंभीर सरोवर जहँ दुइ हंस बिभाग॥ पीत बसन परिखाजनु सोहत भूषण ध्वनि खगबाग। सियाराम को तागजुरतहीं भागदेवके जाग॥

ज्ञानाअलि० पद तिल्लाना॥ सुंदरि सिय श्यामा श्यामरी। बैठे सुमन शृंगार किये दोउ जग जीवन सुखधामरी॥ जनक लली नृप अवध दुलारे छबिगुण रूप अँग अँग भारे संग ललना गण गुण गरबीली दमकैं ज्यों द्युति दामरी॥ सुंदर श्याम गौर मृदु जोरी वारि वारि रति मदन करोरी। तृणतोरी नखशिख लखि गोरी बयथोरी अभिरामरी॥ नवल लाल लाड़िली सलोनी अवध ललन ललना प्रियलालन गुण गण आगर ललित लाल

प्रिय नामरी । भाव भरे भामिनि सिय बल्लभ बड़भागी भाविक मन भावन ज्ञानाअलि जनु छबि शृंगार दोउ निरखत मन बिश्रामरी ॥

बिश्वनाथसिंह०पद ॥ सिय ऋतु बसंतमें संग कंत । बहु बिधि बिहरत लहि मुद अनंत ॥ पुनि संग सखिन गृह गौन कीन । बिश्व नाथ छकत मुद नित नवीन ॥

अथ श्री जानकी जू का बर्षगांठ उत्सव ॥

संग्रह०पद ॥ भोर भये जागे सियरामा । शोभा लखि लाजहिं रति कामा ॥ उठि रघुनन्दन बाहिर आये । प्रात कर्म करि सभा सिधाये ॥ इत सियको सखियां अन्हवाई । अति अनुपम शृंगार बनाई ॥ बिप्र बधू गुरुपत्नी आई । बर्ष गांठ पूजन करवाई ॥ सर्वेश्वरि सिय राम पियारी । सुर पूजति जनु प्राकृतनारी ॥ दान दीन्ह सिय बिबिध प्रकारा । द्वार द्वार बहु बजत नगारा ॥ देव रमणि बनि कपट सु भामिनि । आई देखन सीता स्वामिनि ॥ नागरि करति समाज तयारी । राम प्रताप मुदित सुरनारी ॥ हरिगीतिकाछंद ॥ बैशाख शुक्ला नौमि सियकी साल गृह उत्सव महा । शृंगार करि चलि जानकी गृह सखिन प्रति यक सखि कहा ॥ पुरनारि चलि रनिवास आईं देखि परि सन्मुख सिया । युग अली चामर ढारतीं बहु बस्तु लै ठाढ़ीं तिया ॥ राजत सिंहासन जानकी चहुँओर भामिनि वृंद है । अलि उडुगणन के मध्यमें जनु सीय पूरण चंद है ॥ पुर नारि सिय पद लागतीं प्रमुदित रतन मणि वारतीं । मधुरे बचन सों तियनको मिथिले शजा सतकारतीं ॥ दोहा ॥ रमा उमा ब्रह्मानि शचि रति आदिक सुरनारि । प्रेम बिवश होय सीयकी सेवा करति सुखारि ॥

पण्डितहरिहरप्रसाद०दोहा ॥ राम बल्लभा जनकजा जासम जग नहिं आन । ध्यावत मनभावत लहत गावत वेद पुरान ॥

देवस्वामी०पद ॥ यह जनकलली को ध्यानहै । रामउपासक शुचि संतनको सर्बसुजीवनप्रानहै ॥ कंचनरचि सुभगभद्रासन मोतिन

कीलहरानहै।तापरबैठीचन्द्रज्योतिसीभाननचन्द्रसकानहै॥लाल चरणतल लालैकरतल लालबसन परिधानहै।अंगअंग लखिपरत मनोहर भूषणकी झमकानहै॥ दोउकरकमलन कमलाबिराजत सखी खवावत पान है। चँवरढरत गृह मह मह महकत बाजत देवनिशानहै १ सियजू रानिनमें महरानी। औरसभै रौतानी॥ चितवत भौंहखड़ी करजोरे इन्द्रानी ब्रह्मानी। गौरापानलगावत रचि राचि रमाखवावत आनी॥ आठौसिद्धि खड़ी करजोरे नवनिधि मनहुं बिकानी। कोटिन ब्रह्माण्डनकी प्रभुता रोमरोम अरुझानी॥ जो माया एकैघाटेपर सबहिं पियावत पानी। सोउचाहत जाकी करुणाको बारबार सनमानी॥ जाबिन पातौ हिलिनसकत जो सब घटमाहँ समानी। संत जननकी इष्ट देवता राम प्रिया जगजानी २॥

पंडितहरिहरप्रसाद०दोहा॥ गुणहतिक कहनो सुनन भागे अकथ अपार। सियछबि गुणते पारगुणि सकुचत करत बिचार॥

देवस्वामीपद॥ सियजूकी छबि मोसेकहिनहिंजाय। इन्दीबर सेनयननमें परिसुरमा अतिशरमाय॥ पानपकि अधरनपर आवत फीकी लाललखाय। नयोंमजीठी लालमहावर पदकेछुवत हेराय॥ कनकबरण तनमेंकशमीरी केसरलागि नहिं नाय। अंग अंग चमकनसे भूषण चमक मन्दपरिजाय॥ शरदचांदनीमें तारा गण छबि जस कछुदरशाय। सीयदेवता सकल छबिनकी कहौं सो इहांशरमाय सूर्यचंद तारागण याकीझलककहिसे झलकाय॥

पंडितहरिहरप्रसाद०दोहा॥ शेष सियागुण अगमकहँ कहनलगे दै ताल। कहिनसके खाएकशक लाजनि धसे पताल॥

देवस्वामी०पद॥ श्री जानकी रहस्य अगम अति कैसेकै कोउ जानैगो। भूमिसुता कोउ जनकसुता कोउ कोउ लक्ष्मीकरिमानैगो॥ कल्पित सही कहौंनकहांसे बीज रुधिरको आनैगो। विद्या रूप कहैगोकोऊ तदपि नहीं पहिचानैगो॥ तहां अविद्या मिलिहै तबका दोउ एकैमें सानैगो। कोटिनब्रह्माण्डनकी जननी कोउ

ऐसीमति ठानैंगो ॥ मायातकतो सूतमिलाहै धुरलों कैसेसेतानैं-गो । देवमुनिनकी जान रामहैं यामेंवेदप्रमानैंगो ॥ रामजानकी जान जानकी कातहूँ पतित बखानैंगो ॥

युगलानन्यशरणपद० ॥ हरषीं मिथिलापुर नारियां । बरषबधावन नवलसिया सुनि महामोद उरधारियां ॥ मंगलपुरचहुंपासराशि सुख बीथी बगर बजारियां । अतिअनुराग जाग सबके हिय रमा उमा मतवारियां ॥ युगल अनन्य बधाई सियकी गावत प्रीति प्रचारियां १ हरषीं मिथिलापुरनारियां।बर्षबधावन जनक ल-लीको मोदप्रमोद निहारियां ॥ फूलीकली मनोरथबेली रसिक ज-नसुखकारियां।युगलअनन्यपरममंगलउररंगआरतीसाजियां २

कृपानिवासम०पद ॥ नगरबगरमें धूमसुघरघर बर्षगांठ प्यारीजन-कललीकी । गावतप्रमदा बिशदबधाई सुभगसुनैना कोखफली-की ॥ मंगलगंधप्रकट मिथिलासर रामभँवराहित कमलकलीकी। बिपुल बिलास प्रकाश सकलजग जीवनकृपानिवास अलीकी ॥

संग्रह०दोहा ॥ उतदशरथघरनी सबैबैठी सजिशुभसाज । आई सासुनगृहे सिय संगमें सखी समाज ॥ सासुनसों शासन लई चलिआई निजअयन । नृत्यगानलखि सखिनके सियारामकिय शयन ॥ प्रातजगे नितनेमकिय दानदिये सियकंत । नितनवमं-गल मोदमें भावसंतकरअंत ॥

इतिबसंतऋतुबिहारसंग्रहसमाप्तः ॥

श्रीसीतारामोजयति ॥

अथ ग्रीष्मऋतु विहार ॥

संग्रह बर्णन ॥

बिश्वनाथसिंह० पद ॥ बैठे सोहत सियाराम एक समय सिंहासन आसन आस पास सखियनके मंडलराजहीं। पाणि जोरि यक सखी सयानी अपने मन ग्रीषम अनुमानी मृदुबानी रस सानी बतियां यों कहीं ॥ बिन अपराधै पथिक जनन पुनि पति बांछित नारिनको बिथहि हृदय दाहत बसंतभो अंतहै। यदपि तेज सहित ग्रीषम तन तदपि रमणि आगमन जनावै सीय रोकर बिरहिनि हियरेसम संत है ॥ निकट बसे हिय रस उपजावो युवतिन युवन सँयोग करावो यह बसंतने निदरि लैआवहि दूर के। जे बिरही यक बिधुहि बिलोकत ते बसंत बिबिध बिधि शोकत ते गवने जब अयन तपित कर सूरके ॥ पथिन देहिं अवसरन नारि बहु मुख शशिन निहारि निहारी तेइ बिरही रहत अनंद अघाय है। अरिदलि प्रजन सकल सुख सारत यह जनु नृपकी नीति बिचारत भारि बसंतहि फल दिये फल छायहै ॥ सरस सूखिगय है घन बन बिकलहि जाय छयहै मृगगण सूचित कराहिं स्वामि ढिग जाकर जनुरिपु दुखलहै। निरधन निकटरहत नहिं गायन सोइ अनुभव अब भयो तकतबन कुसुमनि बिन रस लतिकन अलिगण बकुलन नहिं रहै ॥ ग्रीषम ताप अज्ञान ताप हर द्वै औषधि ये बदहिं बिबुध बर बरकर सरसिज मृदमैकुच हर परसन। चलिये प्रभु शीतल खसखाने मोउर डरपत पवन सरसने सुनि गवने बिश्वनाथनाथ ग्रीषम सरसने ॥

संग्रह०दोहा ॥ सुनि नागरिके बचनबर दूजी सखिहरषाइ। मधुर बैन बोलतभई अपनी युक्तिबनाइ ॥

रघुराज० कवित्त ॥ गहनमें गावनमें गिरिमें सु गोधनमें गृह में गिरामें गोरी ग्रीषम यों छैगयो। गानमें सु गायकमें गुनमें गुनी जनमें गोपति गोगणमें गर्म अतिह्वै गयो ॥ गोमें पुनि गोमें पुनि गोमें पुनि गोमें गुरु गुरु जनहूमें त्यों गलानि गुण बैगयो। रघुराज गदत गरीबको नेवाज गाढ़ो ज्ञानिनके ज्ञानमें अज्ञान अज्वै गयो ॥ गुलगुले गिलिम गलीचे गादीगेह बिछे गोरसके फेन ऐसे गरक गुलाब हैं। गोरस गिलासनमें हिमगिरि गोहनके गिरत सु गैलनमें गेहनते आवहैं ॥ गौरि गंग सरिस सुगेहनी सुनैरी गिरा रघुराज गदत गुमानके गमावहैं। गिरिते गहनते गवाक्षनते गौन करैं ग्रीषम गुरावकीये गरम गिरावहैं ॥

संग्रह० दोहा ॥ ग्रीषम ऋतुमें हेसखी तपनि दिवस अरु रैन। लाललली सुकुमार अति सुनी अपरकह बैन ॥

देवस्वामी०पदरागसारंग ॥ ग्रीषममें पूजोंगी सियबरको। महँक-दार रंगी फूलनसे रचिहौं सुंदर घरको ॥ अतर गुलाब सींचि चारिउदिशि पवन झकोरै करको। रूप फुहारे धरिहौं जन में शुचि सुगंध जलभरको ॥ तावदानमें सरस धूपको देइहौं डारि अगरको। भीतरपूरी चंदनके पट मृगमद बहुत गरको ॥ ताके बीच कनकसिंहासन सजिमोतिनके लरको ॥ तापर इष्टदेवको भजिहौं घसिचंदन केसरको। तीनिताप तब आपुनशैंगे पाय अनंद लहरको ॥

बिश्वनाथ० पद ॥ रामसिय शीतल खसखाने राजिरहेहैं। मंडित मलयज धुरी कपूरनि पुहुमी लतनि वितान तनेनभ सुछबिगहे हैं ॥ तामधि चंदकिरणिसे नीके सिंचे सुगंधनि बिछे बिछौना पलँग डसे हैं। छातै छतनि झरोखनि झांपैं तारवानि अतरदान छबिथापैं अति बिलसेहैं ॥ चहुंकित कुसुमनि परवुरिन नल जल कन कन मुकुतन शोभसनेहैं। क्यारिन बीच बारि

बहि बिलसत बहुबिधि बनज बिचरिरहे चंचल मीनधने हैं ॥ चंद्रमणिन सिंहासन बैठे सिय रघुनंदन आगे अलियां गायरही हैं। बीण मृदंग उपंग तमूरनि कोउ बजाय बर स्वर गहि-गावत सुख उमहींहैं ॥ कोउसखि चमरकरहिं हियहरषित कोऊ कुसुमनिके बिजन चलावत चपललसी हैं। बिश्वनाथ तेहि अवसर ध्यावत तीनिहुं तापहि तुरत नशावत मति हुलसी हैं १ जानकी करलै बीण बजायो॥ सब मुरछनन श्रुतिन संग शा-रँग पंचम स्वरन दरन दरशायो। पैंतस कोटितान बिस्तारे ठोंकि मींडि लिय भेदै। करि आलापनि गायगीत बिश्वनाथ बजायो बेदै २ छबिमय पुहुकरनीको पुहुकर मनहुं ओसकण छाजै। सियमुख श्रमसी कर अतिराजै॥ लै सियबर सो बीण राम अति हिय हरषि बजायो। बिश्वनाथ सबके श्रवणन घन आनँद रसबर लायो ३ जानकी शारंग सरस अलाप्यो। मन मोहन पिय मन मोहन मनु मोहन मंत्रै जाप्यो॥ हरि हिय हरषि हारनिज गल को सिय गलमों पहिरायो। बिश्वनाथ लखि सुछबि स्वामिनी सखियन गण सुखछायो ४ ॥

ज्ञानाअलि०पद राग सोरठ॥ खसखसके बँगले नीके छाये नव-कुसुम कलीके। सरस फुवारे बरसत झरिझरि सुखद मनोहरही के॥ केशरि अगर अंग अनुलेपन सुमन शिंगार सीयपीके। झीने बसन अंग छबि दरसै सरसै स्वाद अमीके॥ फूले कमल तड़ागन बागन सुमन सुगंध सरस जीके। ज्ञानाअलि त्रिभुवन सुखमासुख जेहिलखिलागतफीके॥

युगलानन्यशरण० गजल॥ बँगला बना दिलदारका क्या खूब रँगीला। खिरकी लगी हरतरफ शरफ शान सजीला॥ फूलोंकी अजब तौरसे नक़शा नवीनहै। खुशबूसे मुअत्तरहुआ कुल खल्क़ रसीला॥ खसकी खुशी भरीहुई टट्टीहै तरबतर। जीता है जिस में माह बरफ शरदकी लीला॥ मनके हरन रँगीन नहर कहर गमहरे। छूटे अजब अजूब से सरशार नवीला॥ आगे बहारदार

रचे खुशबागकी खूबी । हरदमें कली खिलती है सौंदर्य वसीला॥ इसतौरके बंगलेमें जशन जानकी जीवन । लखियेलगन लगाय के भली हेम छबीला ॥

बिश्वनाथसिंह०पद ॥दोउ सुखसने गये तहखाने। जाकी दिपाति दिवाल बरफमय बिबिध कुसुमके बने बिताने ॥ अवनी भरयो सुगंधित पानी बूड़े पदिक पलँगके पाये । श्वेत पीत औ नीलक लाले जलमें परे कमल भलभाये ॥ क्षीरफेन औ स्वधासफाई निदरत बिछी सेज छबिछाई । तामें दोउ सोये सुख भोये हरषैं अलियां पांयदबाई ॥ कोई सखि बिजनडोलावैं करलै चूरी । कंकण वजन न पावें ॥ बिश्वनाथ यहि अवसर ध्यावते तीनों ताप तुरत मिटि जावें १ जागि दोउ सरयू बिहार करि बागहिं आये । बरबिहारकर बिबिध भांति पुनि सदन सिधाये ॥ बैठे सितघन घटा अटनलत चहुँकित भाये । बिश्वनाथ ब्यारी करि दोउ बीरि न खाये २ सखी कोउ कह्यो करिय सुख शैन । मूंदहिं खुलहिं नींदबश दोऊ लसहिं अलसयुत नैन॥ सुनि सोये सुखभोये सखियां ब्यजन करहिं युतचैन । बिश्वनाथ करिगान पाहरू फिरहिं चहूंकित ऐन ३ ॥

चंद्रअली०दोहा ॥ बजत बाजनेरंगके अंतहपुर चहुंओर । श्रवण सुनत नागरिनमन मोद प्रमोदन थोर॥हेसजनी रजनी गई उर अति भई उमंग । कबदेखैं पर्य्यंकपर लली लाल दोउ संग ॥ जगे ठगे मन सखिनके पगे प्रेमकी ओर । लगे लगनिमें जगमगे सिय पिय खगे मरोर॥ अरस परस भुज अंशदै नवपरयंकासीन । नेह देह सुधि बिगत सखि लखि किन परम प्रवीन १ हे सजनी या दम्पति छबिपै कहा वारने कीजे । प्रीति बिवश मांतेगत सुधि लखिनिवछावरि जलपीजे ॥ जिनकेजागत अंग प्रभाते रबिकर आभलजानी । जादिन करकी ज्योति सखि दमकत मणिगण अभिमानी ॥ तन मन प्राण मीन गति यह जल सिय पिय निरखतजीजे । गवर श्याम सुखधाम रूपमणि

मधुर माधुरीपीजे ॥ अरस परस शिंगार मारछकि कियो लियो रसभारी । नवपरयंकासीन सुभग दोउ चन्द्रअलीबलिहारी ॥

संग्रहकः०दोहा ॥ उठि शय्याते राम सिय प्रातकृत्य सबकीन । पुनि दंपति अतिहेतुसों भोजनकिय सुखभीन ॥

इति ग्रीष्मऋतुबिहार समाप्तः ॥

श्रीसीतारामायनमः ॥

अथ पावसऋतु बिहार ॥

संग्रहवर्णन ॥

विश्वनाथसिंह०पद ॥ एकसमय बैठेरघुनन्दन कह्यो लखहु सावन छबिछायो । सोसुनि बचन सखा रघुबरसों कहतभयो मन भायो ॥ केवल पथिकजनहि सतावत जो ग्रीषम यह अंतभयो है । अचरजकहा जगतदुखदायक अनय जोग्रीषम छीजगयोहै ॥ मेदुर मुदिर मढ़े अंबरबर चहुंकिबकत ससहितउछाहै । ग्रीषम आतप तपितजगतताकि पावस मनहुं छबिकिय छाहै ॥ तृण जल आदिक प्रजन जीविका ग्रीषममहँ महि ग्रास जोकीनी । पावस राज सुराजपायके विश्वनाथ प्रकटे करिदीनी ॥

संग्रह०दोहा ॥ बैठे निजमहलन अटा सबसमाजयुत राम । देखि श्यामघन कोउसखा कहेबचन अभिराम ॥

विश्वनाथसिंह०पद ॥ कोउकह घन येगरजि बरसिकै जगग्रीषम गरमी तुरतनशावै । जिमि मज्जनउपदेशनि करिजन हिय हरि तापनि सुखसरसावै ॥ श्यामशरीर पीतपट विजुरी अरु सुरधनु

उपवीत बनाये । विश्वनाथ मणिमाल बलाका जगपालत घन हरि छबिछाये ॥

बिश्वनाथ०पद ॥ कोउ प्रियसखा जोहि घन तेहिक्षण मृदुहँसि कही रामसों बानी । यह पावस छबिमय क्षण क्षणमहँ बरसत रस शिंगार मिसि पानी ॥ जड़ हुलसत सुखते प्रफुल्लित करि उत कंठिते तरुण लपटावै । नहिं अचरज गरजनि सुनि डर मिसि चेतन तिय पियगल लगिजावै ॥ कीन्हों प्रण पावस पुहुमी पति सबकहँ सदनहिं माहँ बसैहों । मानि निदेशन बसहिं बिदेशहिंताकोदुसह कलेश सहैहों ॥ सोई प्रगट लखिपरत चमकचपलनिजते तेजाहिसोंदियेजारी । धुरवानहियेह धूमतिनहिंकेकीन्हे दशहुं दिशहिं अंधियारी ॥ परमसुखदजोपिय बियोग सोइ अति दारुण दुखदाईहोई । जोघहरानि सुनिनचत मोरहिय बिरहनि घनसम धमकत सोई ॥ युगुनगणन जगमगत चहूंदिशि बिश्वनाथ इमि परहिं निहारे । हेरत पाति ताजितन बिरहनि जिय जहँ तहँ बिरह अगिनि अब जारे १ कोउकह यहऋतु अति अनुकूलें लहि तिय हिय सुखभरती । घन अंधियारी सारी सजि तिमि बिजुरी मिली बिचरती ॥ भूषणध्वनि झिल्लिन झनकारन मिली मग जानि नजाई । अरु संकेतएकंत लहहिं अति कढैको निशिभई भयदाई ॥ उपजैं बहुसंजीवनि औषधिमृतकनक हँकरि ज्यावै । जिनपरसे युवतिन पगजावक इंद्रबधूह्वैधावै ॥ सखनंबचन यहिभांति बिबिध सुनि हँसि हँसाय कहि बातैं ॥ बिश्वनाथ बनबिहरन गवनेतुँरगन चढ़ि हरषातैं २ पावस हरित पुहुमिमहँ बिचरत लसत सखन संगराम । सुरँग पोशाक सुरंग मणि भूषण सुरँग तुरँग अभिराम ॥ तहँ कोउ सखा कह्यो छबि जोई जल कन दूबन नौंक । घनछबिछाय बरस भुवदुलिचे जनु जलजनि चौंक ॥ बरषातेंजलजलमय संयुत शृंगन गिरिऊपर घन सघनै । दूजो तनधरि धराणि धरन जनुकढ़िधारयो शिर गंगनै ॥ कोऊकह सुरधनुधरणी ते उठि नभलगि ललित बिराजै ।

बहुरंग पुहुपन पूजित हरिपंग जगनापत जनुछाजै ॥ हरषित कोऊ कह जलबरषत भुवसरसतसबठौरैं । नहिं अकाश अवकाश सुषशतव छलकि बिश्वकहँबौरैं ॥ बिचरि बनहिं सरयू बिलोकि छबि फिरिआये निजऐन । बिश्वनाथ पुनि झूलनगव ने सीयसंग भरिचैन ॥

ज्ञानाअलि०पद ख्याल ॥ रसिक दुलारे प्यारे झुलन पधारे । श्रीदशरथसुत जनकनंदनी सियगोरी पियघनतनकारे ॥ रतनरचित मणिजटितहिंडोरा बिमलादिक सखि रुचिर सुधारे । सरयू तीर कुंजद्रुम फूले गुंजत भवँर सरभिमतवारे ॥ कोकिल मोर पपीहा बोलत घनगरजत सुखवृष्टि प्रचारे । बजतमृदंग ताल सारंगी सखि गावहिं बर चरित सँभारे ॥ शीतलमन्द सुगन्ध पवनबह सखि तन मतन बढ़ावन हारे । ज्ञानाअलि के धन जीवन दोउ निज सहचरि लखि निकट हँकारे ॥ पदलावनी ॥ सरसऋतु झूलन छबिछाई । निरखि पियप्यारी मनभाई ॥ नवल तरु सुमन सरसफूले । सोहावनि सरयू सरि कूले ॥ भवँर रस मत्त फिरैं भूले । पवनबह शीतल सुखमूले ॥ दोहा ॥ मधुर मधुर ध्वनि कोकिला बोलत दादुर मोर । पियपिय रटत पपीहरा प्यारी घनगरजत चहुँ ओर । दामिनिदमकत दुरिजाई । रसिक दोउ झूलन सुखदानी । सखिनरुचिजानी मनमानी ॥ संग सिय सोहैं पटरानी । पियाकी जीवन जगजानी ॥ दोहा ॥ झूलनलगे हिंडोलना अँग अँग उमग न माय । ज्ञानाअलि छबि लखिछकी निशिदिन कछुन सोहाय ॥ झुलावैं झूलनपदगाई ॥

बिश्वनाथसिंह०पद ॥ हिंडोरे झूलत अति अनुराग । सियजू की भीजत सुरँग चूनरी सुभगराम शिर पाग ॥ गावतराग मलार सखीसब छबि छहरति बरबाग । बिश्वनाथ मुख निरखत हरषत सरसत सरस सोहाग १ सावन सरससोहावन झूलत युगुलकिशोर । उड़त पीतपट सारी छबि छहरति चहुँओर ॥ सुखलनि अलियें झुलावहिं गावहिं रागमलार । बाजहिं बाजन

मधुर ध्वनि बीण मृदंग सितार ॥ हरित अवनि सुठि सोहत इन्द्रबधुनके जाल । तरुतरु हरित सपेतिन मनअनंदित लाल ॥ कुजहिं कोकिल पपिहरा सरस पुकारि पुकारि । नाचतचहुँकित मोरवा पूंछ सँवारि सँवारि ॥ धावहिं नभपथ घन घनबरसहिं किये उमाह । उमडहिं सरसी सर सरि बगरन अंबु प्रवाह ॥ दमकि लसहिं घन बीजुरी बिलसहिं नभ बकपांति । सोहहिं इन्द्र शरासन जिनकी बहुरंगकांति ॥ पहिरि कुसुँभरँग सारी अलियें झुलावन जाहिं । झूलहिं और झुलावहिं संग अति मुदमांहिं ॥ जहँहैं सहित बिनोदन सिय लिये पिय सुकुमार । बिश्वनाथ तहां चलिये लहिये सुखको सार ॥

अग्रदास०पद ॥ झूलत सीताराम हिंडोरे । गौर श्याम अभिराम मनोहर रतिपति को चित चोरे ॥ नील पीत बर बसन लसत तन उठतसुगंध झकोरे । सहचरिहरांपे झुलावत गावत छबि निरखत तृणतोरे ॥ मंदमंद मुसुकात छबीलो मुरकत थोरे थोरे । अतिसुकुमार अग्रकीस्वामिनि डरपि गहतपटछोरे॥

मग्रह०दोहा ॥ हे सजनी देखनचलो झूलत सिय रघुलाल । युगलचंद की छबिछटा लखिके होउनिहाल ॥

श्रीतुलसीदासजी०पदरागमलार ॥ आलीरी राघोजूके रुचिर हिंडोलनो झूलन जैये । फटिक भीति सुचारु चहुँदिशि मंजु मणिमय पोरि । गचकांच लखि मन नाच शिखि जनु पांचशर सुफँसोरि ॥ तोरण बितान पताक चामर ध्वज सुमन फल धोरि । प्रतिछाहँ छबि कबि साखिदे, प्रतिसों कहँ गुरहोंरि ॥ मदन जयके खंभसे रचे खंभ सरलबिशाल । पाटीर,पाटिबिचित्र भौंरा बलित बेलना लाल ॥ डांडी कनक कुमकुमातिलक रेखैसि· मनसिज भाल । पटुलीपादिकराति हृदयजनु कलधौतकी मनमाल॥

उनये सघन घनघोर मृदुझरि सुखद सावनलाग। बकपांति सुरधनु दमक दामिनि हरित भूमि बिभाग॥ दादुर मुदित भरे सरितसर महि उमग जनु अनुराग। पिक मोर मधुप चकोर चातक शोर उपबन बाग॥ सो समौ देखि सुहावनो नवसत सँवारि सँवारि। गुन रूप योवनसींव सुंदरिचलीं झुंडनिझारि॥ हिंडोलसाल बिलोकि सबअंचल पसारिपसारि। लागीं अशीशनराम सीतहिं सुखसमाजु निहारि॥ झूलहिं झुलावहिं ओसरिन्ह गावैं सुहब गौड़ मलार। मंजीर नूपुर बलय ध्वनि जनु काम करतलतार। अति मचत श्रमकन मुखनि बिथुरे चिकुर बिलुलितहार॥ तम तड़ित उडुगण अरुण बिधु जनु करत ब्योम बिहार॥ हिय हरषि बरषि प्रसून निरखति बिबुध तियतृणतूरि। आनंदजल लोचन मुदित मन पुलक तन भरिपूरि॥ सब कहहिं अबिचलराजनीति कल्याण मंगल भूरि। चिरजिवो जानकि नाथ जग तुलसी सजविनमूरि॥ पदराग सूहा॥ कोशलपुरी सुहावनी सरिसरयू के तीर। भूपावलीमुकुट मणि नृपति जहां रघुबीर॥ पुर नर नारि चतुर अति धरम निपुणरत नीति। सहज सुभाय सकल उर श्रीरघुबरपदप्रीति॥ छंद॥ श्रीरामपदजलजात सबके प्रीति अबिचल पावनी। जोचहत शुक सनकादि शंभु बिरंचि मुनि मन भावनी॥ सबही के सुंदर मंदिराजिर राउरंक न लखिपरे। नाकेश दुर्लभ भोग लोग करहि न मन बिषयनि हरे॥ सब ऋतु सुख प्रद सोपुरी पावस अति

कमनीय । निरखत मनहिं हरति हठि हरित अवनि रमनीय ॥ वीरबहूटिं बिराजहीं दादुर ध्वनि चहुं ओर। मधुर गरजि घनबरषहीं सुनि सुनि बोलत मोर ॥ छंद॥ बोलत चातक मोर कोकिल कीर पारावत घने । खग बिपुल पाले बालकनि कूजत उडात सुहावने ॥ बकराजि राजित गगन हरिधनु तड़ित दिशि दिशि सोहहीं । नभ नगरकी शोभा अतुल अवलोकि मुनि मन मोहहीं ॥ गृह गृह रचे हिंडोलना महिगच कांच सुढार । चित्र बिचित्र चहूंदिशि परदा फटिकपगार ॥ सरल बिशाल बिराजहि बिद्रुम खंभ सुजोर । चारु पाणि पटुपुरटकी झरकत मरकत भोर ॥ छंद ॥ मरकत भँवर डांडी कनक मणिजटित द्युति जगमगरही । पटुली मनहुंबिधिनिपुणता निज प्रगटकरि राखी सही ॥ बहुरंग लसत बितान मुकुतादाम सहित मनोहरा । नवसुमनमाल सुगंधलोभे मंजु गुंजत मधुकरा ॥ झुंड झुंड झूलन चलीं गजगामिनि बरनारि । कुसुंभ चीर तन सोहहीं भूषण बिबिध संवारि॥ पिकबयनी मृगलोचनी शारद शशिसमतुण्ड। राम सुयश सब गावहीं सुस्वरसुशारंग गुण्ड॥ छंद ॥ शारंग गौड़ मलार सोरठ सुहो सुघरनिवाजहीं। बहुभांति तान तरंग सुनि गंधर्ब किन्नर लाजहीं॥ अति मचत छूटत कुटिल कच छबिअधिक सुंदरिपावहीं । पर उड़त भूषण खसत हँसिहँसि अपर सखी झुलावहीं॥फिरिफिरि झूलहिं भामिनीअपनीअपनीबार । बिवुधबिमान थकित भये देखतचरित अपार॥बरखिसुमन हरषहिं सुरवरणहिं

हरिगुणगाथ। पुनि पुनि प्रभुहिं प्रशंसहीं जय जय जानकिनाथ ॥ छंद ॥ जय जानकीपति बिशद कीरति सकललोक मलापहा। सुर बधू देहिं अशीश जीवहु राम सुख संपति महा ॥ पावससमय कछु अवधबरणत सुनि अघोघ नशावहीं। रघुबीरके गुणगण नवलनित दास तुलसी गावहीं ॥

पंडित हरिहरप्रसाद० दोहा ॥ झूलत रंग हिंडोलना दंपति भरे उमंग। मेरु शृंगराजत मनहुँ घनदामिनि यकसंग ॥

अग्रदास० पद मल्लार ॥ लागत तीज सुहाई अवधपुर॥ रंग रंगीली अति सुकुमारि सब मिलि झूलन आई। कंचन खंभजटित मणि हीरा डांडिन चुनी जड़ाई ॥ भवँर प्रबाल बनीबर शोभा पचरंग डोरि सुहाई॥ होड़ा होड़ी मच्यो हिंडोरा महिमा बरणि न जाई। अग्रअली प्रभु दंपति झूलैं जनकलली रघुराई १ झूलत सिया राजीव नैन। रतन जटित हिंडोलना सखी राम सुखके ऐन ॥ श्यामअँगपर गौरझलकै दामिनी घनगैन। मैथिली रघुबीर शोभानिरखि लाजतमैन ॥ नामपियकोलेहु नागरि होयसखियन चैन। जानकी नहिं लेति मुखसों देति लोचन सैन ॥ परस्पर झूलत झुलावत बदत मधुरे बैन। अवध पुरनिज केलि दंपति अग्र आनँद दैन ॥

प्रियाशरण० पद ॥ रंगझूलन झूलेप्यारी जनक किशोरी। राज सुवन रघुनन्दनके सँग लसत मनोहर जोरी ॥ सावन तीज सुहावन लागत बोले मोर अरु मोरी। हरिहरिभूमि लताझुकि आई सरयूलेत हिलोरी ॥ नन्हिनन्हिबुंद पवन अतिसुंदर परसि श्याम अरु गोरी। प्रियाशरण छबि अद्भुतबाढ़ी जाइ न बरणी सुख तोरी ॥

रामसखेपदरागमलार ॥ जानकी तीज हिंडोरे सोमवट झूलति पियरँगभीनी। ओढ़ेअरुण झीनि तनसारी इन्द्रबधूछबिछीनी॥

आपन गाय गवावति पियको हँसिहँसितान नवीनी। रामसखे लखि यहप्यारी सुख भइ रति अति मनहीनी॥

ज्ञानाअलि०लावनी॥ प्रियतम प्यारी दोउ तीज हिंडोरे झूलैं। सरयूतट कुंज निकुंज सखिन सुखमूलैं॥ रसमत्त परस्पर रूप छके समतूलैं। करि हाव भाव दृग फेरि हरषिहियफूलैं॥ दोउ रसिक छैल छबि खानि हरत हिय शूलैं। ज्ञानाअलि झोका देत परस्पर हूलैं १ रसिक दोउ रहसिरहसि झूलैं। सरसऋतु पावस सुखमूलैं॥नवलतरु लता ललित दरसै। उमड़ि घनघटा अटापरसै॥ बड़ेबडे बुंदन नित बरसै। झुलावैं झूलैं सुखसरसै॥ दोहा॥ अलि चपलावलि अचलह्वै पिय प्रीतम घनपाय। नित नवसुख बरसनलगी झूलन गाय बजाय॥ सुनतपियप्यारी चितफूलैं॥ नवल सिय रसिकलाल झांकी। बिलोकनि अलबेली बांकी॥नेकु जेहिओर बिहँसिताकी। सोइ बड़भागिनि मतिपाकी॥ दोहा॥ श्री सरयूतट निकटही सोम श्रवण बटछांह। नाहनेह ज्ञानाअली बढ़त धरे गलबांह॥ यही सुख प्रीतम अनुकूलैं॥

रघुराज०पद॥ सरयूबन दोऊ झूलैं। श्रीरघुनन्दन जनकनन्दिनी अंगन अरुण दुकूलैं॥ गजमणिमयछड़ पटुलिअरुणमणि माणिक बेल न बिकसित बहुकणि। बिशदबिशाल प्रबालखम्भमणि॥ मुकतनि झालरिझूलैं। जममग जरकस बिपुलबितान। जड़े हरिहीरक डंडमहान॥ उतंग निशान दिपन्त दिशान नहिं सुरशा रंगतूलैं। लालबिभूषण लाल पोशाक। नहिंसमता जिन की कहुँनाक॥ मनोजके लाजनकी कहुँधाक। झुलावहिं सखि अनुकूलैं॥ छाइरहे क्षिति बासव बाल। लसै नवपल्लव तालतमाल॥ नदैंमदमत्तमयूर रसाल। हरैं हियकी सबशूलैं। परैं घनबिन्दु मनोकालिकुन्द। दमंकत दामिनि देत अनंद॥ बहैतहँ मारुत शीतलमन्द। झरैं लतिका बहु फूलैं॥ भरे अनुराग दोऊ बड़भाग। कहै रघुराज सुनै पिय राग॥ बजावत बाजन पाय सुहाग। सुहावन आनँदमूलैं १ सियके पियकी छबिदेखैं। झूलि

रहे सरयूसरि तीर मचाइअनंद अलेखें ॥ उड़ैं अलकैं पौन प्रसंग मुखै छहरैं पटपीतहिसंग मनो शशिपै चलिजात भुजंग नेवारत दामिनि देखैं । कोमल बुन्द भरैं घनवृन्द पितांबर अंचलकर अरबिन्द परस्पर वारत सिय रघुनंद । हँसैं दोउ आनँदवेखैं । आवतजात हिंडोल सोहात प्रभासित श्याम क्षमा छहरात सुहावन गायलखै सखिव्रात तजैं रघुराज निमेखैं २ ॥

बिश्वनाथसिंह०पद ॥ भूलनआये दोऊहो । गलबाहींकीन्हें सिय रघुनंदन सखियां चहुंकितहो ॥ यक तो अवधनगर मन भावन पुनि सुखछावन भावनहो । फेरि सुहावन सावन बोलैं मोरवा जित तितहो ॥ परमबिशाल लालमणि बँगला बन्यो बाग के बीचहिहो । बोलहिं लाल तमालनिमाते संगसपेतिनहो ॥ रेशम सोन सूतयुत भुलना पलंगबन्यो तेहि सोवतहो । तामें बिश्व नाथ दोऊ भूलत हरषत क्षण क्षणहो ॥

पंडितहरिहरप्रसाद०दोहा ॥ लाललाललालैलली सखा सखीं सब लाल । भूलतलाल हिंडोलने चहुँदिशि गावत बाल ॥

देवस्वामी०पद ॥ भले दोउ लालैलाल लसे । मानहु दोउनके अंतरके प्रगट राग बिकसे ॥ लालबागमें लालडोरसे लालहिं-डोलकसे । लालसखी कर फूललियेहैं बहुत सुगंधबसे ॥ लाल बसन भूषण औ आसन लालचवर हुलसे । लाल लली तेहि मध्य बिराजत पानखाय बिहँसे ॥ लालछत्र मंडल शिर सोहत दोऊ काम रसरसे । रंगलालकी या लालीलखिदेवनकेमनफँसे ॥

बिश्वनाथ०पद ॥ भूलतदोउ सुखसने हिंडोररि । भीजतललन की ललित पगड़िया सुरंग सियाकी चूँदरि ॥ लागतभूंक डरपि नहिं नहिं कहि प्रिया पिया गरलागे । सो सुख दशहि सकहिं नहिं कछु कहि बिश्वनाथ अनुरागै ॥

पंडितहरिहरप्रसाद०दोहा ॥ हरेहरे भूषणधरे हरे हरे सबचीर । हरे हरे भूलतहरे भूलनं सिय रघुबीर ॥

देवस्वामी०पद ॥ आज दोउ भूलत रंगभरे । सजि सब साज

हरे ॥ हरितकुंज घनलता हरितहैं तरिवर हरितफरे । हरितभूमि नभ हरी हरीमय पक्षी हरितचरे । हरित हिंडोरा हरित डारमें हरितडोरजकरे । हरित बसन भूषण औ आसन चामर हरित ढरे ॥ हरित सखी दोउओर झुलावत मेघराग उचरे ॥ दोउ किं- शोर तेहिमध्य लसतहैं हरित छत्र शिरधरे ॥ पीतश्याम आपुस में मिलिके हरितरंगउधरे । कोइल कीर मोरगणके मिस देखहिं देव खरे ॥

ज्ञाना अलि०रागतिल्लाना ॥ सियरसिक बिहारीझूलैं । सावनकुंज सरित सरयूतट बन प्रमोद मुदमूलैं ॥ नख शिख सुमन शृंगार सजोरी अवधचन्द्र चन्द्राननिगोरी निवछावरि रति मदन क- रोरी तेहिसम एक न तूलैं ॥ सियझूलैंपिय झमकिझुलावैं निरखि निरखिछबि बलिबलि जावैं मनभावै कटिलचकनिमचकनि हरषि हियशूलैं । नागरि बयस शिरोमणि सारीसियप्यारी सबराजकु- मारी लिये सौंजठाढ़ीचहुंओरनि सेवासुख अनुकूलैं ॥ मृगनयनी कल कोकिल बयनी गजगमनी सब रति मददमनी ज्ञानाअलि सब निमिकुल छवनी क्षण क्षण छबिलखि फूलैं ॥

युगलानन्यशरण०ग़ज़ल ॥ झूलैं लली लालनअली मुद मौजहिं- डोले । क्षण क्षणमें छटा छबिनई करैकेलि कलोले ॥ गुणगाव- तीं सखियां सबी हियहौंसला खोले । रसरागिनी बड़भागिनी रति रूपमय डोले ॥ क्यारंग अदांअंगहै बाणी यही बोले । जिय झूमने यहिरातभी निजनेह निचोले १ झूलन बहारदारमें गुण गाइये प्यारी । हासिलनहींमालकिये टुक समझियेवारी ॥ भीजे सनेह नीरसे झूले लली लालन ॥ झोंका झलक अजूब चमक चांदनी चालन ॥ मुसक्यात मज़ेदार मोहब्बतके फंदमें । फँसि, के कहीं निकसेनहीं अनुराग बंदमें ॥ श्रीजानकी जिवनकी सु छबि हेरिये हीमें । लतिका सनेह हेमहरित हूजिये जीमें ॥

रघुराज०पद ॥ आयेहो कनक मंदिरमें जनकदुलारीराजदुलारे । झूलन हेत किये गलबाहीं अंगसजी अलिसंग सोहाहीं बानिक

वेष बनाये । रतनहिंडोरे जरकसडोरैं जोरे नैननिटांये । श्रीरघुराज लहैं सखियां सुख दंपति झमकि झुलाये ॥

प्रियाशरण॰पदरेख़ता ॥ रतन मणिधाममें प्यारी । सकल गुण रूप उजियारी ॥ पियासँग झूलती सुखमें । रति शतकोटि बलिहारी ॥ हिंडोरा मणिमयी सोहैं । झकाझकदेखि मनमोहैं ॥ बढ़ी सुखसिंधुकी लहरें । युगलमुख सहचरी जोहैं ॥ रहे सुख छाय गावनके । युगल रसरीति भावनके ॥ नचैंबर सुंदरी नारी । रती किन्नरी लजावनके ॥ अली सुखसिंधुकोदेखैं । सुफल निज जन्मको लेखैं ॥ झूलैं पिय लाड़िली संगमें । मुदित प्रियाशरण छबि पेखैं ॥

युगलानन्यशरण॰पद ॥ झूलैं प्यारी झुलावै प्यारो ॥ मधुरं मधुर करकंज मंजुगहि रेशमरजु सुकुमारो । नैनन निरखि नवेली बिधुमुख मंद हँसनि नृपवारो ॥ उरझिरहे अँग अंग रंगरस सुरझनि अगम निहारो । युगल अनन्य अली दोउ नेहिन ऊपर सर्बस वारो ॥

बैजनाथ॰लावनी ॥ आजु रघुनंदन सियप्यारी । झमकि झुकि झूलत छबि न्यारी ॥ चहूँदिशि बिपुल अली राजें । नचैं कोउ सुभगताल साजें ॥ दोहा ॥ कंचनजटित हिंडोलना बिद्रुमखम्भ बिशाल । गजमणीदाम काम मनमोहित भँवर रसाल ॥ कंज मणि सोहैं अरुणारी । शीशपर मुकुट सुभग सोहै ॥ श्रवणमें कुंडल मनमोहै ॥ दोहा ॥ छूटी अलक कपोलपै झलकत झोका देत । पानखान मुसक्यान माधुरी चितवत चित हरिलेत ॥ मालगर मोतिनकी धारी । चरणदोउ जावक युतराजै ॥ अंग अंग भूषण सुखसाजै ॥ दोहा ॥ मोतिनकी कवरी गुही बेंदी शोभित भाल । बैजनाथ रघुनंद रूपकी मोहनयंत्र बिशाल ॥ बाम दिशि राजत सुकुमारी ॥

बिश्वनाथसिंह॰पद ॥ गावैंहोहो सखि ललितहिंडोर आजुसंग प्रीतमप्यारी । उड़ति सियातन द्युति सनिसारी ॥ जनु दामिनि

दमकति नभन्यारी । नाचत दोउ मुसक्यात परस्पर चतुरसखी कोउ भाव बिचारी ॥ चकितैंरहीं निहारि निहारी बिश्वनाथ तन मन धन वारी १ हिंडोरनाहो सिय हरि झूलतछबि सरसाय । उगे दोउदिशि सुरधनुहो दोउ बरखंभ बनाय । पवन पाटुरी मेघसंग झुली जनु बिजुरी दुरिजाय ॥ झूलि अटारी ऊंचिहो जहँ कोउ सखिहु न जाय । तहँ सोये दोउ सुखसनिहो सखियनकहँ दुख छाय ॥ बरसत रिमि झिमि मेघहो बिश्वनाथ घहराय । हमरे पियाकी खबरियाहो महँगे मोल बिकाय २ ॥

इति पावसऋतु बिहार संग्रह समाप्तः ॥

श्रीजानकीबल्लभायनमः ॥

अथ शरदऋतु बिहार ॥

संग्रहवर्णन ॥

बिश्वनाथ०पद ॥ एकसमय सखन सहित चढ़ि चढ़ि तुरंगन बिहरनको भरि उमंग बिशद बिपिन गौने । भाष्यो कोउ हरषि सखा महामलिन बरषाके सखर नागभखा पखा परिहरिभे मौने॥ पावस संगरहे समल अवनी आकाशहुजल यहिअवसर कीन्ह्यो अल शरद अमल कैसे । नशी बिषय बासना उपासना प्रकाश हिय बिश्वनाथ भक्त चित्त करति भक्ति जैसे ॥

रघुराज०कवित्त ॥ सोह्यो शुद्ध सलिल सुसरिता सरनहूं में सूखिगे सुपंथ त्यों सफाई शरदकी । शिखी शिखिनीके सुख सकल सुखाने सुखी सिंधुर समाने जल शोष भैंसमदकी ॥ सुंदर सरोज सरयूमें सरसानलागे सरसी सरस शशि सुंदराई सदकी ।

सुंदर सदन बैठी सखिनकी स्वामिनी सरेखु रघुराज सुखसुखमा शरदकी ॥

बिश्वनाथ०पद ॥ बोले रघुनंदन उये अति प्रचंड मारतंड तेज चंड पूरण नवखंडहिं करिदीनो । घनघन अंधियार सहजतेजहिं ननहिं हारसों संधारन करतार सानराखि तीखकीनो ॥ मिटे सघन मेघनके अतिप्रसन्न भयो गगन ज्ञानपाय बिन अज्ञान सज्जन उर जैसे । हंसन ध्वनि सरन बिमल बिलसे अति अमल कमल बिश्वनाथ कथा सुनत संतन दिल ऐसे १ कोउकह सुनि मोदरंग बरणत कविनारि अंग छबि उमंगको प्रसंग अधिकै निरसानी । जोपै उपमानहीन भेतौ उपमेयहीन परिहै असशरद नारि मनमें अनुमानी ॥ व्यापकहै जग अभंग शोभा निजअंग अंग दैकै उपमाननको परम पीन कीनी ॥ मुख शोभा बिधु बिशाल केशपास ते सिंवाल नैन कंज खंज अधर सुछबि जबदीनी । भूषण मुकन मयूषदीनी है नखत गणन किंकिणि नूपुरन सुरन हंसने सिखाई । बिश्वनाथ भुज मृणाल नासा तिल कुचन भार नमित काय फलित लतन सुछबि सोइ छाई २ चहुंकित अबरस बरसत भाई । जिततित तकत सरस सुख सरसत जगत शरद ऋतुकी छबि छाई ॥ बिगसित सतपरन मकरंदन लिये सुगंधन मारुत आवै । पाय शरदको संग अनंगहि भयो मत्त मातंग जनावै॥ बिबिध रंगके मुद उमंग भरि शुकन अवली मुख धानकी बाली । उड़त गगन जनु शरद छीनि लिये पावस सुरधनु सु छबि बिशाली ॥ मन रंजन खंजन बन बिंचरहिं कुसुमित कासहुहरष जनायो । बिश्वनाथ तैंकि घटज अतिथ गुणि पावस जल जनु शरद चढ़ायो ३ यहि बिधि बरणत बिहरत कानन चारौं बंधु परम छबि छाये । अनुपम निरखि सरयूकी शोभा सांझ समय पुनि सदनहिं आये ॥ बैठे सहित जानकी रघुबर सखियन मंडल चहुंकित भायो । बिश्वनाथ तेहि अवसर पूरण उदित इन्द्रदिशि सोम सोहायो ४ ॥

रघुराजसिंह०पद ॥ आई शारद पूरणमासी । छायरही शारद पारदसी चंदकिरणि छबिरासी ॥ बिकसी सकल चमेली नवेली हेली हृदय हुलासी । कलित कुमुद मदप्रद सर सोहत पंकज अवली खासी ॥ सारस चक्रवाक कल हंस मनोहर शोर बिकासी । कुंजथली महँ कुसुमावली भली कछि सुरबर सरितासी ॥ शीतल मंद सुगंध समीर बहत सिगरो श्रमनासी । भलो रासको आयो औसर छबि छकि पविन आसी ॥ रास बिलास बिरचि पिय संगम आशा भरशर ऐंचहुं गांसी । जनकलली उठिगहहु गली यह बिनय करत तुवदासी । श्री रघुराज तोहिं परखे उत सरयू बिपिन नेवासी ॥

ज्ञानाअलि०पदरेखता ॥ आजु रसरास तैयारी । सखिनसँग सीय सुकुमारी ॥ मंगल भरि कनककर थारी । कलश कल सुरभि बर वारी ॥ साजि नवसप्त मनहारी । नवल तन लालकी प्यारी ॥ सबै निमिबंश उजियारी । सलोनी सुमुखि छबिभारी ॥ यंत्र तंत्रादि करतारी । सप्तस्वर सहित लय धारी ॥ मुर्छना मुरनि हँसि नारी । निरखि सखि सबै मतवारी ॥ ज्ञानाअली अलि सौज सजिसारी । पिया हित मिलन चलि भारी ॥ लावनी ॥ शरदऋतु दम्पति छबि छाई । नेकु रति मदन भीक पाई ॥ अलीगण गावैं मनभावैं ! बजावैं बाजन सुख छावैं ॥ नईनइ तानन सरसावैं । सप्तस्वर क्षण क्षण दरशावैं ॥ दोहा ॥ नटनि कला कुशला सबै पिय प्यारी रुखपाय । नाचनलगीं उमंगसों गति स्वर ताल मिलाय ॥ मूर्छना छुम छननन भाई ॥ बिबिध रसकेलि कला छाकी । छबीली अलबेली बांकी ॥ निरखि सिय रसिक लाल झांकी । सखिन की गति मति सबथाकी ॥ दोहा ॥ चटक चांदनी शरदकी प्रिय प्यारी मुखचंद । चय चकोर ज्ञानाअली छबि रस पियत अनंद ॥

युगलानन्यशरण०ग़ज़ल ॥ सरयूपुनीत में रसरास रची है । हर चारतरफ चांदनी महताब खचीहै ॥ रँग रंग की पोशाक पहिरि

प्यारियां आई । मंडल मनोज शानमथन बीच नचीहै ॥ तर तान तरहदार तबीयतमें खुश लगी । सुनसुन छकी अपसरस बीच बाम सचीहै ॥ करकंज कलित जोरियुगल जानकीजीवन । क्याखूब लगे नृत्यकरन मजा मची है ॥ लखी लाल लली नेह भई चित्रसी सखियां । अलि हेमलता गानसुन गुणगायबचीहै ॥

ज्ञानाअलि० लावनी ॥ देखो सखि रहस कलोल नटत पियप्यारी। यह चटकचांदनी शरदचन्द उजियारी ॥ सुन्दर अशोक बनकुंज सदा सुखकारी । फूले द्रुम लता बितान मधुप गुंजारी ॥ बीणा धरि बीण बजाय गायलय धारी । सहजा सितार कर धारिलेत गति न्यारी ॥ चन्द्राननि मृदँग टँकोर चन्द्रकल तारी । सुभगा जु सप्तस्वर घोरि रहस मतवारी ॥ यह रासबिलास अपारसिंधु अति भारी । ज्ञानाअलि क्योंकर कहै पंगु मतिहारी ॥ पदरागसो-रठ ॥ नृत्यत नटवर नटनागरि आगरि थिरकि थिरकि प्यारी । श्री रघुनन्दन निमिकुल नंदनि छाई छटा शरदनिशि चांदनि चन्द्राननि सारी । चंचल चरण लोल चित हेरनि भुज अंसनि करकंजनि फेरनि नवयौबन नारी । सुभगा सुखद सप्तस्वर गावैं कोउ सितार बहुयंत्र बजावैं ज्ञानाअलि बलिहारी ॥

बिश्वनाथसिंह० पद ॥ चारु सखिन मुख चंदनि चहुंकित चाहत रहे चवाइ चकोर ॥ कोकिल कलरव करहिं सिखहिं जनु कल किंकिणी नूपुरुन शोर । हरषित जाय सरयू तटराजैं रतन सिंहासन युगल किशोर । बिश्वनाथ सखियां तेहि अवसर चहुंकि झमकिरहीं तेहि ठोर ॥

रामसखे० पद राग हमीर तितालो ॥ बैठे दोऊ शरद समय सरयू तट रघुनंदन सियप्यारी । बन प्रमोद नव सुमन कुंज सित मंडल मणि छबिकारी ॥ हीरनमय शिर क्रीट चंद्रिका मोतिन जरित काछनिसारी । बजत यंत्र सित नगन मद्धे मृदु नृत्यत ताम सँभारी ॥ ओढल मिलि सित रची चांदनी श्वेतइ भोग

धरे रुचिकारी । राम सखे सित बनी कान्ति सब अमृत शशि द्युतिकारी ॥

देवस्वामीकृत पद राग सोरठ ॥ शरद म सियबर को शिंगार । निशिमें सब उपचार ॥ जैसी पूरण शरद चांदनी निरमल औ उजियार । तैसे छत्रचमरपट भूषण रचिये श्वेतैहार ॥ कस्तूरी केशर अंजन बिनु श्वेतै श्वेत प्रकार । शुद्ध सत्वगुण श्वेत शरद ऋतु यामें यतनो सार । चीनी दूध दही नरियर जल इनमें वही बिचार । मुक्ताहार कपूर आरती सोरठको उच्चार ॥ सिया राम तहँ पांसा खेलत याको ललित बिहार । सिया बिजयसो जगमंगलहैं राम बिजयउद्धार ॥

मधुरअलीपद ॥ रास क्रीड़ासनै शरदकी यामिनी सुखदाई । पूरण राका चन्द्र उदित भयो कुंज महल छबिछाई ॥ फूल बितान व्यजन बर भूषण राजत गुलम गेंदवाई । सीताराम तहां बनिबैठे मधुरअली आरती लै आई ॥

बिश्वनाथसिंहपद ॥ जलबिहार करन सरयूमें प्रविशे सुखमाहीं दृगन छबि दरसिदरसि चरण मीन परसिपरसि सुखमें रही न तन नेकहु सुधि नाहीं ॥ छुवत झखन झझकि उझकि तियपियगर गहहिं ससकि उरसों उरमसकि सुछकि सुखछावैं । तहँ भल करि जलबिहार पहिरे पट परम प्यार आये पुनि निजअगार बिश्वनाथ भावैं १ यहि बिधि सुबिहार करत अवधि अवध मोद भरत तहां यकपाख टरत आयगै देवारी । दीप ठटनि अटनि अटनि दिपति परे मणिन ठटनि भई छहरिछहरि छटनि अद्भुत उजियारी ॥ चहुँकित लखि परहिं ज्योति ऐसी तहँ सुछबि होति जोवत पुर परम ज्योति जनबहु बपुधारी । प्रमुदित निज नाथ साथ बारैं तिय दीपहाथ बिश्वनाथ सुछबि गाथ रहैं जन निहारी २ हरषित चहुँकित निकसहिं नारी । सारी श्याम सुभग तन सोहहिं मणिन भूषणनि धारी ॥ दीपहिं दीपति तिन

की चहुँकित लखी छबि मन बिश्वनाथ बिचारी। चकित चखन जनु चहति दिवारी यहिपुर बिपुल दिवारी ३॥

संग्रह०दोहा॥ लसैउच्चआवास पै दीपावलीप्रकास। सुन्दरता अद्भुत लखी कहनर भरे हुलास॥

श्रीतुलसीदासजी०पदरागआसावरी॥ सांझसमय रघुबीरपुरीकी शोभा आजुबनी। ललितदीपमालिका बिलोकहिं हित करि अवधधनी॥ फटिक भीति शिखरनिपर राजति कंचनदीप अनी। जनु अहिनाथ मिलनआये मणि शोभित सहसफनी॥ प्रतिमंदिर कलशनिपर आजहिं मणिगण द्युति अपनी। मानहुं बिपुलप्रगटि पुरलोहित पठइ दिये अवनी॥ घर घर मंगलचार एकरस हरषित रंकगनी। तुलसीदास कल कीरति गावत जो कलिमल शमनी॥

संग्रह०दोहा॥ राजभवन अरु नगरमें सरयूतट जलमाहिं। बिबिधभांति दीपावली जगमगात चहुँघाहिं॥

बिश्वनाथसिंह०पद॥ बैठे सिय पिय ऊंचि अटारी। सियसंग हिय हरषत बरषत सुख निरखत पुरछबिभारी॥ दम्पति सकल सुछबिकी संपति नूतद्यूत सुखदाई। खेलनलगे अनूपम सुख सों भुजभरि भेंटलगाई॥ जीते हरि उर आनंद भरिकै भलीं चलीं मुसक्यातै। अतिहि लजाति दीपतन ताकति सिया चोरावति गातैं॥ दीपनि ढांकि जो पिय सुखपायो सो कवि कैसे गावै। बिश्वनाथ सुमिरत छबि अनुपम क्षण क्षण छकि छकि जावै १ सखियांआय प्रचारि सियाको बाजी फेरि लगाई। करि बहुछन्द फन्द रघुबरहीं दीनेउ हरषि हराई॥ तियभूषण पोशाक नवीने पियको दिय पहिराई। बिश्वनाथ गये शयन भवन को अति अनुपम छबि छाई २॥

ज्ञानाअलि०पदरागभैरवी ॥ यामिनी यामरही बड़भागीं । श्रीजानकि सखि जागीं ॥ गायउठीं भैरव सुराग सब पिय प्यारी गुण पागीं । मुखमंजन अस्नान अंग अँग सजि शिंगार सोहागीं ॥ हिलि मिलि सर्बेश्वरी महल चलि जाय जाय पग लागीं । सेवा समय सजग ललनागण युगल केलि पट तागीं ॥ सखियन सहित चारु शीला अलि मंद मंद गति बागीं । जाय महल पहुंची ज्ञानाअलि उत्थापन पद रागीं १ जागौ नृप नन्द चन्द छबि अमृत रसबोर ॥ अलिगण भीर अधीर दरश बिनु अरुण उदै भयो भोर । शशिकर हीन क्षीन तारागण गगन बिमल चहुं ओर ॥ सुनि उठिबैठि पियाप्यारी दोउ चितै कृपा दृगकोर । निरखि युगल छबि छकी छबीली लगन जगी जिय जोर ॥ जुरिआईं सुखसेज निकट अलि द्युतिदामिनि नहिं थोर । ज्ञानाअलि घन तड़ित घेरिज्यों नचत मुदित मनमोर २॥

रामसखेजी० पद ॥ राघव भोरहिं जागे नींद भरी अँखियन मन भावन । बैठे उठि फूलन शय्यापर कोटिन काम लजावन॥ मृदु मुसकात जमुहात सिया तन झुकि झुकि परत सुहावन । रामसखे यामधुर रूपलखि मोजिय अतिही जिवावन ॥

श्रीतुलसीदासजी०पद ॥ भोर जानकीजीवनजागे । सूत मागध प्रवीण बेणु बीणाध्वनि द्वार गायक सरस रागरागे ॥ श्यामल सलोनेगात आलस बश जमुहात प्रिया प्रेम रसपागे । उनींदे लोचनचारु मुखसुखमा शिंगार हेरि हेरि हारे मार भूरिभागे ॥ सहज सुहाई छबिउपमा न लहै कबि मुदित बिलोकनलागे । तुलसीदास निशि अनूपरूप रहत प्रेम अनुरागे ॥

बिश्वनाथसिंह० सोरठा ॥ होत भोर सियराम जागे बैठे पलंग पर । दोऊ सुखमाधाम झुकि झुकि राजहिं नींद सों ॥ सियउर रघुबर राखि सियहु राखि रघुबरहि उर । मज्जन मन अभि-

लखि दोऊ चले उठि पलँगते ॥ दोहा ॥ यहि बिधि आये बाहिरे किय प्रिय सखन प्रणाम। तिनहिं लखत मुसक्यात कछु डीठि कनौड़ी राम॥ चौपाई ॥ भोर नहान गई परभातैं। सीय सखिन लगि तोरति गातैं॥ मणि चौकी बिचित्र अति चारू। बैठी सिय लज्जित शिंगारू॥ सुंदरि सखी दतून करावै। उपटन करत अंग छबि छावै॥ पुनि बर अंग फुलेल लगाई। अंग अंगौछहिं अलि अनवाई॥ चुवत अंग अलि बसन निचोवैं। सिय अँग तजत मनहुँ ये रोवैं॥ करि शुभसीय रामको ध्यानै। पुनि दिय बिबिध भांतिके दानै॥

संग्रहक० ॥ सखियन सिय शृंगारकरायो। लखि छबि अलियन मन सुखपायो॥ गई जानकी सासुन गेहू। करिसेवा उर परम सनेहू॥ सिय कौशल्या मंदिर आई। चरण लागि बैठीसुखपाई॥ दोहा ॥ आयसु पाई सासुको सिय आई निज धाम। बैठिझरोखे बाग दिश चामर ढारति बाम॥

बिश्वनाथसिंह ॥ कीन दतून बैठि सिंहासन। लेपे अंगन तेल सुबासन॥ मज्जन करन सरयु कहँ गये। सखन संग सुठि शोभन छये॥ कीन बिनोद बिबिध बिधि जलकै। यकयक दै छींटे करतलकै॥ प्रभुपद परसत अति सुखछाय। उछलत जल महँ मीन सुहाय॥ जलते अधिकै मान सुपासू। जनु यह चहहिं रामसँग बासू॥ पुनि पीतांबर पहिरि सोहाये। नित्य कर्म करि गृहकहँ आये॥ जाय मातुपहँ कीन कलेऊ। अनुज सखिन युत परम सनेऊ॥ करि पोशक आभूषण पहिरे। सखन संग आये पुनि बहिरे॥ सोरठा ॥ भूपतिके दरबार गये छबीलेचारिऊ सब बलि बलि सुखसार दशरथ यकटंक तकिरहे॥ दोहा ॥ पूतन करत प्रणाम नृप अनुपम लहि आनंद। बैठाये शिरसूंघिकै चारौ रघुकुल चंद॥ सोरठा ॥ कछु करि तहँ दरबार आये रघुनन्दन अयन। निज निज सबैअगार गयेसखा परणामकरि॥

संग्रहक०छंदचौबोला ॥ मणि गण जटित सुभग सिंहासन बैठे

सिय रघुराई । चारुशील अलियां सेवामहँ बैठेमन हरषाई ॥ नवयौवन सुखमाके सागर राम जानकी जोरी । निरखत युगल चंद मुख सखियां मानहु चंद्र चकोरी ॥ कंचन थार कटोरन व्यंजन सखियन धरे बनाई । सरयूजल निर्मलभरि झारी राम सिया ढिग आई ॥ बोली जेंवन समय भयोहै चलिये दंपति-प्यारे । सुनिकै बचन प्रेमरस साने भोजन भवन पधारे ॥

रामसखेऽपद ॥ मिलिजेंवत पीतम राम सिया दोउ मंगलमोद बढ़ावैं हो । कौर परस्पर देत चंद मुख मंद मंद मुसक्यावैं हो ॥ भोजन बिबिध परोसत विमला कमला व्यजन डुलावैं हो । शोभासिंधु कहि न परै कछु माधुरि कुंज सुहावैं हो ॥ चंद्रकला सखि झारि लिये कर सरयू जल अँचवावैं हो । रामसखे प्रभु थार प्रसादी रह्यो अवशेष सो पावैं हो १ अँचवनकरत रामसिय प्यारी । श्यामा पान लिये कर ठाढ़ी रामा लिये जलझारी ॥ चंद्रावती खरी दर्पण लिये चंद्रकला सुकुमारी । सुभगा लिये बागो पीतमको सहजा लिये सियासारी ॥ करिअँचवन बैठे सुख आसन सकल जनन सुखकारी । रामसखे बलि दंपति छबिपर सुन्दर बदन निहारी २ ॥

देवस्वामीऽपदरागधनाश्री ॥ मेरुसों सिंहासन यह रामराय राव-रो । कंचनमय झलझलात महाप्रभन आवरो ॥ लाल हरित रत्न जड़ित कतहुँ श्वेत झांवरो । मंगल बुध शुक्रबसे मनहुँ भानु डावरो ॥ श्वेतछत्र चंद्र निरंखि उठत चित्तचावरो । आरति मिस भानु मनहुँ देइ रह्यो भांवरो ॥ तापर श्री महराज लसत रूपसांवरो । जाहि देखि महादेव होइ रह्यो बावरो ॥

प्रेमसखीऽकवित्त ॥ रतन सिंहासन हुताशनके अनुरूप शेष ना बखानिसकै जाके शतमाथहैं । सिद्धिन समेत फल चारि परे चारौ ओर ध्याइ पाइ होत जीव तुरत सनाथहैं ॥ प्रेमसखी बीज मंत्र मणिसेजरेहैं जामें चारो वेद पायो जो कहत गुणगाथहैं ।

नाथनिको नाथ जो अनाथनिको नाथ आपु जानकी समेत जापै राजैं रघुनाथहैं ॥ गोरे श्याम अंग रति कोटिन अनंगसंग जाकी छबि देखि होत लज्जित बिचारेहैं । चंद कैसो भाग भाल भृकुटी कमान ऐसी नासिका सुहाई नैन जोर छोरवारेहैं ॥ ओठ अरुणारे तैसे कुंदसे दशन प्यारे ललित कपोलन पै कच घुँघुँरारे हैं । अंस भुज धारे दोऊ नील पीतपट धारे प्रेमसखी रामसिया जीवनहमारेहैं ॥ छप्पै ॥ मुकुटशीश नगजटित चंद्रिका अधिक सुहाई। कुटिल अलक झुकिरही कपोलनपर छबिछाई ॥ मंद मंद मुसुकात दोऊ चितवत तिरछो हैं । लटकन मन हरि लेत ललित अधरन परसोहैं ॥ प्रति अंग अंग शोभा अधिक प्रेम सखी हिय में रहै । मन मुदित होत गुड़ खाइ ज्यों गूंग स्वाद कैसे कहै ॥ दोहा ॥ दंपति छबि कछु मैं कही रही यथा मतिमोरि । प्रेमसखी अब कहत है सखी सखीन निहोरि ॥ सवैया ॥ छत्र बिराजत चन्द्रमा सों गहि चन्द्रकला कर आपु खरीहै। चौंरलिये कमला बिमला दोउ ढारतहैं ओसरी ओसरी है ॥ पास खड़ी सुभगा सुथरी बतियां कहती कछु पाइ घरीहै। पान खवावत प्रेम सखी सियके पियको अनुराग भरी है ॥ कवित्त ॥ कामकी लतासी चपलासी काम अबलासी बिमलासी चारु जाकी चेरिन कि चेरी हैं। प्रेमसखी कैयो कोटि सुभगा समान सखी रंभासी गनावैं कौन वैसी बहुतेरी हैं ॥ प्रेम सों पगी हैं रसरूप उमगी हैं मानौं पन्नगी नगी हैं पांति पांति चहुं फेरी हैं। सौंजले खड़ी हैं सब अंग सुथरी हैं मानौं चित्रपूतरीहैं परिचारि सियकेरी हैं ॥ बीणाको बजावैं कोउ मीठे स्वर गावैं कोउ भावको बतावैं सब अंगनि नवाइकै । कोऊ तालधारी कोऊ लेत गति न्यारी न्यारी कोऊ सुकुमारी मुसुकात हाउभाइकै ॥ कोऊ मान कीन्हें कोऊ तन मन वारि दीन्हें कोऊ मुख देखें कोऊ रहत लजाइकै । प्रेमसखी राम सिया बदन बिलोकि होत मनमें मुदित जैसे रंकनिधि पाइकै ॥

प्रतिपालक मालक तन मन सारी। जय सिय संग अनंग बिलासी चपल चतुर सु खिलारी ॥ जयति प्रसाद अनादि केलि रस बश अहलाद उचारी । जय गुण राश सिया बल्लभ पर अलिनिवास बलिहारी ॥

संग्रह० दोहा ॥ परम उदार कृपानिधी राम सियाजी आप। ह्वैप्रसन्न बर दीजिये याचत राम प्रताप ॥ सिय बल्लभजू करि कृपा पुरवहु मम अभिलास । यह समाज युत उरसदन संतत करहु निवास ॥ शारद चन्द्र बिलोकि कै ज्यों चकोर सुख पाय । त्यों सियबर तुव माधुरी मोमन रहे लुभाय ॥ हनुमत रूपलता गुरू सेवत सब सुखदानि । सुफल होय मन कामना अस वेदन की बानि ॥ सीताराम शरण बर शासन के अनुकूल । राम प्रताप प्रसंग यह लिखे सुखद रसमूल ॥ पंडित श्याम सुनाथ जू सुजन निरंजन लाल। कवि राधाबल्लभ संहित सम्मति दई बिशाल ॥ और अनेकहु संत बुध इन सबकेरि सहाय । सीता राम बिवाह बर संग्रह लियो बनाय ॥ कविताज्ञान न लेश मोहिं जोरि कहौं कर दोय। सियबर कृपा प्रभावते जो कुछ नीकी होय ॥ बनो न होय प्रसंग जहँ अरु ममचूक बिचारि । निज सदगुणते सुजन सब लीजिय ताहि सुधारि ॥

इतिरामप्रतापचित्रकारबिरचितेश्रीसीतारामबिवाहसंग्रह परमानंदत्रैलोक्यमंगलषट्ऋतुबिहार समाप्तम् श्रीजानकीबल्लभजीकेअर्पण मस्तु ॥

दोहा ॥ परम रम्य जयपुर नगर रामप्रताप निवास ।
बगरूके ठाकुर निकट मेरो है आवास ॥

अग्रदेवस्वामीकृतपदरागभैरवी ॥ श्रीमत अवधपुरीको ध्यान। मुनिजन जीवन प्रान ॥ कनकवरण जगमग तनमें जस चंदन की महकान। शुद्ध सत्व गुण शोभित अम्बर क्षीरसमुद्र समान ॥ शंख चक्र दोउकर कंठनमें सुमनमाल लहरान। पाप शमनहै शंख चक्र तौ देत तेज बल ज्ञान ॥ करुणा मैत्रीआदिक सखियां गावत मंगलगान। करुणानिधिकी करुणा मूरति रामचन्द्रकी जान ॥ जेहि सेवत ब्रह्मादि देव मुनि करि करि निज अस्थान। पुरी शिरोमणि पतित पावनी गावत वेद पुरान ॥ पद ॥ बन्दौं श्रीसरयूके चरण अशरणके जे शरन ॥ नखशिख प्रतिअंगन में झलकत तीरथगण आभरन। तीक्षणधार पाप नाशनको रघुबर असिकी ढरन ॥ करुणाबिंदु गिरा श्रीहरकी आंखिनसे दुख हरन। विधि मानससरमें मिरवत सो सरयू तारातरन ॥ सरसे मुनि बशिष्ठ लेइआये उत्तर कौशल धरन। बाशिष्ठी तेहिते यह गाई गंग भगीरथ बरन ॥ जाके अंदर राम बसत नित त्रिभुवन मंगल करन। देवमयी देवनकी जननी यम कांपत जेहिडरन ॥ पदरागजंगला ॥ सरयूरज बिरजकरत मनको। सेवतहीं तनको ॥ जो रस ज्ञानहुंमें नाहिं सो रस परसत इन कनको। याकीअनुता प्रगट देखावत कोटिन ब्रह्मनको ॥ जाकोनाम रेतसो रेतत रेतन के बनको। बहुत तेजसी और निरोगी शरणागत जनको ॥ मन को रंजत प्रभु चरणनमें राग बढ़ावनको। ताते रज यह नाम सोहावन भ्रम भय भंजनको ॥ देव मुनिनके मनजनु छाये वोह रस पावनको। इनसे प्रेम नहीं तौ धिक धिक जग जीवनधनको ॥ पदरागखंमाच ॥ अवधि क्षेत्र शंभु कहा मच्छके अकार। श्रीसरयू मानहुं श्रृंगार तार हार ॥ सहसधार मच्छबद शीश गोपतार। जनम भवन हृदय ललित पोंछ सरग द्वार ॥ विद्या रविकुंड नयन महल रंगद्वार। सिद्धपीठ पीठ पक्ष पवनको कुमार ॥ आंखनके बिंदुको आंखही अगार। मच्छ अर्ध आंख महादेव को बिचार ॥ पदरागसोरठ ॥ बिरतिकी मूरति पवनकुमार। संतो

करहु विचार । जनमतहींसे ब्रह्मचर्य व्रत दल फल मूल अहार । कहांरहीं तव बिषयन परंरति सदा यकंत बिहार । असन बसन को सुख न सहत नित बरषा घाम तुषार । राम चरितके रसिक शिरोमणि रामनाम आधार । बिना अलंब निशंक निडर अतिगे भवसागर पार । रावण बन बिषयाबन ताको बरबस कीन उजार ॥ शूरबीर बिषयन से हारे कपि बिषयन को मार । महाबीर यहि हेतु देव यह बिदित सकल संसार ॥

पद रागमलार ॥ सावन नित संतनके घरमे । रति मति सियबरमे । नित बसंत नित होरी मंगल जैसी बस्ती तैसोइ जंगल दल बादल से जिनकेदंगल पगेरटनकी भरमे । सुकरम बीजन को बोवतहैं तन मन को नितही धोवतहैं वृथा न छिनहूं को खोवतहैं चारि पदारथ करमे ॥ रूखा सूखा पाय रहतहैं दुख सुख को सम जानि सहतहैं काहूसों कछु नाहिं चहतहैं मगन रामरस रसमे ॥ सिया राम को रूप निहारहिं सदाजीति पद कबहुँ न हारहिं इष्टदेवको जे बलिहारहिं लहरत माला गरमें॥

पदरागजंगला॥ मतवारन से अंरज यही । अपनेअपने इष्टनको तुम व्यापक मानतहौ कि नहीं ॥ व्यापक मानहु तो इष्टन में कतहुँ न बयर बिरोध चही ॥ नहिं व्यापक कहतौ वाहूमें जीव दशाही आयरही ॥ कानिर्गुण कासर्गुण मत में रहिहैं एकै बात सही । सार भाग सबही को लीजै रससे तजिये छाछ मही ॥ बूसी बाद सार निज करनी बोल गये असमार गही । देव मंत्र दमडीके कारण जिनबेचो कहि दही दही ॥ इतिश्रीदेवस्वामीकृतपद सम्पूर्णम् ॥

मुन्शी नवलकिशोर (सी,आ.ई,ई) के छापेखाने में छपी
अक्टूबर सन् १८३३ ई० ॥